





क्रम-संख्या 50289

ग्रन्थ-नाम गुटका

विषय काव्य

पत्र-संख्या

पंक्तियां

पाठ-संख्या

प्रारम्भ :-

ग्रन्थकर्ता अज्ञात

लिपि देवाणागरी

पत्र-प्रमाण X मि० मि०

अक्षर

पूर्ण/अपूर्ण



Acc. No. → 50289

गुटका १ (हिन्दी)

मूल्य २



ह्रीं ह्रीं मां सोलह को जो  
इमने तट की लागी प्रेम  
तगा दो उपा मे दो दुव  
उमुगला फल वं वं वं वं  
ही तो कला ललमा रा  
लह को जो इमने तट की  
लागी प्रेम न ता रसी कु  
इल लो लो कल के  
कु इल की कल ना ही  
ह्रीं गो वं री गो प्रन रस



50289

म. ८३३०

गुटका हिन्दी।















श्री गणेशाय नमः ॥ अधरागम

ललिरव्यते ॥ जब सुने रहे नद

या लसंत न को एही साथ मेरे सु

स्त कंदीयो हाथ या जनी की वात

याली नाथ जु बनारि हे ॥ जब तो

छुड़ी सराग सब ही को की फो प्र

कास शांमा जीये भां वसो रखा

सो ब जाई हे ॥ कैरव को ब डो भा

र बिभास को सुर प्रकास लखीत

कैली येया छी राम कली ब नारि हे



प्रभातहि बडो उदार ये सो सुंधो  
 देवगांधार पारनां लक्या को पंच  
 ममईतारि हो बसंत तो उगम तो सुर  
 भरपातरागतालपुर सुवर की  
 सुषगसार सो रामई सो हारि हे  
 देसाप को दसायपार बैलावल  
 बडा विस्तार सार मध्य ससरस  
 सो असावरि नहि ॥ दोड़ी  
 को त्रिविधगोन चासिका ये ध  
 रुध्यांन मानतां नगांन तारि ये



जेनंसरी जुमाई है ॥ २॥ काढे  
रा की को न हार गुजरी जेई न  
भार सारंग को सारसी मह्वार  
मेघ बधार है ॥ श्री रागागानसर  
दार सिंधु तो सदा उदार नट ह  
के हार खी ये परवी मो डार है ॥  
पंभाय ती छती समीर राय से  
तेर मे जु ओर आं छी नी को धी  
रं सो गौरी जो न नार है ॥ दीपक  
रो दी ये के साथ काढे रा क का



हा कऊ बात भात भली भाईहे ॥ ३  
 नायकी को नाहि मोल कानडा  
 को कीयो तोल बिहाग डैकि बात  
 सो भली भात भाईहे ॥ के दर  
 तो काहोन रूप इंदोनही अडाणी  
 रूप को नग वेरूप सो तो मार  
 को भेद ताईहे ॥ सामेरी सहासुहा  
 ग जे जे वं तीय ती भाग राग  
 पीछे रग में सो री सो गग रह ॥  
 पर ज तो पि छली रास में वा डो भ ॥ २



योकीरतार सब ही सा थरंगमा

लसरी बोला रहे॥ राग काव

डापर मान महाजांने की योगा

न पांनपांनी तजी माने प्रत

नी सगा रहे॥ तीन की कृपा प

रमान कवी तक की चौहेगांन

नी सद्विदधरी ध्यान काहा

न काहा न श्री कृष्ण सीरनां रहे॥

इति श्री रागमाल संस्कृत



ॐ करवंग घडे चछ जंरु यरु  
इहण तंय दधनं पफु वनम











आ पु पु  
प म  
उ ह वि  
अ वि स्वा  
अ म पू  
ध अ उ  
श पू उ  
अ अ मे  
के रो म

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
उरगवमणरुद्रावास्वदे  
विपूवा यमरुद्रजविश  
षापापनारेणमुत्ता नव  
मभितियिषपदीदसी  
मिचतुर्थीसहजमरणाया  
गौरांगीला मलकात











मध्य मादा पावनवी येही से॥ श्री उमेर २  
जीणुं कुरु ये ॥ पछे कटा ५ मां हचुदावी  
ये ॥ पछे गोल सेर २ मुक्री ये पछे उका ली  
या ॥ पछे कलकना वी ये ॥ ते कही ये छी ये ॥  
तजटा ५ तमा लपत्रटां क ५ एजची तां  
क ५ नाग केसरटां क ५ लवंग टां क ५ सुं  
टां क ५ पीपेर ५ मरी टां क ५ एट लां वा  
नां ऊणां वाटी क पड ठा ए करी ये पछे मां  
हना पी ये हना वी उता री ये ॥ पछे ना स  
मां घाखी मुक्री ये टां क ५ ने श्री सरे पाई



यो ॥ उध्रसनें दावे ॥ अरुची ने टाले ॥ भव  
जाइने टाले ॥ उनें टाले ॥ अरुची ने टाले ॥ इति  
प्रादा फफूस पूर्ण ॥ अमुको चापा  
कली पते ॥ कोचो सेर ॥ एवरो सेर ॥  
पड वास सेर ॥ गुंद सेर ॥ बलवी ज  
सेर ॥ एवा ना चार मेली कीणा वारीये ॥  
सेर ॥ रुपड छाण करीये ॥ पछे ६ सेर ३२  
माहे नाषी कटाया माहे घाली ये चुलेच  
होवीये ॥ पछे मंद मंद अणनी कीजे ॥ पछे  
आड्या वतारे घाई सेर २ बुकीये पछे वी



अया सर ॥ मोटरी बोधी लख मां मुक्री ये  
 पछे नीचोई शीजे कुचा कलह नाषी ये ॥ प  
 छे हा ए दार पाय तारे मोह घी ई सेर रक्षा  
 लाये ॥ पछे कल कनाषी ये ते कही ये छी ये ॥  
 तज टां ५ तमा जपत्र टां ५ ए लकी टां  
 ५ नाग के सर टां ५ ल वंग टां ५ अक  
 ल करो टां ५ सुत टां ५ पी पुर टां ५ म  
 री टां ५ सुक उ टां ५ तगर टां ५ अंगर  
 टां ५ संमुद्र मोष टां ५ मुसली टां ५



गोषस्तु टोंक ५ खंखवीज्जसोंक ५ कुरुर  
 टोंक ५ केसर टोंक ५ छुट्टा टोंक ५ पारो  
 टोंक ५ अन्न टोंक ५ व्यंग टोंक ५ चा  
 बुटा टोंक ५ विजया टोंक ५ लोह टोंक ५ अ  
 फी ए टोंक ५ ए ओ सद ए कं बा वृक्षी मु  
 क्रोपे ला पा क मा ना षी ये ॥ हं ला षी पछे  
 सांकर स्तेर ३ मु क्री ये पंछे उतारी ये ॥  
 यो यडा बां मा ए मां घां ली मु क्री ये स  
 कं २ ॥ ने मा सरेष वं रा श्री ये तो अं ठार  
 कार ना प्र मे ह ने टाले बं ब ली ई ने टा



१५ वे वायनताल पुनः नताल लेहला रोगनेता  
ले इति चंडासपाकसमाप्तः ३  
अथ सुं न्याकं लिख्यते सुं वं रर २ श्री एणि  
पातिये उधसेर १६ मध्ये पचावी ये सुं वंड  
धमां ॥ पीहला वीये पंछे जाडुयायतारे वी  
इले १ मुक्रीये पंछे दाणा दारया सतारे कल  
कना पीये ते कही ये छी ये तजं तां प तमा  
लपत्र तां क ५ एले वी तां क ५ नाग के सर तां क  
५ लवंग तां क ५ कंकोर तां क ५ जावंत्री स ५  
जायक ल तां क ५ केसर तां क ५ पीपली ५



जलोकं ५ अंमजका कडीतं ५ कंरतं  
 क ५ अंमजका ५ लोहता ५ हंरतं  
 जीणावादीपलापाक्रमानां कीयेहवावी  
 पछेवांडसेर ३ मोहेनाषीयेहवावीये ॥  
 वोपडावासाणमोघाजीमुंकीये ॥ पछे  
 टी ५ नेआसरेषवरावीये ॥ मापुं  
 लंतुरहे आंषो कलतीरहे ॥ वायनेरा  
 जेबेहेरातवेरावे ॥ कलंतरनेरावे ॥ मा  
 थांमावेग आ वताहोयतेहनेरावे इ  
 सिंखपा कसमा प्रः ॥



४ अथ लवंग पाक लीष्यते ॥ लवंग सर ॥ बारी  
मुक्रा क्रिजि ॥ पल्लु डध सेर ३२ मांहे पचा वीये  
पले दाण हार पाय तारे धी ई सेर ॥ मुक्रि ये  
पले धाग वण तुथा य तारे कुल क्रना वीये ॥  
ते क्रही यिं छीये ॥ तज रां क्र ५ तमा जप त्र रां  
क्र ५ एलची रां क्र ५ नाग के सर रां क्र ५ क्रम  
लक्रा क्रडी रां क्र ५ सुक्र ड रां क्र ५ अगरे रां  
क्र ५ तगर रां क्र ५ के सर रां क्र ५ जाय फल रां  
क्र ५ जुबुं च्री रां क्र ५ अक्र लक्र रो रां क्र ५  
बरा स रां क्र ५ वेस लोचन रां क्र ५ ए की



एणं वाटी भु. क्रो. करी ये क्र. पड छा एणं करी ये  
 मां हे नाषी ये ॥ पड छे लोह टां क्र. न नाषी ये  
 सा क्र. र. सेर २ नाषी ये टां क्र. शा. वे. आ. सर  
 प व. रा. वी. ये शी तों ग नें टा ले ॥ न व. ला. ई. न  
 टा ले ॥ वा. यु. ने. टा. ले नि. धा. ति. ने. टा. ले ए. र.  
 ला. रो. ग. ने. टा. ले इ. ति. ल. वे. ग. प्री. क्र. स. म. म. त्तः  
 अ. थ. प. ड. वा. स. पा. क्र. ली. ष्य. ते  
 प. ड. वा. स. सेर २ जी. एणं वाटी भु. क्रो. की. जे. प  
 छे. डु. य. सेर. ३२ मां नाषी क्र. दा. ई. या. मां. हे. च.  
 ना. वी. ये ॥ प. छे. अ. न. पा. चो. हे. हे. वी. अ. न. प्री. जी.



५  
ॐ पछे जाइया यतारे धीरे सैर २ मांहेना  
षीये॥ पछे साण कए तुं यो यतारे कलेक  
ना षीये ते कही ये छीये॥ लवंग लोच ५  
तज लोच ५ तमा लपत्र लोच ५ एलेंची  
लोच ५ नाग केसर लोच ५ रें एउ लोच  
लोच ५ अकल कर लोच ५ समुद्र सोष लोच  
लोच ५ अज मोषोरा सानी लोच ५ चुनी  
कवावा लोच ५ पेशी गुंदर लोच ५ जाय  
कुल लोच ५ जावंची लोच ५ हीगलोच



तां क्र५ बलवीजतां क्र५ इस्त्रन. तां क्र५  
उदंगाण तां क्र५ श्रेषराइं क्र५ गोषरुता  
क्र५ कपुरवरा सतां क्र५ श्रेषराइं क्र५  
लोहतां क्र५ व्युगातां क्र५ वसलोचनतां  
क्र५ तसर्वनुकोकरि जीणो वा इ क्र५  
पडेछाणकरि मां हेमा धीये ॥ पछेवा  
डसेर ३ नां धीउतारीये ॥ पछेवा पडा  
वासाण मां नरी मुकीये ॥ संहतां क्र५  
नेत्रा सरेषवरावीये ॥ लोहानेसः



ले॥ सुआं गे गने टाले॥ नब लाई ने टाले  
धात जाती सोय ते हे ने टाले॥ गर्भ रहे  
तो न होय सो गर्भ रहे॥ बांय ने टाले एर  
आरोग ने टाले सहरी इति पडवा सपाक  
समाप्तः अथ आसंध पाक नीष्य  
ते॥ आसंध सेर २ जीणी वारी मुकाकी  
जे॥ पछे दूध सेर १६ मां हे उका लीये  
पछे अन्न पाके एहे वो अग्नी कीजे॥ प  
छे जाइ वाय तारे घी ई सेर १ मां हे ना बीये



५ छेदाणा हार पायता रे कलकनी श्री ये  
 ते कही ये छी ये ॥ तज टोंक ५ तमालें प्रत्र  
 टोंक ५ एल चि टोंक ५ नाग के सर टोंक ५  
 जाय फल टोंक ५ जावें चि टोंक ५ लवंग र  
 क ५ अकलकरो टोंक ५ अंज मो शोरा सा.  
 नी टोंक ५ की डंग टोंक ५ चि त्रोटोंक ५ चर  
 धारो टोंक ५ सुआ टोंक ५ सुं व टोंक ५ पी  
 पेर टोंक १० मरी टोंक ५ च व्यक टोंक ५ अ  
 ज मोदी टोंक ५ हल दर टोंक ५ दां रु ह  
 दर टोंक ५ शता वरी टोंक ५ रा सै ना टोंक ५



Missing Page



हेनेरा ले॥ क्रेडक मती होय ते हेनेरा ले॥  
 कां सो कलना होय ते हेनेरा ले॥ क्रेडक  
 लती होय ते छूटे॥ सोधि कलती होय  
 ते हेनेरा ले॥ फेरनेरा ले निबु जाईनेरा  
 ले निध्या तनेरा ले॥ ए रकारो गनेरा ले॥  
 रति : अथ जस ए पां कलीष्य ते  
 जस ए सेर २० ए कचरी ये॥ पछे दुध  
 सेर ३२ मां हेनाषी चुले चढ़ावीये॥ पछे  
 अंन पाचे ए हवी अग्नि तले कंजै॥ पछे



जाडुका यंत्रारे घाईसेर १ मांहेना पीये प  
छेमधसेर १ मांहेना पीये ॥ पछेकलकना  
पीयेतेकही येछीये ॥ बजबीजंटांक्र २॥  
सुंठटांक्र २॥ पीपेरटांक्र २॥ मरीटांक्र २॥  
वरधारोटांक्र २॥ चीतरोटांक्र २॥ उपलो  
रटांक्र २॥ पुसकरम लटांक्र २॥ अजमो  
हीटांक्र २॥ हलदरुटांक्र २॥ दोरुहलदरु  
सुंठटांक्र २॥ पदमकरुटांक्र २॥ एलुचीटांक्र २॥  
तनरांक्र २॥ तमालपत्रटांक्र २॥ नागके



सरतों क्रं २॥ सता करी तों क्रं २॥ सुं आ तों क्रं २॥  
 सा गोडी तों क्रं २॥ देवदार तों क्रं २॥ रें ए क्रं तों क्रं  
 २॥ वज्र तों क्रं २॥ रासना तों क्रं २॥ गोषरू  
 तों क्रं २॥ मोघ तों क्रं २॥ एर जा क्रं ल क्रं जीणा  
 वाटी भुक्रो करी ये पाक मां मां धी ये ॥ पछे पं  
 डसेर ४ मां हे नाषी हलावी में ॥ पछे हे वु उ  
 तारी ये ॥ पछे चा पडा वा स ए मां घाली ये  
 पछे तों क्रं ५ ने श्री सरप वरावी ये ॥ वाय  
 रागने ताले शूलने ताले उ अ सुने ताले  
 श्री तरग लने ताले करुमीने ताले ॥ श्री



सनेरा ले॥ बुझा शीनेरा ले॥ गोला नेरा ले॥  
हेडक्रीनेरा ले॥ उंदरीनेरा ले॥ पीयानेरा ले॥  
आफुरानेरा ले॥ नबुजाईनेरा ले॥ क्रोटनेरा  
ले॥ क्रोटवलती होय तेष्टरे॥ पहाधातने  
रा ले॥ रांऊ हावाउमेरा ले॥ अग्नीमंदने  
रा ले॥ माथुकलतु होय तेहेनेरा ले॥ भ्रम  
रोगनेरा ले॥ सोध्यकलती होय तेहेने  
रा ले॥ शरीरनेपुष्टिकरे कलतरनेरा ले  
रोटेवा रोमुनेरा ले इतिलसाण पाकस  
भापः



अथ अरंडी पात्र लंबी ये छीये- अरंडी ना  
 गोला सेर २ अण कचरी ये॥ पछे डूब  
 सेर ३२ मोहे नाषी ये चुले चढावी ये पछे  
 जाडुया यतारे घी ई सेर २ मोहे नाषी ये  
 पछे दाणा दारया यतारे कलंक नाषी ये  
 ते कंही ये छीये॥ तजरां कं ५ तमा लप  
 तरां कं ५ एलची टां कं ५ नाग के सररां कं  
 ५ जायफल टां कं ५ जावेन्नी टां कं ५ लव  
 गरां कं ५ अक्रल करोटो कं ५ चव्वं कं ५



१५  
कृप चीत्तरोतंकृप पीपेरतंकृप पीपलीम्  
लतंकृप वीत्तंगतंकृप अजमोदितंकृप ता  
लीसपत्रतंकृप वजतंकृप हलदरतंकृप  
दारुहलदरतंकृप शतावरीतंकृप सु  
आतंकृप जीस्तंकृप काजुंजीरुतंकृप  
मजीवतंकृप गोषरुतंकृप रासनातंकृप  
कृप देवदारतंकृप कलबीजतंकृप सु  
तंकृप सागोडीतंकृप पुंसकरमूल  
तंकृप अपलोहतंकृप राणुकतंकृप  
तंगरतंकृप शठीतंकृप जोहतंकृप



नो बुलौं कृप अंभ्र कृलौ कृप-कौं गलौ कृप  
एरलौ कृलौ कृलौ ईश्रीणा वारी मुं कौ कृरी  
मोहेना श्रीये पतुहे हलौ वी उत्तारी ये लं.  
कृप ने आसरेष वरा वी ये ॥ संधि वाने  
तालौ ॥ आंगलौ ने तालौ ॥ कलंतर ने लं.  
ले ॥ मोलौ ने तालौ ॥ उदर वायने तालौ।  
अगनी मंदने तालौ ॥ सुनी वायने तालौ  
पतुनि वायने तालौ ॥ कोय प्रमेहने तालौ  
हेड क्रीने तालौ पुरु रोधने तालौ वी  
यं पं हलौ तालौ माया नारी गने तालौ



बक्रारीनेराते इति एरंडी पाकसमाप्तः

~~अथ कडा पाकसमाप्तः~~

अथरीगंली पाकलीष्यते रीगणीपंचां  
गसेर १२ पाणीसेर ३२ मां हेकवाचक्रं रि  
मां हे हरडे पत्र १०० मुक्रीये पकें चोयेभा  
गे पाणीरहेतारे ३ तारीये पले राहु प्राय  
तारे कलकना पीयेते कही ये छी ये सुं व  
मं क्र ५ पीपेरं तां क्र ५ मरी तां क्र ५ तज तां क्र ५  
तमा लुपत्र सं क्र ५ एज्वी तां क्र ५ नाग के  
सरं क्र ५ एटजा कलक मां हे ना पीये हला



वीये पछे मध्व सेर ॥ मां हे ना पीउं नारी ये  
पछे बो प्रडावा सण मां नरी मुझी ये टोक्र प  
ने आ सरेष वरां वी ये वायं नी उध्व सने रा  
ले पीत नी उध्व सने रा ले ॥ क्रफ नी उध्व  
सने रा ले ॥ क्रय ने ॥ ह्य ले पीन सरेग ने हा  
ले इति रिगाणी पाक स मा प्रः



अथ सोनामषीनां अनुपातलब्धां च ॥  
 सोनामषीरां क्र ४. ते हेनी पडीयो २१  
 कश्ये ॥ ते हेतुं अनुपात ॥ मधुसाये  
 पायतो ईडी बलवाधे १ घाउसाये  
 पायतो गरमी पीत जाय ॥ साफ  
 रसाये पायतो अंग बल घाय ॥ ३॥  
 बीजोरासाये पायतो नृष जागे ॥ ४॥  
 दराषनी फूलसाये पायतो चरडो



नथा य॥ ५॥ गा यंता मोषण साधे पा  
यतो घर डो ह्ये पुतो ज कान था य ६  
आम क्षा नार स साधे पा य तो क फ  
जा या ॥ ७॥ का कें ड नार स साधे पा य  
तो आं प ड पती रहे ॥ ८॥ न गो ड न  
र स साधे पा य तो क फ जा ये ॥ ९॥  
अंग व ज या यं हा प ग रु त तार हे  
॥ १०॥ ली व नार स साधे पा य तो मे र



१३  
दुषतुंरह ॥ १० ॥ श्रीं वा नारस साधे  
वायतोषां दुरीगजाय ॥ ११ ॥ गोष  
रुनारस साधे वायतोधातु पुष्टा  
य ॥ १२ ॥ पुरा सानीं अजमा साधे वा  
यतो गो लो मही जाय ॥ १३ ॥ छाली  
नादुध साधे वायतो के डु डुषतीरहे  
१४ ॥ गा यना दुध साधे वायतो जी  
भबो बुडी सारी थाय ॥ १५ ॥ भुरा



को जाना नारस साधे वाय तो प्रम हजा  
ये ॥ १५ ॥ अजमाना नारस साधे वाय  
तो हाय पग कल तारहे ॥ १६ ॥ अने  
सर दीजाये ॥ १७ ॥ पीपेर नापाणी  
साधे वाय तो मापुंड पतुरहे ॥ १८ ॥  
अवंग नारस साधे वाय तो अस्त्री सा  
ये पीत घाणीयाय ॥ १९ ॥ पतीरी नाडु  
धसाधे वाय तो स्त्री सुं सनेह पाय ॥ २० ॥



तजें नारस साधे पाय तो सा पनुची  
 वउतरे ॥ २० ॥ डाडम नारस साधे  
 पाय तो ही क-आवती होय तोर हे २  
 सांडणी नाहू धसाधे पाय तो दसघ  
 एतोर पाय ॥ २१ ॥ एमी दी आव  
 वना गुण लंप्या के वडी एक वी सभ  
 रीने एक वी सहाहा सुधी पावी गुण  
 पाय सही ॥



अथ समुद्रफलं नु अत्रुपानि जषी  
ये लीये ॥ समुद्रफलं मायना घी ई  
मुं अंजनकी जेतो पडल जाये ॥ १॥  
समुद्रफलं मुत्रे घाली ने अंजनकी  
जे तो सा पनु विष उतरें ॥ २॥ समु  
द्रफलं हलदर सुगायना घी मुं जे  
पनकी जेतो गंड मोला जाये ॥ ३॥  
समुद्रफलं ली बुनी जड तं पाखा ल



भुंघसीनेलेपनकीजेतोवीचीनु  
 विषउतरे ॥१॥ समुद्रफलवासी  
 पाणीनंगोउनारसभुंनोसदीजे  
 तोमापुंडवतुंरहे ॥५॥ समुद्र  
 फलत्रीफलाभुंनोसदीजेतोस  
 नेपातजाय ॥६॥ समुद्रफलनी  
 रगुंडीनारसभुंभ्रंजनकीजेतो  
 फुलेंजाय ॥७॥ समुद्रफलमीगते



लसुं अंज न कीजे तो नेत्र रोग जाय ॥

८॥ समुद्र फल माल वी मोल सुं पा

यंतो मृगी रोग वायु आवतुर है ॥ ९॥

समुद्र फल भांगर नार स सायेष

करावीये तो बेहे राह टले ॥ १०॥ स

मुद्र फल अज मोद सुं ना सदीजे तो

मायुड पतुर है ॥ ११॥ समुद्र फल

प्रांड सुं वायतो धातु जातीर है ॥ १२॥



१६

समुद्रफलत्रुणशुंषाईयेतोपेरं व  
याजायउषतरहे १३ समुद्रफल  
अजमोदशुषाईयेतोमोहराविष  
उतरे १४ समुद्रफलनीबुआशुं  
षाईयेतोसलजाये १५ समुद्रफल  
हस्तपागे वजंशुमर्दनकीजेता  
प्रस्वेदपीडाजाय १६ समुद्रफल  
नीबुशुंषाईयेतो कमलवातजा



५॥ ७॥ समुद्रफलदुधसुधाईयेतो  
अतिसारजाय॥ १८ समुद्रफलजी  
बुनारससुमर्दिनकीजेतोक्रमलवा  
तंजाय॥ १९ समुद्रफलनिरगुंडी  
सुषायतोपेटव्यथाजाय॥ २०॥  
समुद्रफलहरदेछालीनाघतमुंडी  
जेतोक्रमलवायुजाय॥ २१॥ सह  
द्रफलअजासुत्र सुषायतोअजर



७

ए जाये २१॥ समुद्र फल काली छाली  
ना मुत्र सुं अंजन की जीये तो छाय प  
उल जाये २२ समुद्र फल सुं वलव  
ए सुं मात्रा मुत्र सुं लेपन की जे तो म  
लक मूल जाय २४ समुद्र फल अरी  
गनी काल गो मुत्र सुं मसली रस काली  
गले नासदी जे तो अंधा पो जाय २५  
समुद्र फल अज मो पी पे र दो प रां सु



वसमात्राग षाउ मुगो लोही ३१२

प्रभातेषा यतो अंधा हेरो जाय ३६

समुद्र फल वडी छाती ना इधं मुअं

जंत की जे तो आं वे ते ज आने २७

समुद्र फल लवण घतं मुंदी जे तो

समस्तं रो ग जाय ३८ इति समुद्र

फल कल्प संहार मस्तु ॥



ਅਥਾਹੁਡਾਧਾਰਲੀਘੁੰਨੇ ਏਰੰਡੀਨਾਂਸੀ  
 ਜਸੇਰ ੧ ਗਾਸੁਤੁਮੁਤ੍ਰਸੇਰ ੩ ਤੇਸਾਂਹੁਪਯਾ  
 ਲੀਧੇਦੀਂਬਸ ੨ ਸੁਖੀਰਾਧੀਨੇਪਠੇਸਾਠੀ  
 ਧੇ ਤਾਰਪਛੀਭਾਟੀਧੇ ਪਠੇਗਾਸੁਨੇਤੁੰ  
 ਮੁਤ੍ਰਸੇਰ ੩ ਸਾਧੇਤਾਕੁਟੇਚਫਾਨੀਧੇ  
 ਗੋਮੁਤ੍ਰਸਸੇਤਾਰੇਤੁਤਾਰੀਧੇ ਸਰਸੀ  
 ਤਸੇਰ ੧ ਧਾਲੀਧੇ ਪਠੇਕੁਲਕੁਨਾਧੀ  
 ਧੇਤੇਕੁਲੀਧੇਠੀਧੇ ਹੰਗਟੋਕੁ ੨ ਸੁੰਧੇ



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥



१५  
पीपली तुलसी ५ अज मोद तो ५  
जीरू तो ५ असा ली यो तो ५ हल  
दर तो ५ वाव डंग तो ५ नसातर  
तो ५ हर डे तो ५ केंपी लो तो ५  
सुवा सेर ॥ अज मो सेर ॥ सर्वे नाषी  
नेतार पछी ली बुनोर स सेर ॥ तेंदी  
स स न ए ल ग ए प र दे ई ये छा प डे  
सुक्र की ये पछे ए रं डी धार नी पनी



तेंदी नवते सोक रने आसरे सवारे त  
यासोर सो ऊ म वरा वीये तो मजगा  
व तथा वा गो व मंदाग्नि वं धं कु प  
गो लोपी यो पे ट वि कार सर्व ना श  
कामे वा दुषारु तं ज वं इति श्री  
एरंडी वा क सं पूर्ण ॥



अथ असाली या पा क्लीष्यते  
असालीयो सेर १ गा मनु दुध सेर ६  
ते मां हे उ जाली ये पी र करी ये क व र  
या य तारे छा या मां सु जा बी ये प छे  
सर्व कल कले ते क ही ये छी ये ह व  
दर पैसा २ भार का लु जी रूपै सा  
१ भार कर क डी फु ला वे ली पैसा १ भार  
अज मो द पैसा १ भार सो हा जी पैसा



१भार कीचा छालपैसा १भार लोहर  
पैसा १भार मोयपैसा १भार लवंग  
पैसा १भार जायफलपैसा १भार  
जावन्त्रीपैसा १भार उटकंटा नीजड  
पैसा १भार केसरपैसा १भार घोरा  
सानी वज्रपैसा १भार अकल करो  
पैसा १भार पापेरपैसा १भार मरीपै  
सा १भार एंजनस सर्वपैसा भारने  
समारेलेची वाटी कपड छोण करी



२१  
ये पछे तो लीये ते वरा वरचीनी सां  
करवाटी ओषध करना पूर्वापुराण  
करवुंते पावुं रोममात्रने टाले रु  
गतपीतजाय विस्फोटकजाय मू  
लकर्मनुदरदजाय राजरोगजाय  
पथरीजाय मुखगंधीजाय वागोलो  
जाय कुत्रेजावंधया तो होय तेहे  
नेकापे-अजीराण रोगजाय बंदा  
रोगजाय बवेसी रोगजाय



श्री लीला रोगं जाय श्री षण्डीजर  
 एजाय पांडुरोग जाय उधु स रोग  
 जाय श्री दारजा तं ना रोग जाय क्रेड  
 ना रोग जाय एटला प्रकार ना रोग  
 जाय टोंक रने श्री सरे सुख सुवासे  
 गजाय माया लीजर एजाय हाडुने  
 टहोय तें रोग जाय श्री स्मलीया पाक  
 घाय तो एटला रोग जाय गरमी पाय तो य  
 ईवानु वणु सुष पाये इति श्री स्मलीया पा  
 क संज्ञा



अथ विधि वेरजा की इंदु जो हजं गत्त से चंद्र रज्ज के  
 धोय कर दो लजं चं मे चवाय ले वेर जो लेर का वंर  
 त सो धी फुके क १ जो दली वीध जल मे चढावे नीचे  
 आचवा त पकाय ले मात्रा मासा ३ सा ल म सा थं  
 लाय तो न पुंसक ता मिटे गुलाव साय साय तो ज्ञा  
 न सक मिटे सुरवंत साये लाय तो न ह मिटे पुष्प  
 ता होय दुध साय लाय तो प्र मे ह मिटे गंजु का  
 दुध साय तो निवला इ मिटे पुष्ट ता होय पात मे  
 साय तो वादी पूर होय गा पा छी मे म य तो लोजा  
 के मिटे उटंग रा साये लाय तो नाम र्द म र द हो  
 प नी वूं ले लाय तो नूष हणी होय दिन २१ तब  
 य प्र मे ह मिर्वस्त ता धातु क्षीण मिटे इ प्र वेर जा



चादी नो ना १

सोहं मं नवी न ना ३

धो हर को कुय सी की पा को

बा १४ नो पं कर कर वं १५ पर पु ट दे १५

प्रा न ३० आ च दे



सनाईदं कदे बुजन दोहं कसहत लों वाय तो हं की वल  
वंत होय सकर लों वाय तो पित्त जाय मिश्रौ लों वाय  
तो स्त्री संभोग करे गाय के माषन सो वाय तो गर मी जा  
न पिड खर सो वाय तो रुधा लाजें दाष लों वाय तो  
लंबी दृष्टि होय तिल के तेल लों वाय तो सर्व विष न  
रिजाय छोटी हर डें सो वाय तो दृष्ट जी तै गद ला  
पानी लों वाय तो कान सुनै का लानें ग र कार ल  
सो वाय तो दूर बुढा ज भव होय दि न द ८ ३ ३  
गी का हृथ लों वाय तो दृश घोडा का जोर होय प  
रहा की भिंगनी लों वाय तो मुत्र पुलास होय  
अना द कै रस लों वाय तो छाती दुष जाय कच  
मोघा ज तो वाइ दुष जाय महुवा के रस लो  
वाय तो अष्ट गुन ते जी होय आदे के रस लो



लाय तो ताप ते जरी जाय उटके इंसो साय तो वल  
 वं तले य गा य के घ त सो साय तो तों तला वाक्य होय  
 किस जिस सो साय तो बल वं त होय अ वला के रस  
 तो साय तो जल धर मिटे पिंड स जर सो साय तो  
 मुख गंध जाय यला म फंर सो साय तो आषड्प  
 जाय गिर गुडी सो साय तो घाय पिंड की जाय नि  
 बू के रस सो साय तो पर हुकं जाय गोख रुके  
 इंसो साय तो अस्त्री कै पुत्र होय बकरी के ह  
 थ सो लाय तो कजर को दुष जाय अज या इग  
 सेषा य तो सर दी जाय पी परे से लाय तो सिर का  
 दरद जाय लोंग सो लाय तो इंद्री के प्रीति तं  
 भूरा कुमूडा सो लाय तो प्रने हजा प इति संत  
 इकल्यद् स माशम्



ओवधिः सुभन स्पेवक केसर मासा ३ जाय  
फल मासा ३ दाल चीनी मासा ३ रु मौ मस्त  
गी मासा ३ कस्तूरी रती २ गिरी वं शुभ  
की मासा ११ गिरी बिरोट की मासा ४२ मि  
श्री मासा २० सवलाय कर र कठी करे  
वाटनी श्री गुना पुरा क मासा ११ रत कु  
पाय वंधे जसोय ।



शोभाधिः से कंकी तिल = गिरीपुतली - धिरेन्द्रका  
 मीनी - अविद्या हलदी - अरुंदोली - सोनाकावी  
 ज - हात्सू - हाथीदांत काबुसदा - लौज २१  
 गावित्री २५ ज्ञापफल २५ दालचीनी तज -  
 मैदाल कडी - मांल कांगली - सभकुं कूट  
 कर पोडली बांधे ३ जिन से ती से कं मदिरा से  
 तथा मेड का दुग्ध से ४ दिन करे इंद्रिय द्रव  
 होय १ अथ पदी ॥ जमानि घोटा पुहकर मूतव  
 रावर मदिरा से पीस लेय कर नागरपात से कं कं  
 पर बांधे कपडा कुपय तार ल वेटे पाछे नुपाड होय  
 दिन ३ बांध कर गिरीकुंदी लगखे तु वलकत  
 कं सन ही त कसाही नित्य ल गावै -



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥  
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमांश्चरितान् ॥  
 सौमित्रान्द्रुपदं च भीमार्जुनसमां ॥  
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुता ॥  
 सान्द्रोऽप्यर्जुनसंघोऽकाशमधिवसत् ॥  
 महाबाहो पाण्डुपुत्रोत्तमोऽजयामहम् ॥  
 तवाकृतं वीर्यमस्माकं द्रुपदसमा ॥  
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥  
 दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमांश्चरितान् ॥  
 सौमित्रान्द्रुपदं च भीमार्जुनसमां ॥  
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुता ॥  
 सान्द्रोऽप्यर्जुनसंघोऽकाशमधिवसत् ॥  
 महाबाहो पाण्डुपुत्रोत्तमोऽजयामहम् ॥  
 तवाकृतं वीर्यमस्माकं द्रुपदसमा ॥

बोलीलाये प्रसादा काँठे मि रच बं धं तु न दे मु

ਮਰਕੁ ਜੇ ਲੇ ਸੋਇ ਸ ਕਰ ਪਾਵ ਮ ਰ ਪਾ ਭੀ ਸੇ

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org



किं रक डूवी ले लेंगे त्रिभुगि योद  
कर दिगो दु लथो इ स्वर सजाय  
जमान गुवीकां फु व मे सा २ मंर  
मजा मं कयी पाव मर म यु कालो  
व नदी पुडी कर पाव मर डालो  
सत को मि गोने सने रे सु मिक  
म क र म र म क र कि रे मिने  
वि च डी लाम



Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org





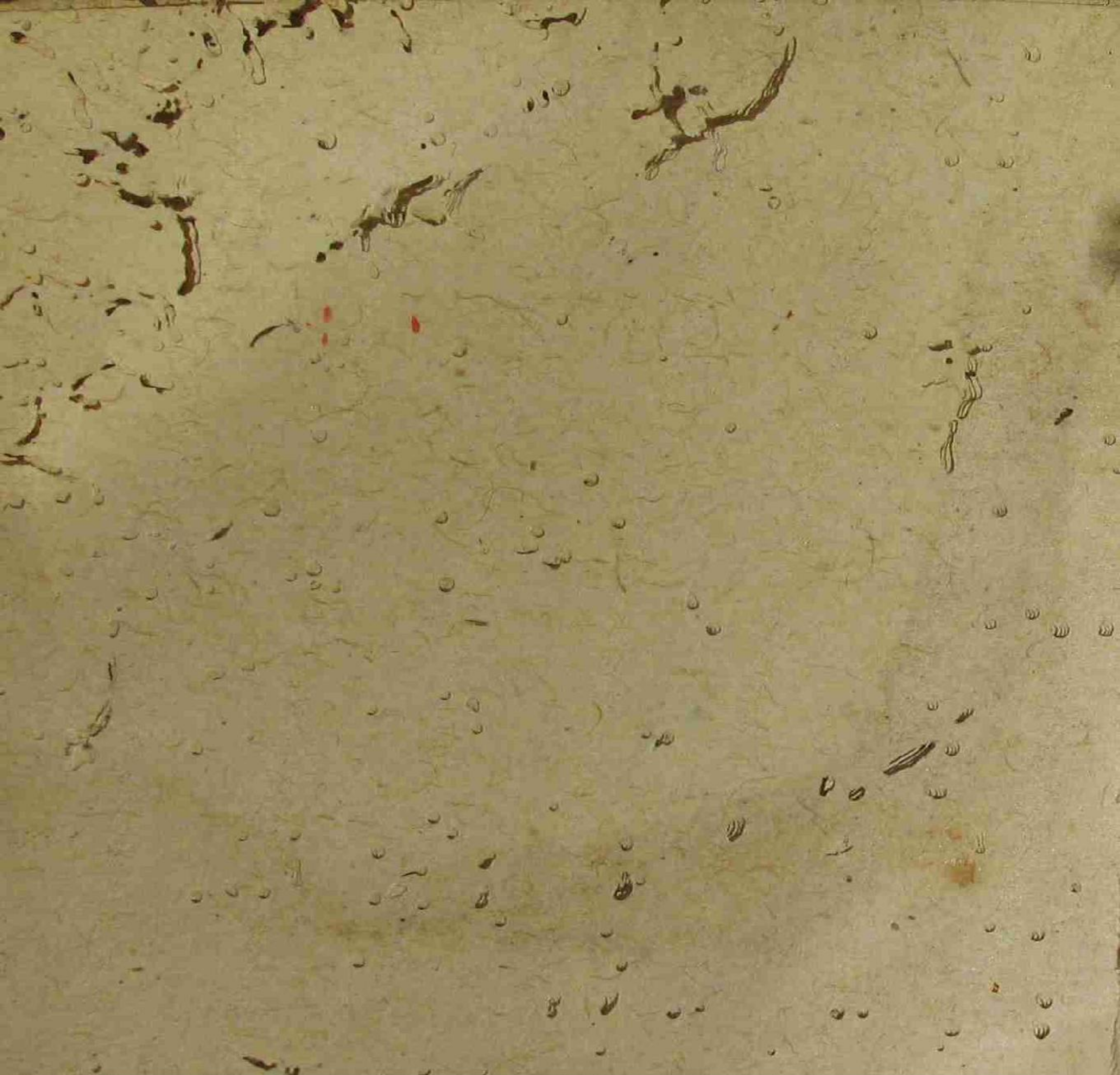


ॐ श्री गुरु नानक देव जय ॥ कतेनाय भगवते विश्वरूपाय सर्व  
गुणेश्वराय त्रेलोक्येश्वराय ध्यायेत् सर्वसंप्रदानं तं ॥  
ॐ नमः ॥ १०८ ॥ नक्षत्रीवीजं जप कहे मङ्ग  
यत्रैकं तत्रोद्भिन्नं ॥ सपक्षः स जालिकेरः कृ  
त्तुं नोक्ति जेहे चित्तामणि प्रास्थिरतुल्यभावं  
समस्ततापसतपःस्य चित्ते ॥  
ॐ श्री गुरु नानक देव जय ॥ सिद्धसर्वसिद्धि  
कुरु ॥ स्वस्त्यस्तु ॥ १०८ ॥ ॥











३

नवकाईने टाले ॥ कृमलाने टाले ॥ रुईने  
टाले ॥ रलैरोगने टाले ॥ इति हरडे प्राज्ञ संमते ॥



बीये॥ तज टां८५ तमात्र पत्र टां८५  
 एलची टां८५ नागं८५ सर टां८५ घेर  
 सार टां८५ बरा सवाल १६ वंस लोचन  
 टां८५ एटलो वानां८५ एणो वारी ८५ उछा  
 एकरो मां हे मुकी ये॥ पछे हलावी उत्तारी  
 ये॥ पछे को पडा वास एण मां घाली सुकी ये॥  
 पछे टां८५ शाने आसरेष बरावी ये॥ तप त  
 आवती होय ते हेने टाले॥ जीरण ज्वर  
 होय ते हेने टाले॥ पीत ताव उध्र सने टा  
 ले॥ सुक्र वाने टाले॥ वात के तने टाले॥



२ पाणी साधेनी साउ पूर जीणी वाटी से ॥  
पछे लोटा नीचा लणी वाहे काली गल्ली से ।  
कुचा हरडे मांथा काटी नाषी से ॥ पछे क  
हाया मांहे घाली से ॥ चुले चटावी से ॥  
पछे तले अन्न पाचे एहे वो अग्नी की जे ॥  
पछे जाइयां यतारें घीई सेर १ मांहे ना  
षी से ॥ पछे गोख सेर २ मांहे मुकी से ॥  
साकर सेर १ ॥ मुकी से ॥ पछे मध सेर ॥  
मुकी से ॥ पछे कलक मुकी से ते कहि से

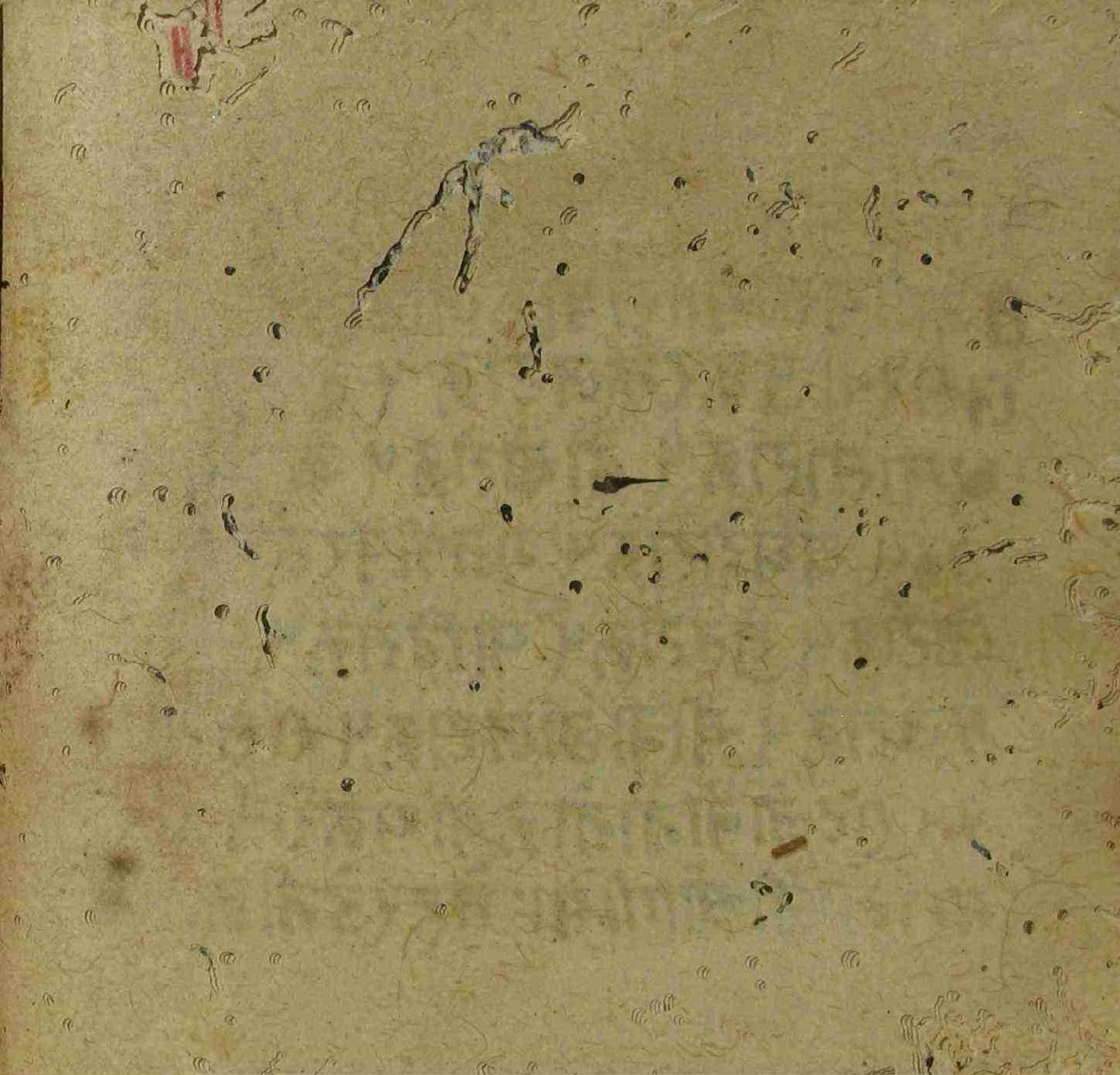


ਬਾਂਧੀਏ ਅਵਸੇਰ ॥ ਤੇ ਕੋਧਲੀ ਸਾਂਧਾ ਲੀਏ  
ਪੱਛੇ ਬਾਣੀ ਸੇਰ ॥ ੨੦ ॥ ਮੁਕੀਏ ॥ ਕੋਧਲੀ ਸਾਂ  
ਹੇਲਤ ਭੰਡਤੀ ਮੁਕੀਏ ॥ ਤੇ ਲੇ ਅਗਨੀ  
ਕੀ ਜੇ ਪੱਛੇ ਸੇਰ ੫ ਪਾਣੀ ਰੇਹੇ ਤਾਰੇ  
ਉਤਾਰੀਏ ॥ ਪੱਛੇ ਕੋਧਲੀ ਸਾਂ ਹੇਥੀ ਕੀ ਠੀ  
ਪਾਣੀ ਗਲੀਏ ਕੁਚਾ ਕਾਢੀ ਸਾਂ ਥੀਏ ॥ ਪ  
ਛੇ ਹਰਟੇ ਸਾਂ ਥਾਤ ਵਕਾਢੀ ਨਾਥੀਏ ॥ ਪੱਛੇ  
ਹਰਟੇ ਫੋਲੀਏ ਸਾਂ ਹੇਥਾ ਕੁਲੀਏ ਕਾਢੀ  
ਨਾਥੀਏ ॥ ਪੱਛੇ ਪੈਂ ਹਰਟੇ ਪੈਲਾ ਕੁਥਾ ਧਨਾ



१ अथ पाऊनी की धी जंजीर ॥ अथ हर उ  
पाऊनी धी ॥ अथ मंजु की धी मेला की धी ॥  
ते कहिये छीये ॥ संकाऊ जी टांऊ ५ दशम  
जसर ॥ उकर मूल टांऊ ५ शरी टांऊ ५  
धमा सो टांऊ ५ कौचां टांऊ ५ बलबीज  
टांऊ ५ अंघेड़ी टांऊ ५ गंजपीपेर टांऊ ५ ग  
लो टांऊ ५ सुंठ टांऊ ५ पाठि टांऊ ५ पीपली  
मूल टांऊ ५ चीन्ना छाल टांऊ ५ रासना टां  
ऊ ५ एटलं वानां नोऊ वाथ करीये ॥ हर उ  
सेर १ सोली आणीये ॥ ते हर उ नीको येनी







श्रीगणेशायनमः॥ श्रीकृष्णायनमः॥  
 अथ नरसीहमेहेतानीहारमात्मानां  
 कीरतनलप्यांछे॥ ॥ रागअसावरी॥  
 ॥ हरि लोककहेनरसैओखंपटवा  
 र्धतीवातराजाएजाँणी॥ सेवकलेड  
 वाम्मोकलोमंडलीके॥ राप्परारबब  
 रदंसारंगपांणी॥ टेक॥ जोमांहारे  
 कपटनधीरेकरुणाकरा॥ तीराषसोला



हार

॥१॥

जस्वामी जमाहारी ॥ सुंदरी सहित रुं  
गांव करूं सदा ॥ माहारेहरण प्रीत ता  
हारी ॥ १ ॥ सोर वसरु जो वामलु सुजने  
नागर लोक पारवे ड बोले ॥ कीरत न  
नां सुकुसां फलंक मलापति ॥ जो मे  
सहित महि शेष डोले ॥ २ ॥ तंत वीणार  
स सहनरी सां सररी पुघरि पाग्य प्रण  
कार बोले ॥ नर सैया चा खां श्री नीचंद ॥ ३ ॥



दाता सदा॥ सामलासमो वडकोर  
नहि जंतो दो॥ ५॥ ॥ हत्याकुंडक  
पदी खंपटी काहवांसदा॥ पारखंडरु  
पनागरजात॥ रायमंडली कमदभ  
रएमओचरे॥ सांभतसेसरवसभाजवा  
त॥ टेक॥ हरिराष्यशरणांगता अमो  
हुअणहुता॥ दांमोदरताहारी मेवात  
जांणी॥ मोगनीमात्वाकृतंघातीक



जर हार

॥३॥

री॥बोलेमंडलीककरवाणी॥३॥जो  
भांगीभोगलहरितुनेहारआपसे॥  
तोमुजनेदोषनथीमैहेता॥आप  
खवावीनानहिछुटोनागरा॥ताहार  
सबलदामीदररायेप्रीता॥३॥माखे  
तीलकपारबंडरचेसदा॥आजपडो  
जीवजंजातमांतो॥नणेमंडलीक  
धरतसुपानागरा॥शुःआनेसभाए॥३॥



मदभरगातो ३॥ ॥ पद१॥ रागगोडी  
भाईमांहारेहरिगावांनीटेवपडी॥  
माहाराणाथजीनेनांमुकुयेकछडी  
वेधीलुमनअलगुत्तांरहे॥ माहारेहरि  
प्रीतजडी॥ टेक॥ आंरवा दिवस मोरुं  
रत्नीरबपीआवो॥ भाभायेनांमुकुपां  
पारि॥ मेजांणुएवेरणमाहारी॥ भाभा  
नोहेगोरणी॥ १॥ जेणेनामानुछाप.



नृसिं. हा

॥३॥

रुछाही आपुं॥ कबी रजी नेअवी  
चलवांणीरे॥ एहवुजोई नैरोसें स  
रंगो॥ मुहें छबी लो जी मुकसें ग  
णीरे॥ २॥ धन्य यमुनां नट॥ धन्य व्र  
दावन॥ धन्य राधारु क मणी रंगीरे  
धन्य नरसै आनी जी भल डी॥ जे जपे  
छबी ला जी नीवांणीरे॥ ३॥ कीरनन॥  
३॥ ताहारे कोण छे छबी ला ने कोण॥ ३॥



कोण छे नाथ॥ कोणो दीधोता हारे

मस्त कं हाथ॥ हला तुं विषयरसमां

फां जी रस्यो॥ हरी मलवानो मारग का

हो॥ १॥ लंपट पणु तुं की दे॥ अण बो

टपी अध्यातम ग्रहे॥ २॥ शुद्ध वैराग्य पंथ

जो मुखे॥ तो गर्भ वासनो फेरो टब्बे॥ ३॥

आसर वसन्तासि के हे छे तुं न्हें॥ पछे क

ही शवागेन हि मु न्हें॥ ४॥ श्री ममणो नर

से या कां फे॥ ५॥ विष्णु गयो लंत आर्वे कर्म॥ ६॥



नृसिंहः

॥४॥

जे नरईछाईश्वरगाथ॥ ते कामिनीकं  
ठनां मुके हाथ॥ ६॥ एवै सवता कपां हां  
चीलही एणी पेरै फीमे पुछु सह॥ ७॥

॥ कीरतन॥ ४॥ ॥

॥ हारे भाई

कठिण कारज मुने भाषी ये दीधु॥ १॥  
सावी गयो हूं वन मोझार॥ उग्रतपव  
न मांहे कीधो॥ दया करी मुने त्रिपुरार  
गर॥ टेक॥ गोपेश्वरे का हूं नर तया जे  
मागे ते आ पु तु ने॥ ४॥ ॥



नेवाहालुं॥ कृपाकरिते आपो मुन्हे॥१॥

भोली चक्रवत्सु एथं या॥ ततक्षण मान

अवीग्रहोहाथ॥ सोलसहस्रगोपीसं

गरमतां रांस देषाडी ज्पाहां वैकुंठना

थ॥ श्री वृषभां न सुता नंदलाव॥ स

खिसमांणी सरू एसाथ॥ परमदयाल

कृपांल वरसुंदर॥ दीपधरा व्योमाहारे

हाथ॥ रहेत करी मुन्हे देखा दोधी॥ मा

हारो कृपागाथा लक्ष्मी सरतार॥ नर



नृसिंह

॥५॥

सेयातुंलीलागाजे॥ जेकीधीकल्ला  
अवतार॥४॥ कीरतन॥५॥ ॥आगे  
कलीजुगनालोकविषई॥ तेमांहेराग  
रातुंविषयागाय॥ कल्लेकीधुंतेआप  
णकमकीजे॥ तेप्रभुमोटावैकुंठराये  
टेक॥ कल्लेजोनेंगोवरधनधरियो॥ ते  
आपणेंकमधराय॥ कल्लेजोनेकाली  
नागनाथो॥ तेआपणेंकममथाए॥ ॥  
कल्लेजोनेहवानलपी॥ तेआपणें



कमपी बाए॥ कस्से जलमां परं वत ता  
रां॥ ते आपणो कमंतराए॥ ३॥ थासं न्या  
सी जइ रहे काशी॥ भलो होय तो नीगु  
पाग्रहे॥ सीम भणों कां भुलो नर सैं या  
आं भुमं॥ विने मुषराम जी कहें॥ ३॥ ॥  
कीर्तन॥ ६॥ ॥ हारे भाई गिर टा धैं सैं  
तपारे राम जी कहि शु॥ हवडां क ह्या नो  
मा हारे खपन थी॥ छे ल छं बी लो ने  
डोगाल॥ मा हारे गोवाली या मांगी कु



नृसिंह

॥६॥

लपती ॥ टेक ॥ हलायडमु की ने डाखे  
कोण बलगे ॥ कुरमु की ने कुकस कोण  
खाए ॥ रंगीला लुबीला छो गा लने  
मुंकी ॥ ताहाराम भगवांनी याने कोण  
गाय ॥ १ ॥ माहारे कृष्ण जी मातने कृष्ण  
जी तात ॥ सगां सहोदर कृष्ण जी सहाए  
कोपे मुन्हे नंदो को ए मुन्हे वंदो ॥ मे श्री  
कृष्ण जी मुका कर्म जाए ॥ २ ॥ सनक स  
नंदन मुनी जन वंदन ॥ ते जाकार माहारे ॥ ६ ॥



हृदेरहे **ग**ीरिवरधारी कुंजविहार  
भक्त वल्लव व्रीदवी वल्लवहे **॥३॥** स  
रण ब्रह्म सदाहितकारी **॥** दोह खुंदा  
सतगुरुन वसैहै **॥** सणेनरसै यो सांभ  
ल सुंरफा मडा **॥** तुंगर्ज नाकरि सुरवे  
कुसजी केहै **॥४॥** **कीर्तनि ॥७॥** **॥** राम  
**ममेरी ॥** जुयोरें रामजी नें नंदे नागरो  
एहंने अध्यात्म ग्रहानो आचरो **॥** टेक  
**॥** रामजी बीना कोणा भव जल तारे **॥** तुं



नृसिंह  
॥७॥

जोनेमन्त्रविचारीरे॥ चरणरजनापस  
एथकी जोनी उचरी गौतमनारीरे॥ २  
सागरमांहे जेणोशख्यातारी॥ धीमर  
नेवैकुंठआपुरे॥ चिरंजीवविष्णु  
पाकी धो रावणनुकुल उध्यापुरे॥ ३॥  
रामजीनेजाणोशंकरजेहेवा॥ जेतार  
कमन्त्रनुहारदलखेरे॥ भणोभोमका  
भुलोनरसेया॥ तुंगजना करिनेमुष  
रामजीकहरे॥ ४॥ कीर्ति॥ ८॥ हलातुं ॥ ७॥



रेहरे वेशी राम दासीया॥ ते तो देखी रा  
म उपासीया॥ टेक॥ हट्यारामजी नासेव  
कहोये समदृष्टी॥ ते कोहेने कहै कोईमा  
तुरे॥ राम कृष्ण मांहे अंतरसांनो॥ ए ज्ञान  
ताहो रूसर वेनातुरे॥ १॥ हट्यापरण ब्रह्म  
छबी लोमाहारो॥ जेणो गोकुळ माहा॥  
गोचारी रे॥ ब्रह्मा इन्द्र नारद ऊताशन॥ दे  
वग वासव हारी रे॥ २॥ जेणो कंस कुळ नि  
कंदन कीधु॥ छेरा वणना देवाशी शरे



हार नृ०

॥८॥

राज्यविभीषणउग्रसेनथाप्यो॥येआ  
द्यअंतजगदीशरे॥३॥वेरागीबणोराम  
जीमलेनहि॥ज्यांहांलगीनांआवेवि  
वेकरे॥भुरभीमडाएमकहेनरसेयो॥  
रामकृष्णबेऊएकरे॥४॥कीर्तन॥९॥  
रागकाहेरो॥नरसिंहांश्रमकहेसंन्या  
सी॥पंचाशषटमसमेकीधीकादी॥  
आतमअप्यासीरूंदायो॥तोहेनांम  
ल्यामुजनेअवीनास॥टेक॥बोहीतेर



षट्मासरुं प्रयागमां नाख्यो॥ संवा  
सोमपुंरं जीसेवुरे॥ तोहेभेस्वपंनेह  
रिनव्यदीगा॥ तोतुन्हें दरशनकेहेवुरे॥  
सतषट्मासनीमीषारणसेवु॥ पुह  
कररह्योपंचासरे॥ केदारगढकामरु  
षमीषमीआंव्यो॥ तोहेनांमल्याअवी  
नशारे॥ २॥ हवडोंसरवउफरासंन्यासी  
थांसेताहारीपततोमाशोषरी॥ नर  
सिहाभ्रमकहेमसेया॥ बेशीरेहेशीत



जर हा

॥९॥

हारी हरी ॥३॥ कीर्तन ॥१०॥ हलातुं रे  
हेरे भगु आल वंल व कर तो वांरु छुं  
आं हां थो उठी जा ॥ ब्रथा वचन ता हांरुं  
नहि चाले ॥ तुं टाठी बोली ने भागरषा  
टेक ॥ हला वैल वं नां भोग ते नथी दी व  
त्ये दाढा डुष ना वेगारे ॥ भावे ये टका  
षा विणी विणी एपे लाव डना दे टार  
जो तुं हेत वां छे पोता तु ॥ तो सुंदर शाम  
छ बीलागा ॥ भणे नरं सै यो सां भल जे

वेर

॥१॥



गी डा॥ मात्नापे हेरी ने वै सव था ॥ २१ ॥  
॥ कीर्तन ॥ ११ ॥ माहारांड नो मुन्हें मात्ना  
धरावें ॥ जो तां कपटी सुधो सह ॥ चीरुं  
ती लक ने छापांचो दे ॥ जातु ब्राह्मण मा  
गण वोन ही ॥ टेक ॥ हव डोंमी तासं रा  
काढी देरवाडुं ॥ जो उं अष्टां दश पुराण  
रें ॥ की हा पुस्त क मां हे लखु छे एह वुं ॥  
मात्नापे हेरे मत्ने सारंग पांणारे ॥ १२ ॥ तुं ये  
गेहे लोने रा जागे हे लो ॥ वे रुं मों को हो  
ने नथी कामरे ॥ सब सोया शुभं कहे नर रे



नरसै हा

॥१०॥

या रेहेवादेताहारे सुंदर शांम ॥२॥ कीत

न ॥१३॥ वटलो नागर नरसै यो जेणे वो

टुआ हिरडानुषाधुरे ॥ अवररसस रुं

ढोलीढोलीदीधो ॥ प्रेमरसायण ला

धुरे ॥ टेक ॥ ब्रह्माउमा वेदवषाणे ॥ लागी

जोगेश्वर तांलीरे ॥ शुकांदी कनेसपने

नां आवे ॥ तेरासरमेवनमांलीरे ॥ १ ॥ दुहा

लाजीनेषांध्यकामली हाथला कडी

गोधेनचरावाजायेरे ॥ नरसैयानागर

नेसाथेतेडिनेमंहेरे ॥ साडीनेषायेरे ॥ २० ॥



की त्वनि॥ १३॥ जो ब्राह्मण तो वैस्ववक  
चा॥ वैस्वव तो सुब्राह्मण नांम॥ मात्वा  
ती लक पापंडर चीने॥ ते वण साडसा  
रुगांम॥ टेक॥ धरत पणो त्ये सरवधु ता  
रु सोरठ मांस रू वैस्वव की धा॥ नटया  
नी पेरे करि नेना गरा श्री हामी हरनै है  
डषणा दी धुरे॥ १॥ पारवंडे पेट भर्या  
बं रूपे रे॥ आज मंडली के साहो हा  
थ॥ मणो मीम तो छुटो नरसैया॥ जो  
गरजना करी नैं को सोरधु नाथ॥ १॥



नरः हा

॥११॥

कीर्त्तन ॥१४॥ अदेषालो कते अटक

लबोले वाहा लाजी नो मरमनां जां

णो जायेरें जे हनु चित्त जे सुं बाधु ते

हने ते हविना क्षणु नारे हे वायरे टेक ॥

बीजा पदारथ सरं वको जाणो प्रीत भ

ली मन मां हेरें स्त्रे ही पुरुष नु कारण

मोदु ते हनी आंष डी अलग जण ये

रें साम लीयो माहारे हृदे समां णो ते

मुठंडा लो क सुं जां णो रें सणो नर सै सो

सां भट्य भुर भो फंडा तुं फो क ट सां ने त णो रे ॥



कीर्तन॥१५॥ ॥ राग असावरी॥ गोविं  
दाश्रम कहें नरसैया॥ अमो प्रीत प्रीछी  
ताहारी॥ महावायक उपदेशावी ना तु  
ने नहि मले देव मुरारी॥ टेक॥ श्रीपात  
थई मे सर्व स्व मुकु अष्टांग जोग मे साधो  
री॥ अमो इंड का मंडल ना धारी॥ तमो मा  
ला धारी क्यम वाधारे॥ मेहे ताजी नाचे  
कुंदे ने तात्व वजांडे॥ परम पद नव लह  
येरे॥ उदर भर काषाण्ड कर का॥ बखी लो  
क ने अंरुषाक हिमारे॥ मेहे ताजी म



नर. हार.

॥२२॥

लामुकीनेसंन्यासीघायो॥अमोआपुं  
ॐकाररो॥गोविंदाश्रमकहेनरसेया  
मागोपणनावेनहिआपेहाररे॥३॥  
कीर्तन॥१६॥ ॥रागमारू॥ श्रीपातने  
सिंदिनांहोयेरं॥वैल्लवचीनातरोनां  
कोयरे॥टेक॥कोहोजीकीहोसंन्यासी  
शरणजषाम्योदंडवेषजटाधारीरे॥  
तमोवैल्लवनीनंदाकरोभुंडाओनरक  
नाअंधीकाररे॥१॥समारीअस्त्रीमरे  
वेषावाटस्नेत्पाहेतमोअगुआपेहेररे॥१२॥



प्र। तपसक्तिवैराग्यविनापुंकोकोन  
जबेहेरोरे॥३॥ तमाराॐ कारनुकरे  
अथापुं॥ माहारेब्रंदावनचात्नोरे॥ ५  
पोनरसैयोमेहेलोइंडकमेडलमाहा  
रीपुवेतालवजाडोरे॥ ६॥ कीर्तन॥ ११॥  
मेहेत्स॥ बांकीबांणीरेमेहेताताहांर  
बांकीबांणीरे॥ ७॥ ॐ कारपिनेतालवषा  
णीरे॥ टेक॥ हलांतुरगकंरी करीकी  
रतनकरां॥ वलीकोटहलाबांरेउतपा  
सवातसरवश्रीप॥ ८॥ तेहनेतुंवा



ਜੰਗਲ ਹਾਰ

॥ ੧੩ ॥

ਲਖ ਲਾਂਬਾਰੇ ॥ ੧ ॥ ਤੁੰਨਿ ਗੁਣਿ ਬਲ ਰਾਮ  
ਨੇ ਮੁਕੀ ॥ ਸੁ ਵਿਧਿ ਗਾਯਾਰੇ ॥ ਨਾਨਕੇ ਬਾ  
ਲਾਭ ਅਥਧਾ ਸੁ ਸੁਤੀ ਵੈ ਕੁੰ ਰਾਧੇ ॥ ੨ ॥  
ਹੁਲਾਤੁੰਨੰਦਾ ਕਰਾਂ ਲਾਂ ਪਰਮ ਹੰਸ ਨੀ ॥ ਕੀ  
ਧੀ ਕੀ ਧੀ ਚੋਗੇ ਹੇ ਲੋਰੇ ॥ ਸੀ ਮਭਾਭੇ ਮੰਜੂ  
ਰਾਮ ਨੇ ॥ ਮੁਕਤ ਕਲੁ ਚੁਕੀ ਲੋਰੇ ॥ ੩ ॥ ਕ  
ਰਨਿ ॥ ੧੮ ॥ ਹਰੀ ਨੇ ਕਥਿ ਮੁਕੀ ਧੇਰੇ ॥ ਜੇ ਅ  
ਧਿਕਾ ਮੁਕਤੀ ਨਵ ਜਾਧੇਰੇ ॥ ਸਾਖਸ ਰੂਪੀ  
ਸਾਂ ਮਲੀਧੀ ॥ ਨੇ ਮਾਹਾਰ ਕੇ ਦੇਸਾਂ ਰਹੀ ਸਮਾਇ  
ਰੇ ॥ ਟੇਕ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਮੰਗੁ ਚੁਕੀ ਚੁਕੀ ॥ ੧੯ ॥



लाजी ना॥ आशुसम श्रेणो सांइरे  
ब्रंदावनमां कस छे वी ले॥ दीधुगोप  
आंने सांइरे॥१॥ नरसैयो हरविने हरि  
गुणगा से एसी मडोरी से मरसेरे॥ आ  
पणवे डूने वाद मंडाणी॥ नां जाणी ये  
को तरसेरे॥२॥ हरि रसनो स्वा दशं कर  
जाणो॥ वली गोपिये ली धो छे मागीरे  
मारु दस नकादिक सुक जाणो॥ त्याह  
नरसैयो नागरादि सागीरे॥३॥ कीर्तन  
॥४॥ राख आसा वरा॥ वैसवंबी नातसे



भरहा

॥२४॥

नथीपांमवु॥अकलसरूपभगवोनरे  
समरांदर्शनकांहाथीआपेवीनाआ  
तमज्ञानरे॥टेक॥विरागसुनकादिकभो  
गवेध्रवअमरीषप्रल्हादरे॥तेहेवीस्वा  
तत्पाहारीकांहाथीनागरा॥तेमिथ्याक  
रवोवादरे॥॥वैराग्यजोनीहवो॥तेपाम्पो  
देवमोररीरे॥ताहारिपिरेकोणोगासो  
उघाडोसणगाररे॥लंपटपणोतुहसुन  
हीपांमां॥राटसीछुर्लागीरे॥सहचर  
नेहस्वामीजीकेहउंनरसेयाहायभ

॥२४॥



रागीरे॥ ३॥ कीर्तन॥ २०॥ हारेभाईमुंड  
मुंडाविनेटोपिघाले॥ अमोनव्यथईये  
वैरागीरे॥ अमोवैसवछुछेलछुबिला  
ना॥ माहारेहरिशुतांतोलागीरे॥ टेक  
अंडममताभागीतेवैरागी॥ जेहनीअन  
हृदसिंगीबोलेरे॥ वेषधरिनेवेषकरेते  
वैरागीअसुरनेतोलेरे॥ १॥ अमोसंसारव  
हेवकरसरवेसाचविये॥ विकारथीवेग  
कारहियेरे॥ सरवचतसमदएलेरंव



॥ १५ ॥

वीए॥ तेहने वैस वक ही येरे॥ ५॥ अभा  
माने तंम्या सुकृत षोहूँ तेषी तरंगनथा  
लागोरे॥ मणो नरसैयो विराग मुकी ने॥ पे  
हेरे म्यांच वरुन नो वागोरे॥ ३॥ कीर्तन॥ २॥  
गगरोरव॥ रेहेरे गेहे लानागरा॥ ये बडो न  
कीजे वादरे॥ वैस वनाम केहे वरावीये  
तो बढवानो सोस वाईरे॥ टेक॥ हरिजन  
ने वक बुकसु॥ जे अषमी वरमां लीनरे  
पांच मुषे पंचवसु॥ सजीने॥ संपरोवेक॥



कोपी नरे ॥ १ ॥ शुकदेव व्यास इव सा  
सरषा ॥ करता भगु आनो अंगिकारें  
नहु आनी पेरे नागरा तुं करे छे सणगार  
रे ॥ २ ॥ कलस्वामी सरवेनो छे ॥ बली भगत  
जननो विसरां मरे ॥ माधव आश्रम कंहे  
नरसैया ॥ नथी भीन्न के सवने रामरी ॥ ३ ॥

॥ कीर्तन ॥ २२ ॥ रागासिंधु डोक डषा ॥ ॥

कोपावाकोरने विन बुनी वला ॥ कमला  
नाथं मनशुं विचारो ॥ दुपदी लाजने का  
न ॥ भावगु हरि ॥ इष ॥ संमोह वांछ सताहार ॥



॥२६॥

टेक ॥ प्रगटथायेनामभरतलमांभुधरा  
जेनरसैयानाथएहवुबरदकाहावो ॥  
सेवकसंकष्टतालीयेत्रिकमा तमोना  
थभूलाजकाहावो ॥ लोकदेपिसरू क  
उतंगकरेबुझु मंडली कमदपरचुरबो  
ले ॥ नरसैवाचास्वामीहमयेक आपी ए  
जोगीयांचाबलशांतहोये ॥ कीर्तन ॥  
॥२३॥ ॥ रागमारु ॥ हरितुनेहारनहीआ  
पेरे ॥ हरितुनेहारनहिआपेरे ॥ तुनेसं  
न्यासीशानपेरे ॥ टेक ॥ हत्यापुरा ॥



सुखो भमेरे ॥ जीव जंजा खेवाखोरे ॥ घण  
दिवस छांनोदं भवत्वावो ॥ आज तु न्हें कं  
वेसाखोरे ॥ १ ॥ प्रीत परब्रह्म परमेश्वर नी  
रख्यो विश्व प्रकाशीरे ॥ तेसाथे ताहारें मैत्र  
कशीरे रषे वाहि जांतो मैत्रीरे ॥ २ ॥ तं राम  
नी निंदा करेरे ॥ गोहे लागर वजरार्षेरे ॥  
सीम भणो तोहार जडे ॥ जो मुख वराम जी  
भाषेरे ॥ ३ ॥ कीर्तन ॥ २४ ॥ हलासु न्हें आ  
पनां लागेरे ॥ हाखो डब्रा सिआ आगेरे ॥ टे  
अमरी पसाथे हच करो ॥ गां तु



॥११॥

ओयइनेगागोरे॥ फगतहेतसुदश  
नमुकु॥ केहेवोरुषिजीनागोरे॥ १॥ फरी  
रुषीजीत्यांहांशरणजआव्यो॥ हरिज  
नमोटाकीधारे॥ अमरीषकारणकृष्ण  
जीए॥ दशवारजनमलीधारे॥ २॥ राजांमं  
डलीकगेहेलोथयो॥ सिद्धजोगीनांजां  
पोरे॥ नरसैयोकेहेनिरफलनांजासो  
मेहुस्रवषाणोरे॥ ३॥ कीर्तने॥ २॥ ॥ हं  
लैतुंकेहारविचारेजडशोरे॥ हलातनु  
हारविचारेजडशोरे॥ हलातनु



पडशेरे॥ टेक॥ हलातुपाघडी बांधे  
खुणाहरी॥ श्रीणा ज्वां मापट कारे॥ अ  
स्त्री साहासु जोई आंरव्यन चावे वल  
करेहायना लटकारे॥ १॥ हलानगरलो  
कतु नहे मोहिर स्या॥ तुल्ले पट वेषदं भधा  
शेरे॥ की हेरे कंबे बां हधरी नो॥ कयमंनचा  
बीपरनारिरे॥ ५॥ हेलां हारमगावो मेहे  
तां जी॥ क्यांहां छेंदे वमोरांरी रो॥ मंडली  
कंकहे बेघडी नुसाह॥ प्रछेनां पिस  
मंजरे॥ कीर्तन॥ २६॥ राग परजीयो॥



महाभारत

॥ १८ ॥

हंतो त्पाहारे भरौ से बलु धोरे ॥ माहा  
रासा मलीया साथे छु सुधोरे ॥ टेक  
मंडली कसुजने मार सेरे ॥ त्पारे तमो गो  
कुल मांक्य मरे हे वा सेरे ॥ माहारे तो कां  
इजां नन थोरे ॥ ताहारु भगत बलु लव  
रद जाशोरे ॥ १ ॥ प्रह्लाद थो हिरण्यकश्यप  
पहारो ॥ अंबरीष थो हवसिारे ॥ येक व  
र मंडली कंथो नर से या थो मंडली कहा  
रे ॥ ताहारि सुहे छे आसारे ॥ २ ॥ संन्यासी  
वैरांगी विस मुबोले ॥ एषण ॥ ३ ॥



सणो नरसै योहार आपा माहाए बाहा  
ला ॥ माहारे हावु मल्लो छे छे करे ॥ ४ ॥ क  
त्तनि ॥ २७ ॥ ॥ राग सामेरी ॥ रेहे रे गुण वं  
ताना गरा ॥ हरि सुं नकी जी एवा दरे ॥ हवे  
हार आपे नहि ॥ ते सुद्ध तपो ऊं सरं वरे  
टेक ॥ हवे दान वं पदवी पांम ॥ ते रहें थोडा  
का लरे ॥ तप बल वर दान आपे पछे उ  
यापे गोपाल रे ॥ १ ॥ हिरण्य पाक उपपरा  
वण हवी गया ॥ बली गयो तेडु यो धिनरे  
अंकक सरुप सु अटक कसी तुम्हार



॥१८॥

जीममतामन्त्रे॥१॥ कथमवाहालो जी  
लज्जाराषेताहारी॥ तेहरिभजामत्प  
मरे॥ अटपटीगतगोपालजीनी एमकहे  
अदभुतआश्रमसे॥३॥ कीर्तन॥२८॥  
रागसिंधुदोंकेंडषा॥ हरितमोदयासील  
ऊदीनदामोदरा॥ जुओदिनानाथहृदेवि  
चारी॥ चरणनेशरणआ॥ व्योहृपानाथ  
जी॥ करोगोपालसंभात्महारी॥ देक॥  
देवनादेवतुंदेवकीबालका॥ भगतपा  
लकएहवुखरस्ताहारे॥ एहवुजांभीजे॥



घटे ते की जी ये त्रिकमा॥ अवर पुरुष  
को नहि जमा हारे॥१॥ माम की नां मे तमो  
तन तारी तमो विना कोण उगारे मोरार  
इए भावे तमो पुत मा तारि॥ जम हूत ना  
तमो संग निवारी॥२॥ जो मा हारा कर मने  
भाय सो भुदरा तो पति तपां वन ता हारु  
वरद जासे॥ छंड तां नहि छुटो रे सरपां  
गता॥ छंड सो तो उपहास थायो॥३॥ दुप  
दी नां तमो अंबरी पूरी चां॥४॥ थापियो  
अव अवी चल आगे॥ एह बुजां पीने



नरसैयोनांमताहारुजपे राष्यचरणे  
रषेलाजलागे ४॥ **किन्नरि॥ २८॥ राग**  
**सामेरी॥** गरवनांकी जेगेहेलडा॥ सुंगर  
वेग्यांनगमाओरे॥ सुकतलज्जाषोदि  
हववडे॥ आगविनेशुं कामकमायोरे॥ टेक  
नेत्रलुतां अंधशुं धयो॥ जोनेमनसुवि  
चारिरे॥ मोटुफारणमायातपुमुक्यास  
मविसारि॥ **१॥** शानेअरथेअहांआविया  
अगविनेकामशुकीधुरे॥ अमृतरससुकी  
ने शुंहलाहलपीधु॥ **२॥** अणचितवुंवा



लियेनहि॥ हृदयं शुभं यु है शुभं न्य॥ अवि  
त्य आश्रम एम कहो॥ करो मे हेता जी मु  
न्य॥ ॥ कीर्त्तन ॥ ३० ॥ राग सिंधु डोक डष  
येक अचनी धरा॥ देव दामोदर कं हूंगु  
पातोरडा कवण वांणी॥ शि कर सार द ना  
र दनिगम हरि॥ अविगत गंत क्यमं जाये  
जांणी॥ टेक॥ विश्वपालक तुं सात्य करु  
मा हरी॥ टाट्य फेर राग भवास केरा॥ वार  
ण दो श्री हरि दास जांणी॥ करी आन स  
म रथ को नहि अनेरा॥ १॥ सगुण सार



हरि

॥२१॥

धर सुंदर शुभमंती ॥ विनति जुगपति  
सुणारे स्वांमी ॥ संसार पार उतारी कम  
लापति गोविंद गोपाल गरुडगांमी ॥ २ ॥  
नंदनानंद मुकुंद मुरलीधर गोकुल  
चंद गोविंद गापाव ॥ सारकर माहरी  
दीन जांणी करि ॥ नरसै योर कतारुं जवा  
ला ॥ कीर्तन ॥ ३ ॥ श्रीरघुनंद मणिमं  
दहं मानवी ॥ एहवी दानवी बुद्ध बांधो  
जदेवा ॥ मनना स्वादने वाद करि बोली  
से भोली येरां मजी तोरि सेवा ॥ टेक ॥ अंक ॥ २१ ॥



तु अविनाश प्रकाश बुद्धि की जीए  
दी जीये दरसन रंम रुडा ॥ ताहारं ॥  
मनो हट विश्वास आव्या नथी तेनर ॥  
सव जल मध्य बुडा ॥ १ ॥ अमरीष विभी  
षण परम विचक्षण ॥ अंजनी सुत बुल  
सी जदास ॥ श्रीमभाणे तेजोराम ओल  
गा ॥ वामी यो ते माताग नवास २ ॥ की  
तुनि ॥ ३२ ॥ ॥ सगत चारै एतु कसका  
हावां सदा ॥ आजमा मसुकी कां रे नंद  
नाज काला ॥ इंद्र वैभव सदा माने ॥



नर. हंस

आपीयो॥ आजकपणथयोकारे  
वाहाला॥ टेक॥ हरिमाहारोहथीयो  
जेणोकाखीनागनाथियो॥ अघउतर  
डीयोदाणघाटे॥ बेबलताहारुकां  
हांगभुनाथजी॥ नाशीगयोभुमंडली  
कमटे॥ नरकासुरभुभुपाखजरासं  
धतेजीतीओ॥ अनंतजोधानातेबंधछो  
ड्या॥ प्रखंबवगासुरतरणतेताडियो  
केशीकंसनातेकंठमोड्या॥ सावेकुभा  
वेजेणेतुंउपासीयो॥ तेजसबीगभकं



सनां आवेवलतो॥ फणोनरसैयनसैय  
तुंमाधवा॥ राष्मराष्म बालकनेवापव  
लतो॥ ३॥ कीर्तन॥ ३३॥ ॥ रागमारु॥ ॥

मेहेताजीरामनुलीजेनांसतेणेभवछु  
टीयेरे॥ येकलक्षणीनहिसरेकाममिथ्या  
तालकुटीयेरे॥ टेक॥ नीमलनांसरामैया  
जीनु॥ पीतांपातगजायेरे॥ रामजीनुनांसनां  
महेबेलीधु॥ तोमोईजीवाडीगायरे॥ १॥  
राजीबलोचनहलाहलंमोचनंदीनो



॥ २३ ॥  
ना दयालरे ॥ रामजी ने मुकी श्रुंग्रह  
रखा छो गोविंद गोपाल ते डा लरे ॥ २ ॥ सी  
ता स्वांमी अंतरयामी जे हने नां मे भव ज  
ल निस्ताररे ॥ रघुनाथ आश्रम कहे नर से  
या मग परामजी पास हाररे ॥ ३ ॥ कीर्तन ॥  
॥ ३४ ॥ ॥ ताहारो रे हे वादे भगु आराम ॥ ते  
हनु मरती बेलाले काम ॥ अमो नव्य मा  
नीयेरे ॥ टेक ॥ ज्पारे केश पत्नाये ने निरग  
लाये ॥ ज्पारे श्रवणो सां भल तारहि येरे ॥



लखुतावाधेश्याननीपेरे॥ त्पारेताहांरा  
रांमजीनेकहिपेरे॥ ५॥ हखातुंजममनो  
जोगीकुटुंबवियोगीषोहिबेगोधणा॥  
न्याणीरे॥ रंगीलोलेबिलोछोगादोगी  
वाल्लो॥ तेनरसैयानागंरनीवांणीरे॥  
॥ कीर्तन॥ ३५॥ हारेहेलांहारमगाव्यरे  
नगरातुंहेलांहारमगाव्यरे॥ ताहारोसा  
मलीयोसुताजगाव्यरे॥ टेक॥ क्रोधिप्र  
लंबबोलेपरधान॥ मेहेतांजीउतारोम  
न॥ ३॥ वाहकरंतांथरुडिवांर॥ लंगट



नागरनां आव्याहार॥३॥तुंसंतथयोतु  
 हेसहकोनमे॥तुं परनारिभुं रंगोरमे॥३  
 वैलवयइ वणसाडुगांस॥हावेनथीना  
 गनुकाम॥४॥आजमंडलीककोप्पोमे  
 हेराणा॥माथेमहसु आवुंनिर्वाणि॥५॥लो  
 कहसारथहवडाथशे॥लंपटनागर  
 ताहारोजसजसे॥६॥प्रलंबप्रधानकरे  
 बहुरीस॥वाहाणुवाशेत्यारे छेइसेसी  
 स॥७॥कीर्तन॥३६॥॥रागकाफ़ी॥साम  
 लीयांभुंभुतोसोइतांणी॥मेतोताहारी



दुष्मण कांश्निथी जों एणी रे॥ टेक॥ समो  
वड साथे शोप्पी ये रे॥ दो अवा त जुगदा  
श॥ की डि उपर को हा डो मु जरं क उपर  
शीरी सा॥ १॥ ब्रंदा वन मसी तल छाया  
य मुनां नट समी रे॥ राध का जी ता हा  
रां चरण तल से घणु उं घा शाम शरी रे  
॥ ज्यम ज्यग पो दुप ही मे का जे हाथी ना  
की धि वाहार रे॥ जरा संध ने जी ति मु का  
व्या॥ राजा की सहजार रे॥ ३॥ मां नी ति ने  
ने ला रे॥ पा र ज तनु सां डो॥ एक



नरसै  
॥२५॥

नरसै याने हार आपता ॥ तुम्हे की हो चढ  
से पाडुरे ॥ ४ ॥ ता हार वसु देव नंद तो मो ते  
सु आछे ॥ सुज उपर शो क्रोध रे ॥ भणो नर  
सै यो वा हांण वाशो जाग्य जाग्य मा हार  
ज्या दवा जा सुरे ॥ ५ ॥ कीर्तन ॥ ३७ ॥ ॥ ता हा  
रे वे रे सुतारे सामली यो ॥ ता हारे वे रे सुतारे  
टेक ॥ ज्यां हां विषेत्यां हां विष्णु नहि रे एम  
बोले वेद पुराणारे ॥ राम त्यजी जेणे विष  
य गायो ॥ ते पुरुष शको पाषाणारे ॥ १ ॥  
सज वादिक संकर नारद ॥ शुक्र ॥



नकसुजातरे॥ गोरषदत्तवासिहंगाथा  
तेनिर्मलश्रीरघुनाथरे॥ नारायणने  
निद्रानथीरे॥ नरसैयाकरुविचाररे  
मसादरशि॥ कहेट्यारेहरिसुतो ज्यारे  
तेगायोसणगाररे॥ ॐ ॥ कीर्तन॥ ३८ ॥  
रगसिंधुडोकडषा॥ देवाभक्तिवाहाल  
तुन्हेभक्तिवाहाली॥ वैकुण्ठथीभरमि  
आख्यारेचाली॥ आखिलसरूपताहा  
रुदेवनेदुहभगोपियाचंगलेबाह्य







शंनद्रीधु॥ नरसैयाचा स्वांमी भग  
तव छत्रसदा हारनेकांते असुरकी  
धु॥३॥ **कीर्त्तन॥ ३२॥ ॥ रागसामेरी॥**  
हवलीधे अरथनांथाये॥ **गोहेलाह**  
वलीधे अरथनांथाये॥ **आवमा**  
सवापेयो टटवले॥ **प्रणामेघपांण**  
नां पायेरो॥ **टेका॥** साचिसेवाविना  
राममलेनहिषोटी तं मांरी प्रीतरे



॥२९॥

आफणी ये हरिहार आपनो ॥ जो होय  
जोग संधान नीरित रे ॥ वायु नुरोधन  
शरिर नुरोधन ॥ घट घट मां हरि निरपो  
रे ॥ पर न जार थो के हे नर सेया ॥ तुं जो  
गीथा अम सरपो रे ॥ २ ॥ कीर्तन ॥ ४० ॥  
॥ राग मारु ॥ हला अमो भोगी रे अमो  
भोगी रे ॥ जे हनु प्रण पाप ह से तेया  
से जन मनो भोगी रे ॥ एक ॥ जटाव धारे ॥ ३९ ॥



जुगदीसमलेतो॥ वडवैकुंठचालेरे  
डंडधरेदीनोनाथमलेतो अंधल  
कुटीयासालेरे॥ १॥ मसमचीले मग  
वांनमलेती खरछारमांखेदेरे॥ डंडव  
तकरेदीनोनाथमलेतो॥ सरपंभोम  
नेफोटेरे॥ २॥ जंगोटाकछोटाकथागा  
दडीओशंखसिंगीफुकोरे॥ मणेन  
रसैयोप्रीतनजांणोहरीनीतोमिथ्य  
वदबुमुकोरे॥ ३॥ कीर्तन॥ ४॥ रातरहा



॥ २७ ॥

घांड़ीरे॥ नागरारातरही थोड़ीरे॥ सने  
हदीगेता हारा सामझी यानो॥ तुं सेना  
आव्यो प्रोड़ीरे॥ टेक॥ सोरगसऊको  
जोगमूल्यो कारअग्रय॥ सां सेधारे॥ ह  
जी आशा तु नहे हारतण॥ छे॥ कोणगे  
हे लोकी धारे॥ ५ पाग्यलाग्य सरव  
सीपातांनो॥ मुक्यभात्या उतारीरे॥  
तो मृत्युधक्की उगरो नरसेया॥ एम  
कहेशी धार॥ बलचारीरे॥ २॥ कीर्तन॥ ३॥

॥ २८ ॥



राग वेरा डी॥ जीवनि साटेरे॥ माटो माहा  
री जीवने साटेरे॥ शुभयुं मृत्पुपां म्याम  
टेरे॥ टेक॥ उग्रपुं हि तमाटो पां  
ते आज मुक्क॥ कय म जायेरे॥ जे नर से  
ओ माटो उतारे॥ तो जग स प्र ले थायेरे॥  
न व से हे न वां पु अवली चा टो॥ समुद्र  
सा ते सु के रे॥ मेरु च वेषे पश्चि मेर विप्रग  
टे॥ तो हे नर से यो माटो नाना मु के रे॥  
रूपो जोगां सर वे वै स्र वणा यो॥ माहा



रुसि

री पूरता लव जा डोरे ॥ मणो नर से यो  
जोग धरिने ॥ कां मानव जनम वण सा  
डोरे ॥ ३ ॥ कविन ॥ ४३ ॥ ॥ माला मननी  
राषी ॥ से डे ता जी माला म तूरी राषोरे  
तुख सी का ए मां भार घणो ॥ छे ॥ गले थांगुं  
छे लां काढी नां षोरे ॥ टेक ॥ जस ती लक  
धरो ललाट पर मन आनंद पमा डोरे ॥  
सो हं ब्रह्म ने खे गगा यो ॥ अनहर ता ल  
जा डोरे ॥ ॥ आत्म विचार निना अर्थ ॥

२९ ॥



रेनाह॥ दुखसमलंबोरामरे॥ विश्वेश्वर  
आश्रमकहेनरसैया॥ लुदानुनयीका  
मरे॥ ४॥ कीरतन॥ ४४॥ ॥ वैष्णवपूजा

मांभारजोगडा छेघणोरे॥ मनमहि  
लेहसुरीनुवामजेहोयेगुंगणोरे॥ टेक॥  
अमोवीरलावैष्णवजन॥ मगटहरिगुण  
गाइयेरे॥ अमोषीजीयेहरिरसपांन॥  
सांहामांनेपाइयेरे॥ १॥ हल्लाचोरीनो  
लेमातलजेपुणोभजीररे॥ अमोनादी



नृप  
॥३०॥

कीजेकीचन॥ लजातजीएरे॥२॥ आ  
गलनीसरदुसरीआण॥ षरे षोंषा  
रीएरे॥ नात्यकुललोकाचार॥ सरव  
वीसःरियेरे॥३॥ नथीजोमोव्यापीक  
हस॥ आंध्रफटकारीएरे॥ नथीलागी  
तुहेश्रीपातप्रेमकटारीपीरे॥४॥ खट  
कालोछबीलोनाथ॥ रंगसरभणीयेरे  
न॥ तेगोकहेसंडकीकरायनेत्रणवत  
भणीयेरे॥५॥ कीचन॥६॥ रंगमेवाये॥॥३०॥



राजाकोप्पो आंप्प चढावीरे॥ वातक  
रतांरे वातथरगाढीरे॥ टेक॥ षडग  
काढीनेरेकोप्पो॥ भूपालरे॥ कोप्पेचढ  
यो बोलेमुख आदरे॥१॥ वादताजां  
रे॥ राजपमांरांणीरे॥ सभामध्य आंवांरे  
बोलेमुखवांणीरे॥ रीसनांकीजेरेपु  
त्रविचारीएरे॥ भगतनेब्राह्मण॥ तेहेन  
क्यममारीएरे॥३॥ मरमनांजाणोरे॥ वैष्णव  
पंथजोरे॥ नेरसे॥ नोवाहाने॥ गोपाकं॥



हरिः ॥

॥३१॥

हरिजनपी उतारें घणुपी डारहरा  
मेहेता जीनेम नावोरे ॥ कुरबीन ती  
कर ॥ ५ ॥ मंडलीक जोखोरे ॥ हठमुकुं  
नही ॥ भगत जीउरें रजनी थोडीरही ॥  
हरि जमसाथें रें होडकी जैनहि ॥ हरिज  
नसमो वड को आवेनहि ॥ ७ ॥ कीव  
न ॥ ४६ ॥ ॥ राग सिंधु डोक डपा ॥ देवा  
हंमची बारकम बैदल भइला ॥ तुम  
जामुला ॥ चकम नी सरा गइला ॥ टक

॥३१॥



ध्रुव अमरीष प्रल्हाद विष्णु वृषाणां  
माच्यो हाय तुमहु धपै रिला ॥ टेक ॥ अ  
सुरमां हे कबीर ते ओधारो नामानु ल्याप  
रुआप्पु छाही ॥ जय देवने परमावती  
आपी रवेनांगरने जातो वाही ॥ अमो  
षत्व भत्वतां तमोषत्व भत्वसो ॥ गोकु  
लमां रहिक्य मसकवमे ॥ तमोराधिक  
नेसंग ब्रह्म वनरमतां ॥ अमोकी नाविना  
इतेक्य मकं रशो ॥ ३ ॥ जोराजा संड ली



नरिह

कमुजनेमारसे॥ तोचपटी एकधूल  
 पं॥ जाइजावो॥ कीर्तनकर तां कहेशे  
 नरसैयोमारीयो॥ भगतबहुलताहा  
 रुबरइजावो॥ ३॥ कीर्तन॥ ४७॥ ॥ रागमं

हाथरामगणेशगोस्वरय्यो जांडो

33



नां आव्योगो कुलनां नाथं रं ॥ २॥ सोरव  
सह मे आगना आयो ॥ आप आपणों घे  
रजा एरे ॥ वास्तु रेवा श्रम के हे तो जी वो  
नर सै या त्वा गो सी पात ने पाय रे ॥ ३॥ क  
र्त्तन ॥ ४८॥ नो हे रे पाषंड ॥ भगु या नो हे रे  
पाषंड ॥ हार आप्या वी ना नर सै या ने ॥  
कम उगे सुर मे रु डेंड ॥ टेक ॥ नां ओ सर  
हं कीर्त्तन करतो जो भाणी पड़े ब्रह्मांड  
रे ॥ हरि गुण गंगा सां स्वर मा हारो बिसे तो



नर

॥३॥

जीकाकरुषैशतषंडा॥१॥ छबीलाजी  
नेमुकीकममनेनसु॥तेपेपाहुपोंडरे  
मणेनरसैयोहवडांहारसुगाहुं॥मुका  
बुतमारोहुंडरे॥कीर्तनि॥४॥ रागसी  
धुडोकडपा॥लंपंटीकपटीसीवातकु  
डीकरे॥बोल्पविचारीविवेकमेहेता॥  
षटशास्त्रचारवेदपरनांजाणो॥ताहा  
रेसबलदामोदररायप्रीता॥टेक॥सुर  
तवरु॥रतसुंजोचरेनागशआपक्ष

॥३॥



वी क्यमवैस्सवथईयै॥ नागंरिनास्समां  
अधीकमटकाकरे॥ येणीपेरेसामखाच  
रणजईये॥ २॥ हलामनमतीअतीघणी  
सुंहरकंखाअतीघणी॥ गामरसायण  
जुगाधणीजकाहावे॥ फणोंफीमतुंसांभं  
लनरसेया॥ तुजचात्तनेलोकमांकोण  
खावे॥ ॥ कीर्तनि॥ ५०॥ ॥ हलात्तंपट्टी  
कपट्टीतेजनमनीजुगेसुदा॥ जेदामोद  
रायनेशरण॥ नाव्यो॥ हीनतेरीनचरण



नरहरि

॥३६॥

टते बाडी यो॥ जेहरी जन थी डुर काहा  
यो॥ टेक॥ हला असत्य अन्याई ते वो  
लभां षेक सा॥ कोण धर मेही बोले मूढ  
मातो॥ तेहरी जन थी रं करु गो फरे कुबु  
ध विषे ने रंगरातो॥ १॥ हरि जन साथे होड  
हो सिकरां॥ जोये तुं भीम डाप्री तमाहारी  
मणे नर सैयो हरि हार मुने आपसे॥ पछे  
कोण कुबुधि प्री तताहारी॥ २॥ कीर्तन॥  
॥४१॥ श्रीरघुवीर धरणी धरा सुषकरा

३४॥



इषहरासी ताजी स्वामी ॥ श्रीपतीर  
घुपती श्रीपती शुभमती ॥ अवीगत  
नाथ अंतरजांमी ॥ टेक ॥ माहारेमाततुं  
ताततुं भनाततुं सुदरा ॥ हाथ मुस्तक आ  
बीजधरीये ॥ हीनं रुदीनं लुलीनमाया  
विषे रामरुपाये संसार तरीये ॥ १ ॥ दंश  
रथ बात्सदयालु रूपालतुं ॥ एहबुं जां  
णीने रुंशरणं आव्यो ॥ श्रीममणे मुक  
व्यसंसारथी ॥ ज्यमग्राहयंकी रामरा  
ज्यंगजमुकाव्यो ॥ २ ॥ कीर्तने ॥ ५ ॥ हला



नरः शं०

॥३५॥

अबुधि अज्ञां न ताहारु मन चो होइ  
स भामे ॥ पर ब्रह्म नी प्रीत तुं क्य म जां पो  
प्रीत विण प्रर वरे भुर भर मे फरे ॥ एह अ  
ज्ञां न तुं क्य म आं पो ॥ टेक ॥ विश्व कला  
व्यापक हरि सदा ॥ तेर घु पती ने तु ज जां  
पो ॥ वेद ने ती कहे ॥ नारद सुनि न व्यल ह  
ते हरि गोपिका प्रेम मां पो ॥ श्री राम र  
घु विर धरा धीर धारि सदा ॥ दशरथ सुत  
रघु वीर का हावे ॥ सर वशी अल गोर  
मे नी त सु न मे सदा ॥ ते घट घट मां हरि

॥३५॥



क्यम आवे॥२॥ हलां अलखु दि औ  
अरथ ब्रथा करे हरिजनवी नाह  
रिहाथ नावे॥ सपीनरसेवो असतन  
हि ओचरु॥ हलालीन ये गुण तुं क्यम  
गाए॥३॥ कीर्तनि॥ ५३॥ रांगमारा॥ सुको  
लीधी वातमे हेताजी सुकोलीधी वांत  
सेतो फोक टकरवी आस॥ मारभागा  
गधारे॥ टेक॥ सनेहत मारो सरवेदी  
गे॥ उगेनेवा हांणु वायुंरे॥ प्रवण अ  
पवित्र यंया अमहारा॥ तमो सण गार



नरः सारं

॥३६॥

हं हं हं हं गायो रे ॥ १ ॥ खोटे पारिये भी  
ता चढे नहि जुगी प्रीत नव्य होय रे ॥  
गोविंद मने जो नाचे कुद ॥ तो शास्त्र भ  
पो नहि कोय रे ॥ २ ॥ घुघरा छोडो ने पाल  
व ओढो ॥ जो डो वे रूये हाथ रे ॥ विश्वं भ  
राम के हे तो जीवो ॥ नर सैया जो जागी  
क होर घुनाथ रे ॥ ३ ॥ कीर्तन ॥ ५४ ॥ ॥  
होरे माहारो हरि नहि जाये हाड रे ॥ आवी  
उभोर सी छै कं माड रे ॥ भोग न भोग से  
रे ॥ टेक ॥ ज्पां हां विसवां सत्पा हां विश्वं पर

३६



हरा जननी प्रीतनां होये खोटी रे ॥ वैष्ण  
वमारगमांगो थां रबाये ॥ तमसरषा जोग  
लख कोटी रे ॥ १ ॥ नाच्या ब्रह्म नाच्या नार  
द ॥ नाच्या नीगमच्या ररे ॥ ब्राह्म तमाय  
बांधी राषो ॥ हरंजी आपसें हाररे ॥ २ ॥  
हवडां साकलव छुटी नेता त्यांचुटे ॥ म  
धुरामां जमकी धुरे ॥ मणो नरसेयो हरा  
इरसनदी जे ॥ ज्यमदेवकी नेदी धुरे ॥ ३ ॥  
कीर्तन ॥ ५५ ॥ राग धन्यासी ॥ सन्यासी  
सरदेमली ने बेठा ॥ सों करं वो विचाररे



नर. शांर

॥३९॥

दामोदर रायना कं वसा ये तांणी बांधी

७ छेहारजी ॥ टेक ॥ मंडली कने सीषां

मणदीधी ॥ नरसेयाने बिहावोरें ॥ षडग जी

काढी नेरायजी रहोउभो बेडी पाग्य

पेहेरादोजी ॥ १ ॥ षडग काढी नेरायथ

योउभो त्पारेरांणी येसा ह्या हाथरे ॥

ब्राह्मणनेवली भगवत हरिनो ॥ दुभाय

वैकुंठनाथरे ॥ २ ॥ जेपुरुषशुभवां छेपरे

तानु तेपीदश तंजवां अपत्यक्षणजी ॥

परप्रव्यपरनदापरनारी नांकरवीवच ॥३९॥



नपरी लोपजी॥३॥ कुंडी साधन हत  
नांरमबु हरी जनशुन करवो कोपजी  
अस्त्रीनीसी पामणारयेनांमांनी त्प  
वारां बोल्यांमातजी॥४॥ धीकरे कुयर  
धीक कुल ताहांसुं धी कं तां हारी तात  
जी॥ आधन आचार धी कं ताहांसुं॥ दों  
नदया धी कारजी॥५॥ बल गुणरूप वि  
द्य धी कं ताहांसुं धी कंधी कधन भंड  
रजी॥ गयुरेरा ज्य कयऊ कं स्या हांत  
नर सेयानेनां छे डरे॥६॥ माता वचन



नर-हो-नः

॥३८॥

लोपिनेवालो॥ करिहरिजननी के डरे ७  
तपारे श्रीधरसंडितेरा जावारो शोअर  
ये आयुधली धुजी॥ येहनी पुत्री येपरी  
झाकी धी॥ एहने हरिये मोसा लुकी धु  
जी॥ ८॥ तोहे पंडितनु कहुं सब्यमानु॥ आ  
व्योस फामो शारजी॥ मेहेता जीहार मग  
वी अमारो षडंग काहु ब्राहारजी॥ मे  
हेताजी येपुत्री तेडावी॥ विषम वेलाजी  
इजी॥ श्रीदामोहर अमोतम्यो शरणग  
त॥ तमविना अवरनहि कोयेजी॥ २०॥

॥३८॥



॥ कीर्तन ॥ ५६ ॥ ॥ माता धसी सै मां  
आव्यां ॥ ज्वां हां रू तो रा जन्त जी ॥ बोझा  
माता कुपर सां फलो ॥ आवडु सु अज्ञां न  
रे ॥ १ ॥ माता रोस मननां धर सो ॥ जु ओ वात  
विमां सी रे ॥ बख चारी के डे खई लांगा ॥  
तेह वासर वसं न्यासी जी ॥ २ ॥ माता तेह वा  
सी मडो मुजं ने प्रे रे छे ॥ क्यम की जी येवली  
तेह जी ॥ प्रलंब अध्यान को पेचढो छे ॥ ते  
हनी दुजी देह जी ॥ ३ ॥ सोर वस रू की जो  
काम ल्यो छे सरु ने गमती वातं जी ॥ सह



नरः हार

॥३८॥

चराः स्वामीजी केहेछे ॥ नरसै येमांडी  
छे विख्यातजी ॥ ४ ॥ साहां नेक उतगनाग  
रकरेछे वाये चंगमृदंगनेता लजी ॥ न  
गरभ्रष्टकरेछे माहार ॥ सरू बोलेछे  
वाणी आलजी ॥ ५ ॥ ब्रह्मतां मातायेणी  
पैरे बोल्यां दुष्टलोकताहारी पासेरे ॥ तुं  
मूरखवैल्लवनेडु भवेछे राजपताहारूं  
सरवेजाशेरे ॥ ६ ॥ धीकतां हाराहस्ती प्पो  
डा ॥ धीकताहारो भंडारजी ॥ फटमूरख  
तां हारूं मुखनां जोउं ॥ छपनो तुने जेहं ॥

॥३८॥



कारजी॥७॥मिथ्याताहारांदांनभसंघ  
लांमिथ्यामेंतुजमायेज॥दृष्टवीप्रले  
जायेरेपापीजोवैल्लवजनहुभाएजी॥प  
श्रीधरपंडितनेतेडीनेपुछो॥मिथ्याए  
हनोरुआरजी॥एसमोवडकोएवारुन  
यी॥आपणोरंजकारजी॥८॥कीर्तनि॥९॥  
रागआसावरि॥श्रीधरपंडिततेडावीयो  
मंडुलीकेतेणीवाररे॥माहारुमनभ्रष्ट  
घउंकोणपेरेमुन्हेकोहोतेविस्ताररे॥  
टेव॥पंडितवलताओवर॥तमोसांभ



नर. ह.

॥४०॥

लोरे आनरे ॥ असंत्यहं नहि ओचरु  
दारव बुतु रहे जी जज्ञां नरे ॥१॥ एना गरे ल  
जा लोपिनथी ॥ वाये चंगमृदंगने तालरे  
येण जगर भ्रष्ट करुं नथी ॥ गाय ले गोवि  
दना गुण रसा लरे ॥२॥ ती लक मुद्रा शोभ  
तां ॥ जेह नेकं वतु लसि मालरे ॥ विचित्र वे  
स्त्र व वेश सुंदर ॥ दी सज्जो दया लरे ॥३॥ रा  
यजी मुख विचारी ने बोली ए ॥४॥ हरि ज  
न साथे हो डरे ॥ नर सैया बैल वने ॥५॥

॥४०॥



वौछो॥ तमने मोटी लंगा पोडे ~~हवा~~ ये  
कमुखे कथा हूं सी कड॥ जेहने श्री दामो  
दरसुं प्रीतरे॥ पंडित कहै राय सांभलो  
नी पनुइहां विपरितरे॥ ५॥ ~~की~~ ~~ह्वनि~~ ॥ ५॥  
राय प्रतिपंडित ओंचरे॥ तं मोघणा के  
रो अपराधरे॥ जे पुरुष शुभ वांछे पोता  
नु॥ तेह कप मउ वेषे साधरे॥ टेक॥ ये कवा  
रूप हास एहने कंस॥ नागर लोक महा  
लंडरे॥ तीरथ नासी घेर मो कला नरसे  
ज्यो करे पांषंडरे॥ प्रणाम करी ने मेहेता



नर-हा.३

॥ ४१ ॥

जीने-रूपैयां आप्यासेहेसातरे॥ वार  
कामांरुंडीसकारि॥ सामलीयेश्रीवै  
कुठनाथरे॥ नरसीहमेहेतेमनविचा  
रु॥ नगरेकरुंउपहासरे॥ सामलसा  
वरदपालजो॥ ऊंडीलंषितमदासरे॥ ३  
तीरथवासीचाल्पावारको॥ मनकरे  
विचाररे॥ एचरित्रधरततणु॥ एणोधन  
हरुनिरधाररे॥ ४॥ सामलसाथईहारे  
पधाश॥ ऊंडीसकारिसाहाराजरे॥ भग  
तवउलभगवानजीये॥ राषिसेहेताना॥ ४१ ॥



लाजरे॥५॥वली मां हामे रु ए ह पुत्री  
नुकीधु॥कुअर बाई जे हनु नांमरे॥त्रणप  
सहस्र नागर दोले मत्या जुनोगठ ज्यो  
हांगा मरे॥६॥लक्ष्मी नारायणो लक्ष्मण  
नागरस भामो साररे॥७॥बहरि सव  
सोनैये॥हरिषियो सव परिवाररे॥८॥धरं त  
लोक पाषंड जो वाम त्या त्यां हा अने करे  
अंत्रक्षर हि बे मा हामे रु ए पर ब्रह्म  
मी विवेकरे॥९॥वली वेहे वाई ए घणु व  
गो ओ॥१०॥उषमे दे लुनी ररे॥हरि नाजन



नर. हा. १४

॥ ४२ ॥

सीतलदा तेदा तेनहि शरिररे ॥ ८ ॥  
त्पांहांतालमशावीनरसैये ॥ आत्वाप्पो  
मेघमल्हाररे ॥ चैत्रशुद्धदादशीयेमेघ  
आवीयोतेणीवाररे ॥ १० ॥ एहेवाएवैक्षव  
कैहियेसरा ॥ सांभलोरायजीवातरे ॥  
मूरखमंत्रिजीमडो ॥ तेहेवासरवसीपात  
रे ॥ ११ ॥ तमोकडुमारुंकरो ॥ करोनरसै  
यानेप्रणामरे ॥ श्रीधरपंडितओचरे ॥ राय  
जीसरेतमारुंकामरे ॥ १२ ॥ कीर्तन ॥ ५२ ॥  
रागदेवगंधार ॥ ॥ वलीश्रीधरपंडित ॥

॥ ४२ ॥



कं हे सांभलराये॥ माहारित्री तक्क  
था कं रुमाहिमाया॥ १॥ ज्यारे बात्त अवं  
स्तामाहारिहती॥ त्पारे मुन्हे ब्रस हत्पा  
लागी अण लुती॥ २॥ वल्लता अमो मोटा  
थया॥ काशी नगं रमां भण चागया॥ ३॥  
वेदधनी मुरवे ओचरे॥ त्पारे ब्रस हत्पां पा  
कारजकरे॥ ४॥ ऊं अष्टा दश जाणु पुराण  
असत्पऊं नहि बोलुं निरवाण॥ ५॥ पं  
चास कोदनी प्रदक्षणा करी॥ से अंष्टा  
गजोष्टी आं राध्या हरि॥ ६॥ मे माहारुद्र



नर. हार

॥ ४३ ॥

कंगोकीसीस॥ मेअतीरुद्रकरचोवि  
स॥ आतोहे ब्रह्महत्यामाहारीनव्यटव  
क्षणक्षणदेहडीमाहारिवले॥ पशत  
जगनअजामेधजकरी॥ मेअएमाहार  
नआप्पामनधरी॥ १॥ चौएविद्यारूपा  
वेषणो॥ मेदेहदमनकीधोअतिघणो  
१॥ तोहे ब्रह्महत्यामाहारिनव्यटव॥  
क्षणक्षणदेहडीमाहारिवले॥ १॥ एक  
वारजुनागढमोसार॥ रूअरधनीशा  
येआवोमेहेतानेदार॥ १२॥ मेमनसावा

॥ ४३ ॥



कर्मणा करी॥ नरसैया नीक थपेव  
पोधरी॥ ७३॥ मेये धन्य वैल दयाणी॥

चरी॥ माहारी ब्रह्महत्या तत क्षण उत्तरी

२४॥ कीर्तन॥ ६०॥ राग असावरी॥ पंडि

तनी कथा सांभली ने राग्ये विश्वास मन

पगत जनना साक्षी सदा॥ समरथ जुग

जीवन्तरे॥ टेक॥ मेमा तुं वचन मां तु न हू

न बलाये करि बरूपे ररे॥ साथ सहम

लो जु वडो॥ श्रीम विरे उं पजा बुधी रे॥



नर. हा. १६

॥४४॥

सेनाक वार वामो कलारायजी ॥ अमा  
रेनथी कांर कामरे ॥ प्रलंब प्रधानने  
करुं रायजी ये ॥ नां लेशो एहनु नामरे  
रीस करिने राय ओचरा ॥ जायो आपणे  
सरु घेररे ॥ अमोसंवाद साने कसं वैल  
वसाथे वेररे ॥ ३ ॥ सेवक कहै परधानने  
तमने राय करे छेरी सरे ॥ मेहे ताजीने  
घेरमो कलो ॥ नहिकर कोप करशे ज  
गदाशारे ॥ ४ ॥ सीपात सन्यासि सरुमलया  
शोविचार बोधमरे ॥ सरवमलीने मोरु

४४



लामुकुंदत्यांहां आं प्रमरे ॥ कीर्तन ॥

॥ ६१ ॥ राग देवगांधार ॥ रजन सिध

ली वहिगइ ॥ एहनो दामोदर तो आव्यो

नहि ॥ मंडली के नागर उपर करि दया ॥

अमो संन्यासी सुं अमंथार ह्या ॥ पतु वैल

वनु उपर करे श ॥ संसार सागर तेणे क

यो धरेश ॥ १ ॥ षट दरशानना धरम वहि

गया ॥ येवडां वैल वसा वाथया ॥ २ ॥

मुन्हें आवडे अष्टादश पुराण ॥ असत्य

नहि बोले निवांणि ॥ ३ ॥ मुन्हें आवडे



नर हू ७

॥४५॥

रे वेद ॥ सा लधरग नो जाणु भेद ॥ ५ ॥

साढात्रणकोडमेकी धांवत ॥ माहाह

रुदे छे परमपवित्र ॥ ६ ॥ साढात्रणकोड

ती रघ आब्योफुरी ॥ मुन्हे सिख वाचा आ

पी छे हरि ॥ ७ ॥ तुन्हे अमो कहूं मंडलीक

राज ॥ आज अमारि जाय छे लाज ॥ मां

गेषोगलदामो दरराय ॥ नरसैयानेक

रेहारपसाय ॥ ८ ॥ जोदामो दरकडुन

करे ॥ तोनरसैयो मालाकं वनांधरे ॥ ९ ॥

अमारु कहूं नहि करे नरेश ॥ तोतुन्हे

॥४५॥



बाली भस्म करे ॥ ११ ॥ व. लीना ॥ ६३ ॥

॥ राग मेवा डो ॥ राजा को पड़े रहा वे मु ने नही

काई दोसरे ॥ ग्या न मु का बो रे मे हे ता जी ने

मंडली के धरो मन रो सुरे ॥ टेक ॥ म द ग ल

हस्त ॥ म गा बी यो रे ॥ कांई मुं का ब्यां वा ज्ज

चरे ॥ वे डी मा ग्य पे हे रा बी ये रे ॥ या का च

रण करि बरू नृ त्प रे ॥ १४ ॥ मन भंग थर

रे सर वे मां न नी रे ॥ जे कर ति रू ती गां न

सोर व स रू ए जी वा मं लु रे ॥ लज्ज

षे प्र ॥ १५ ॥ रा वा न रे ॥ १६ ॥ मे हे ता जी ये पु न



नर. हार.

३३४६

ते ~~न~~ ~~वै~~ विपरित वेला जो रे॥ कु अ  
र बार रे सास रे पधार जो॥ माहारे आवे  
ळा एम हो रे॥ ३॥ ~~की~~ ~~ति~~॥ ६३॥ सास  
री ये पधार रे माहा रि कु यरी॥ सास रे प  
धार जो॥ विपरित वेद न जे आपणो ते  
सर वे विसार जो रे॥ टेक॥ छे पी हरत मा  
रु हुं कडुरे॥ छे गो कुल मां हे परि वार रे  
फर शो रु दया फाट ते रे॥ न थी को ये जां  
न न लो हो नार रे॥ ४॥ माहारे निधः न प  
डत का पडो रे॥ त मो को ई न पां म्यां सु

३३४६



रवरो॥ नगोरनात्यनांगरतंप॥ रा॥  
वांमदिधां दुषरे॥ २॥ तमोरमनां कीजेर  
माहारतातजी राषोनायजी सुनेहरे  
सारघणी की धी छे सामखेरे॥ आजक  
मदेशो छबी लो छे हरे॥ ३॥ जेणे माहाम  
रं मुजने करू॥ राषि दुष्ट सफामां लां ज  
रे॥ रुंडी नेसकारिरे॥ एणे सामखे॥ तेहा  
र आपशो माहारां जरे॥ ४॥ सासरे जईने  
रं मुंकरू॥ ज्यारे रुठां रंगपांणी रे  
ज्यारे मंडांली कलमने मारसोरे॥ त्या



नर हा १३

॥ ४७ ॥

निम्बडा। ज्ञा प्राणारे ॥ ५ ॥ कीर्त्तनि ॥ ६॥

आधाररु तोरे हरि मुन्दे ताहारोरे ॥ अ

मो अवलाडु बलनारी रो ॥ प्रीत डी नि

रुती रे पेला भक्तणी ॥ ते क्यम मेहे लांसा

र विझारी रे ॥ टेक ॥ पटकुल पुपदी नांत मो

परियां रे ॥ राषि दुष्ट सभामां लाज रे ॥ इ

न जाणी ने रे प्रभु जी ह्या करे ॥ महेता जी

न मुका वो माहाराज रे ॥ ५ ॥ ग्राह्य क

गज मुका वीयो रे ॥ वाहारे धाया ॥ ७ ॥

चर चरण रे ॥ दासनां ही हल रे सही न

॥ ४७ ॥



ॐ संकोरे॥ तमो श्रुं सुता सा मल्लवरे  
२॥ सोरठ स हूये हसा वायुरे हार न घणा  
लगाडी वाररे॥ अमो हल वाप डां शु हरे  
भारो॥ बारु नां का धुनं द कुमारो॥ ३॥ गुण  
डा संभारी मेरे रंही न व स कुरे॥ ये क ल डा  
शुं कर शोरंगा विलासरे॥ दीन जाणा नेरे  
प्रभु जी दया करो॥ प्ररो अमो अव लाहे  
रि आसरे॥ ४॥ विनति अमारि रे शे न व  
सा मलो॥ तमो वर द पा ल क भंग वा न  
३॥ कर जी शिने करे विनती मान वाई



नर. हार  
॥४८॥

लेमानर **किर्तनि॥६५॥** दामोदर ताहा  
रीरें मेहे ताजा पुष्पायेरो जनम जन मनो  
दास तमारो तमके कीधी घणी घणी सा  
देरो टेक नर सैयाने मंडली कर जामार  
सैरे तमो प्रोढा राधा जीने घेररो गोपीयो  
शुरेरंगेर मोरे ताहारा सेवक नीसी पेखे  
प्रोड डीना बांधारे प्रभु जी प्रधारंजो आ  
वी आपणारमी येरंग विल्लासरो मोगरुती  
माला रोलेता आवज्यो पुरो अमोख बि  
कैकरो आसरो ॥ ब्रह्मांड फटकी नेत

॥४८॥



मो भुलापडा ॥ पाम्यांगो कुलमां मरे ॥  
 नरसेया साथे रेले र्ह्या रु सणु ॥ एमन ही  
 सरे सामली या कां मरे ॥ ३ ॥ बंधावन मां रे  
 लाडलडाचीयां ॥ ते क्युम विसारां आज  
 रे ॥ रुठडा अमो रे ॥ दोहले परां ॥ एमन ही  
 सरे सामली या काज रे ॥ ४ ॥ दी नजांणी  
 ने रे प्रभु जी ॥ दया करो ॥ नरसे ये मुकुले  
 मां न रे ॥ एछे रतन बाईनी विनती रे ॥  
 सामली या ने करे छे सो मरे ॥ ५ ॥ कीत  
 न ॥ ६ ॥ राग मारु ॥ सामली या सिने



Missing Page



दमेरे॥३॥ कांहां न ब्रार करे छेसा भव  
हाद्याजी विनतीरे॥ नर सैये सुमुकु  
छेमांन अवर एहने कोयेन थीरे॥४॥  
कीर्त्तन॥६७॥ सरितुं केहे तीजे कांहां  
न॥ पेत्तोपी ठार मोरे॥ एह वो सुंदर  
बुरखु जाणा॥ नहिनर नार मोरे॥ टंक  
बांधो सामंदी याशुस नेह॥ प्रीत ज  
चातकीरे॥ सुंडा लोक डाबोले छेआ  
ले॥ खरी जनपावकीरे॥ हरिगुण गा  
तां लीज॥ गे तो लाग जोरे॥ कपूर खा



नर.श. ॥  
॥५०॥

तो दात भागे तो भाग जोरे ॥ २ ॥ सुव  
र्ण पेहेर तांकां न चूटे तो चूट जोरे ॥ पु  
न्य कर तांभंडार पुटे तो पुट जोरे ॥ ३ ॥  
झड़ मुकी कोण बल गे डाल ॥ काल स  
सक समरे ॥ कुअर बाई कहे मानो वि  
श्वास हरि नहि मुके कप मेरे ॥ ४ ॥ कीर्तन  
॥ ६८ ॥ ॥ राग सामेरी ॥ मर हारा जीवन  
जाद्वारे ॥ बाहालामाहारी विनत डी  
अविधारे ॥ विनी ताते जे नत न्हे विनि  
वे आवडी सी बडी वार ॥ टेक ॥ अडुर ॥

॥५०॥



जनदेवतां आपो मे हे तज्जी न हारि  
वरंदतमा रूपालजो तमो सेवक जन  
आधार १॥ तज्जा ते तमने द्यागत्रो स्वां  
सगतवल्लुल जगत्वां नरि नाथरं सा  
करोतमो सामन्तां अम्भोरां कने सा  
हाय २॥ तमो गुण सागर गोविंद जी क  
री गोकुल नी प्रतिपादनरे ॥ अनाथ न  
तमो नाथ काहावो ॥ अमो दिन ना रय  
ल ३॥ वरुदां न वजो गे वहि गंधां तमो



नर. हा. २५  
॥ ५२ ॥

का हूना पंम्पा गमरे ॥ अमोवी ना  
स्पणुरही नहि सकी ॥ माहारी से जसु  
ष विसरांम ॥ ४॥ लंपटने लज्जानथी  
दुन्दे कोण के हे शो माहाराजरे ॥ प्रीत भ  
ली पान बाईनी अवसर मोटो छे आ  
ज ॥ ५॥ कीर्तन ॥ ६२ ॥ ॥ राग मारु ॥ ४  
श्रीजी माहारि दिनति ॥ संभलो जी सा  
रंग प्राण ॥ संकष्ट छे तो कहिये घण ए  
म खोले सुरसे नावांण ॥ टेक ॥ दास तमा

॥ ५२ ॥



रं दोहलारे॥ तमो क्यमसे हेरा॥ माहि  
राज॥ आज विलंबना की जे विलंब  
गई सरव कोनी लाज॥ १॥ अमो ह्युवां  
पडां दामोहरा॥ हावे वा हारा गुण कोण  
गाय॥ आज वर रनों पाली सुहरा॥ तो  
अमो क्यमजी वाय॥ २॥ सज्ज सेनाया  
ओसां मला फोगल फांगोनी अज  
हार आपो तमारा दासने जाये मंडला  
कनी लाज॥ ३॥ अमो दीना तमो येक  
ला॥ मां क्यम करवागे विलास॥ अर सप



हार नृज

॥५२॥

रस छै का हां न जी ॥ अमने तमारी आस

४ ॥ तुं झल हल तो रे सुंदर वर ॥ अमो छुं ता

हं ही नार ॥ नाह विना नारि क्य म जी वे

त मो करो नी मन्त्र विचार ॥ ५ ॥ स्वामी जी

से न घी जांण ता मन घी उतारो नी री

स ॥ अपराध अमारा क्षमा करो नां मे सु

खे ना सी स ॥ ६ ॥ अमो अब लात मन ने न

सु ॥ अमने करो निष साये ॥ आज नर से

याने उगरी ल्यो ॥ त्पारे हसा वै कुं वना थ

७ ॥ सुर से नानी विनती सां ज लावे ॥ श्री

॥५३॥



१३  
दामोदरराये॥ आसनथी हरि उठी या  
करो दासने पसाये॥ ८॥ कीर्तने॥ ७०॥

॥ राग सामेरी ॥ सुरसे नानी विनतिजं  
पीरे॥ आसनथी आव्या सारंग पां  
रे॥ टेक॥ संछह बं तो अत्तज आव्यो रे  
सारिये हरष धरि ने वधाव्यो रे॥ १॥ स  
घली वारि आनो बिडु आपी रोरी सैम  
रसे सय लापा पीरे॥ २॥ नव जां पो नर  
सैयो मंड प मो जारो॥ मंड प मो आवे  
लाय वमो रारसे॥ ३॥ श्री सुरव बो न्या श्री



नर. हार.

॥५३॥

जुगदीसरी॥ नामी रखा सरव सरवि  
यां ने सी सरे॥ ४॥ तमारी स्तुत सहिन  
व्यजायरे॥ नमो सरव सरवियो ने पा  
यरे॥ ५॥ सरव सरवियो ने आलिच नरे  
दीन वचन बोल्या जग जी वन्दरे॥ ६॥  
सरवियो ने कंठे आरोप्या हाररे॥ नैई  
पे लुछे नी सरण नी धाररे॥ ७॥ तमो सा  
ने करो छोटिला परे॥ मे सरपुत मने  
आपरे॥ ८॥ तमो मुहे गो व कंन्या था  
वाहरली रे॥ तमारे काजे आव्ये रुचा

॥५३॥



ह्यीरे॥९॥ तमो मुने वेचो तो न चो॥ उर  
काचे तां तणे कां धमो जा उर॥१०॥ ब्रह्मा  
दी कने वसन वथा उरे॥ जगन कोट  
करे त्यां हां नवां जा उरे॥११॥ ऊं तो जन्म  
मले सुखिया उरे॥ संध्या वांधे त्यां हां  
त्रय जा उरे॥१२॥ जे हने फण वात ए  
अफा मां नरे॥ त्यां हां न वजा उं कहे फ  
गवां नरे॥१३॥ शिवसन कादिक धरे ध्या  
नरे॥ ते तो नहि हरि जन्म स मां नरे॥१४॥  
एतो सत्य वचन रूपां धुरे॥ हूत हिन जा



नरः

॥५४॥

अनमीशपुरे ॥५॥ तमोमागो ते हूँ

आपुरे ॥ जननु वचन कथमेनां उधापु

रे ॥ ७४ ॥ तमनेक ऊ विस्तारिने वातरे ॥

मेहेते माहारु सुषहरू विख्यातरे ॥ ७५ ॥

मेहेलाजीने की होजे केदारोगायरे ॥

केदारोगाया विना हार कथम अग्रायरे

॥ ७६ ॥ हूँ तो जई बेसु आसनरे ॥ तमोमाने

मुज वचनरे ॥ ७७ ॥ आसन आव्यादामे

दररायेरो ॥ सरवसारविओने हरषनां मा

यरे ॥ ७८ ॥ कीर्तन ॥ ७९ ॥ रंगसामेरी धन्यासी ॥ ॥५४॥



सरवसरिवियो ते आनंद जपं मी ॥ त  
रेरी सासा रंग पांणी जी ॥ हसी हसी  
ने श्री मुख बोल्या ॥ धन्य धन्य वै सवनी  
वांणी जी ॥ १ ॥ सरिवियारे बांणी आंच  
रिरे एणी चरे ॥ सांभलां महाराज जी  
दामी दर रायने घणुवां हा लाहो ॥ ते म  
नो अमारि वात जी ॥ २ ॥ गिरिवरधारि ने  
कुंज विहारिं ते साथे छे हो ड जी ॥ दामो  
दर राय शुं प्रित बंधांणी ॥ ते राग के दा  
रानी जो ड जी ॥ ३ ॥ मेहे तां जी मन शिर क



हारः

॥५५॥

रिराषेन हि मुके नाथ तमारोजी ॥

श्रीदामादररग्यनेघणु बाहालाछो  
तेगायो निराग केदारोजी ॥४॥ मेहे ताजी

कहे पुत्रिमाहारि देवा लुआ केहे वाइ

येजी सागरु पैये घरेणो मुक्यो छे कोहे

नो केदारोगाई येजी ॥५॥ धरणी धरमेहे

तानेमें दिराषत लखिने आप्पुजी ॥ व्या

जसहित धनपोहोता विना गाउं तोजी

काका पुजी ॥६॥ अटक संभली मेहे ता

जीनी समरथ सारंगपंणीजी ॥ केह ॥५५॥



रोमुकावानेचाट्यां भक्तवच्छलमेहे  
जीनुरूप भक्तस्वरूपे प्रीतपरवनीज  
पतिजी ७ ॥ कीर्तन ॥ ७२ ॥ रागकाहरे

केदारोमुकावानेचाट्यां भक्तवच्छल  
भक्तस्वरूप ॥ धरणी धरनागरनेघर  
खेईचाट्यामेहेताजीनुरूप ॥ टेक ॥ धन  
आपीषतमांगीलीधुमेहेताजीनोम  
हिमावाधोरेबहु ॥ धरणी धरनागरनेघर  
अपंगलुलहीरुतीरेबहु ॥ तेहनेगेहे  
लंडीकहिनेरुकोबोलावे ॥ तेहनेम



नर ह

॥५६॥

द्विरपधारा श्री भगवान् जी ॥ मुस्तक हा  
थ मुकाने उठाडी तेह नुरूप की धुलष  
मी समान जी ॥ १ ॥ येक पंथ बे काज करं  
तां हरि आव्यानु ॥ नाग ठ मांहे ॥ मेहेत  
जी नखी लेंषंत नासु ॥ अं न्री क्षरहि वैरु  
वरंग्ये ॥ ४ ॥ तेश्री पातां सर्व कोणे दिव  
मंडली कपा से माग्यु मान ॥ नर सै योई  
श्वर नो सेवक ॥ कखु करे हवी लारा जा  
न ॥ ४ ॥ अन्यो अन्य सह वात करे छे ॥  
हरि एष त आप्पु दामा रण ॥ नर सै या

॥५६॥



नागरनेघेरमोकलो॥ नाहितर आपणा  
महिमा जाये ॥ ५ ॥ तो लाजायी तत क्षण  
आव्या ॥ कहे धरणी धर सांभ जो राये  
हरिना जन हरि सरषा जाणो मेहे तो  
मीने लागो रे पाये ॥ ६ ॥ कीर्तनि ॥ ३३ ॥  
कारकां पोद्धा कमला पत ॥ रामानंद प्र  
त्ये कहि विनति ॥ १ ॥ तमो जु नागढ मध्ये वे  
गे जाया ॥ नर संहाना गरने करो पसाये  
२ ॥ आचारामानंद सज्जामो शार ॥ एह वे  
सभाये धरणी धर के हे छे विचार ॥ ३ ॥



हार. नर.

॥५॥

हेतानेरूपे आत्मा श्री भगवान् ॥ माहा  
रि अपंग वहू की धि लखमी समान ॥ ४ ॥  
गरथ आपिषतली धु हरि ॥ अहेवी धर  
चा धरे वाणी ओ चरि ॥ ५ ॥ तेसी पातसां  
मत्तो हलगी रथया ॥ मंडली कराय वि  
चारि रत्ना ॥ ६ ॥ अन्यो अन्य वारता एम ओ  
चरे ॥ वैष्णव साथे द्वेष ज कोण करे ॥ ७ ॥  
दक्षणा वंत गंगा दक भरो ॥ नर सैयो  
नागर वैष्णव परो ॥ ८ ॥ गाछेर तन गलाणु  
रथि ॥ रतन जडेने जी वेगाय ॥ ९ ॥ येव डी

॥५॥



प्रीतदामोदरकरे॥ फांगी भोगद्वहार  
कंठधरे॥ १५॥ तेमाटेसेहेतानेमौकलोच  
र॥ आपपाब्राह्मपासाथेनांकीजेवे॥  
॥ कीर्त्तन॥ ३४॥ ॥ रागसामेरी॥ ॥ स  
मायेसभापतिओचरे॥ नरसेवा नाग  
स्तुतुंअविधररे॥ लंपटपंणुछाडिदेतो  
हरिहेलांआपेहाररे॥ १६॥ जायोनागरअ  
मोजुगतिजाण॥ एमउचराश्रीपातर  
सीमवांणीओचरे॥ अमोजाणोताहार  
नायर॥ ३॥ मेदिताजीनेमद्वचकहेछ



नर हा

॥ ५६ ॥

अमोजोर सघली पेररे ॥ तम्पो बालण  
ने अमो क्षत्री सांने की जे वेररे ॥ ३ ॥ मंड  
ली क के हे छे नर सै याने ॥ हा वे जा यो तमा  
रे घेररे ॥ तप वारां रामानंद ओ चरा ॥ तम्पो  
जौ जौ संसार नी पेररे ॥ ४ ॥ चत आपुं दाम  
इरें त्पारे स हू थया साव धां नरे ॥ सर ह  
मली ने प्री छु वो तम्पो द्यो से हे ता जी ने  
मानरे ॥ ५ ॥ नर सै यो हार मगा वजो मान जो  
अमारी वातरे ॥ रुं दार कं थि आवियो  
रामानंद श्री पातरे ॥ ६ ॥ की र्तिना ॥ ७५ ॥ राग ॥ ५८ ॥







नर. हा

॥ ५९ ॥

कअलगाथरह्या॥ वैष्णवनाधरम्  
सावायया॥ १॥ जगंतभगतनेआदेवे  
र॥ तेमेहेताजीनुचितघेर॥ ७॥ जोप्रल्हो  
दजीनेकोप्पोतात॥ विष्णीषणनेदिधी  
विरहस्त॥ ८॥ अंबरीषउपरडुवासाव  
पियो॥ पुववैस्वतोवनमांगयो॥ ९॥  
प्रवणसाथेअबलाअडवडी॥ भरथ  
वैष्णवनेमातानडी॥ १०॥ सुधनवाउपर  
मेहेलुंबाण॥ कोप्पोकरणनेकोरवअ  
जाण॥ ११॥ फांचलीनांघरुणग्रहां

५९॥



ऐहवांरामानंदेवायककह्यो॥१३॥तेमा  
टेमेहेताजाहंतुजनेकहं॥संसारचरि  
त्रहंसघलांतलुं॥१४॥जोहारलीधावि  
नाजाशोघेर॥तोवैस्सदजननीकोण  
धरेर॥१५॥झांगीझोगलनमंगावोहार॥  
जिभुदनवरसेजेजेकार॥१६॥नीजधरम  
नासाक्षीमाहाराज॥गंमगंमभगत  
नीराषित्ताज॥१७॥रहोवेगळाआपआ  
पणोगंम॥हावेडगमगसेआवेकांस॥१८॥  
ऐहवांरामानंदेवायकओकर॥त्यारे



नर. हारि

॥ ६० ॥

मेहे तो जी हरषे भरा ॥ १८ ॥ कीर्तनि ॥ ७५ ॥

॥ राग के दारो ॥ माहारो वाहा लो जी राग

मुकावी लाव्या ॥ षत वां चिनेषो पारारे

पेछे के दारो आलापिने गायो ॥ माहारे

सां मजी ये हं पुनां विसारोरे ॥ टेक ॥ म

धुरे स्वर के दारो गायो ॥ माहारो गो रिये

गमां पो आव्योरे ॥ रम के घुघरिने नृत्य

करो ॥ माहारो राग के दारो मुकाव्योरे ॥ १ ॥

प्रगट थायो फातली या सप्तामां मुज

ने आपो हारो ॥ आवो छे ल छ बी ला ॥ ६० ॥



सांइडिदीजे॥ आंनेलगाडोछोवाररे॥  
मलपतामंडपमांअंगवो॥ हरिमेंजाणो  
दिनदयालरो॥ सप्तासरवहेरवतां॥  
काहानुडा माहारेकेवआरोपोमाह  
रे॥ ३॥ एमकहिमुस्तकषतमुक्यु॥ सरव  
मखियोथरसावधानरो॥ जयजयका  
रंबोलीकहेनरसैयोसरवसुंदरि  
योकरोगांनरे॥ ४॥ किर्तन॥ ७॥ राग  
मेघमलहार॥ जीरेचोहोदिसाजोडंता  
हारीवांटड॥ माहागेसायनांआवे॥



भर-हार

॥ ६१ ॥

मंडली कषडगंकाढी रहो तुज विना  
कोण मुकावे ॥ टेक ॥ हवी लाजी हर  
मुकीये ॥ हार आपिए मुन्हें ॥ मागा पूरे  
माहारा नाथजी लज्जा लागो तुन्हें  
॥ तमोग जकारण गरु डबे डीयो ॥ अणु  
ओंण उंजाणो ॥ नरसैयाने हार आपवा  
आवडो सुरिसाणो ॥ २ ॥ वामन रूपे वं  
ली छलो ॥ धरा त्रिपद कीधी ॥ इंद्र इंद्रा  
सन उगारि खुशुब वलने दिधी ॥ ३ ॥ वा  
हा लाजी गोणा खुकीधु भलु गरथ

॥ ६१ ॥



गांठे नीहोतो॥ वेगेलखमी वर आवि  
या मुन्दे की धो समो तो॥ ४॥ तमो राधा  
सुरंगी रमो नर सै यो मुक्यों विसारी॥  
छबी लाजा निज कंठ थ्यी हार आषी  
उतारी॥ ५॥ नर सै खो विनंति विनवे॥ दा  
मो इर राय सुजाण॥ तमो हवे नथी  
बोखता मंडली क अजाण॥ ६॥ कीत  
न॥ ७॥ राग आसा वरि॥ देवा तुम क  
सा गकोर॥ हम क सा सेवका॥ करम  
चाखे पशु साणी नां जाय॥ मंडली क



नर हार

॥ ६२ ॥

हारनेपेरपेरपरभव॥ छुबिलावि  
नाडुः खकोहोनेकेहेवाय॥ टेक॥  
मुन्हेयेककहेलंपटीयेककहेलोपी  
यो॥ येककहेतालकुटीयोजषोटो  
सारकरमाहरी दीनजांणी हरि हार  
आपोस्वामी तुजमोटो॥ १॥ ऊरेवेइवा  
इये अतिरेविगोइयो॥ उल्लजलमु  
कीउपहासकीधु॥ मेघमोकलीग्र  
हतांणी नांषुतेहनु॥ आपुलाहासने  
मानदीधु॥ २॥ मुन्हेमाहादेवजीनीक

६२



प्राहं वि॥ तहि नो मेलषमी वरगायो  
माहामेहेरा बेलामाहारो महिमा जातो  
रूतो गरुड मुकी वाहारे तुं ज धायो॥७॥  
माहारे खेऊपासे सुंदरी कं वंवा होधरी  
कंसवाकी तन एम होयै॥ अन्वुदि अ.  
जानी लोक ते अंसत्प वीणी बदे पुन्य प्र  
साद ते प्रेम होयै॥८॥ हीरनी होरिये हार  
थी गुं यो छे॥ ते दामोदरामाहारे कं वधा  
हो॥ गां हां पुं वासे तपारे दासने मारसे  
आघोकर करि मुन्दे॥ हार जातो॥९॥



हारनरै

॥ ६३ ॥

मुन्दे सोरठ मां हें सरू को सा चीक हे ॥  
आवि प्रत्री ने माहामे रू तेज की धु ॥ ना  
गरि नात्प मां इं डु चढावी यु नर सै याने  
अप्पी मां नदी धु ॥ ६ ॥ कीर्तन ॥ ७८ ॥ भो  
गल भांगी ये राय दामोदर ॥ उचो जडु  
नाथ देवाधि देवा ॥ राय मंडली कमल भ  
र ओचरे ॥ नर सै याना गरनी सा चि सेवा  
टेक ॥ भगत पातक दयालु तुं सामला ॥  
माहारे परण पर ब्रह्म प्री तता हार ॥  
नागर साथे नवल ते हरष वी अकल

॥ ६३ ॥



चरी जतमी हरि मोरारी ॥ १ ॥ जो माहारे  
नर हरिनां मरु देव सु ॥ तो पति तपा  
वन ताहारु वर एका हावों ग्राह्य क  
गज मुकाव्यो चरं व डी ॥ तम नर सैया  
नागर ने मुकावो ॥ २ ॥ ॥ किर्तन ॥ ॥  
हे कृष्ण कृष्णानिध केशवा ॥ रू ज अ  
नाथ तुं नाथ क हिये ॥ मंडली कहा  
रने पेरे पेरे पर भवें ॥ छु बिला विना  
उः ख को हो ने ज क हिये ॥ ऐक ॥ रू



हारबा

॥ ६४ ॥

शरण आं व्योसं सारने परहरि ॥ तुकां  
प्रभुपिरेपेरेपीडे ॥ अंतरगाप अवि  
लोकतां सामला तुज विनाहृदया  
शुकोणभीडे ॥ ५ ॥ माहार मनमं  
हरषघणों छे ॥ तो प्रभु माहार दुष  
सेनां जाणों ॥ कणे नरसेयो प्ररण  
प्रीतता हारि ॥ मंडली कमुजने मार  
सेज बांहाणों ॥ ६ ॥ ॥ कित्तिन ॥ ७ ॥ ॥

॥ ६४ ॥



सारकस्यसारकस्यसारकस्यसा  
मला॥सनमुषयर्नेजीनीआज  
अमोनीगारजवारांहठकरिबोल  
शुनहिराषुत्रिकमातोरिल्लज॥टेक  
हट्यागोकुलंमांहेगलंकतोफरां  
काहानुंआनवनीतआहिरनांली  
जचोरी॥चंचलचोरसुमुषनथीबो  
लतोहवांअमोलजकाराषुजुतोरि॥



नरु हा

॥ ६५ ॥

हला बहू परे गोपिने ला डलडावी यां  
अन्न आहिरनां ले रे चाषी ॥ नटु आपे  
पोरंग भोगली ला करं ॥ ते नागर नर  
सें योर ह्यो जसां षी ॥ २ ॥ की तने ॥ ७२ ॥  
मोगरे शुंमी हिर ह्यां छो साम ला ॥ दार  
आपो जसर व्यात वाधे ॥ के हे शो नागरो  
को होनु नामगा तो रुंतो ॥ हे कृष्ण जी  
तु जने को ये नहि आराधे ॥ देक ॥ हला  
सारिपतिनां लोक सर वेम ल्या जेह ॥ ६५ ॥



नी सारकरशी तेहनी पासयाशो॥  
प्रीतने भावे नरसैथो बिहितो नथा  
हेक स्मज्जी॥ ताहारो जस जगदीश  
जाशो॥ १॥ रजनी सरव वहि गरु लज्जा  
नहिराषु॥ ज्योतक्षी णयई जायरेदी  
वा॥ केशवा कें वथी माला बडी क  
रो॥ आरोंपो नरसैयानी जग्रीवा॥ २॥  
फित्तिन॥ ७३॥ हलाहारने का जेशु हव  
करां सामना॥ जात्रवाने तोरि पास आ



हारनर

॥ ६६ ॥

व्यो राधिकाने संग बैंगरे वा तो करी  
की हारे वैकुंठ थी तुं जला व्यो टेक ता  
हारनांम विश्वं पर धरु ते वगंसी यो  
तुं नंदनो छो करो छा सपी तो ॥ कांम द  
ओढ तो लांक डी हाथ मांगा वडी चार  
तो वन्नरे हे तो ॥ मा हारे मात तुं तात तुं  
भ्रात तुं सुधरा तुं ज बिना ए दुष को हो न  
ज कहिए ॥ भणे नर सै यो ता हारा गुण गा  
जी विये एक लां भातल मां क्य मर रहिए ॥

कीर्तना

॥ ६६ ॥



॥ हल्लाहार नैका जे शु वि लं व वामां  
गणो नहिरे कंस तेमा मन विहुं मने  
नहिरे कौंस्त भमणी विद्रुम माला ॥ उ  
नला पुष्प ने सूत्र नीतां तणो तेणो शुभ  
हिर खो छे नंद ना जं काला ॥ टेक ॥ हला  
उंचने मुकी कोईनी चने आंसरे ॥ जोनी  
तुं जाइवा मन विमांसी ॥ राजानी दिक्क  
रिक्त कमणी पर हरि ॥ कंस नी कु बडी  
घेर वासी ॥ १ ॥ हल्ला रुजनी सरव अक्षय



नर ही

॥ ६७ ॥

रही लज्जान हिराषु ॥ जात त क्षण खर

जायरे दिवा ॥ केशवा कंठ्यी माला बडी

करो आरोपो नर सैयानी जय्री वा ॥ २ ॥

॥ कीर्तनि ॥ ८५ ॥ ॥ हल्या आप्परे हार

सुदेव सुत नंदना ॥ आप्परे आप्प तुन्हे

लाज थोडी ॥ कंसना भय थकी नासा

गोकुळ गयो ॥ रहोरै आहिर डांश्चु प्रीत

जोडी ॥ टेक ॥ हला गरज माटे माय बाप

ते बेक स्या ॥ ते सुर असुर सुनि सर्व जोत ॥ ६८ ॥



कंसनोदयकरी काजंता हा रुस सं ॥ व्र  
जवापदां मेहे लावन शेतां ॥ १ ॥ भगत क  
रि आहिर नानां हवो ॥ तो मुन्हे हार तुं क्य  
म आप्यां ॥ मणो नर सै यो रजनी घोडी  
रहि आप्य आप्य तस्कर मुन्हे कां संतापा  
॥ २ ॥ कीर्तन ॥ ८६ ॥ ॥ हल्या उक्परै सोम  
लां मेहे ल्यमन आमला नथी बोलतो  
मुं अफी मांन माटे ॥ आपिए हार के प्रग  
ट हव डां करूं ॥ जे काम की धुवंशी बरघा  
टे ॥ टेक ॥ हल्या अण्डरिनां रूप ते भोगव



नरः सा

॥ ६५ ॥

मुधरा ॥ परणताग्रथनी वें जे जता हरे  
हारनी वारथी नारभागी गयो ॥ शु कहि  
येनाथजी वारे वारे ॥ कली जुगमां हे  
प्रतीत गइ लोकनी वैभवनी वेला कोण  
थासे ॥ मणे नरसै यो हू जहल वो पड़्यो  
ताहारो जस हावे कोण गासे ॥ १ ॥ कीर्तन  
॥ ७ ॥ ॥ केरो कीर हिरगधि कारंग जामो  
घणो ॥ रसी लारा तरही जथो डी ॥ नंदना  
नंदतुं सांने आलस करु ॥ मुजना गरसा  
ये कांप्री ततो डी ॥ देव ॥ देव कपालीयो ॥ ६ ॥



निकाम मजा ली ये ईश्वर पद पांमी यो  
उमया जत स्वांमी सामना तु जनै लो  
कलं पट कहै थयो विभी वारि कां हान  
इकांमी ॥ हव करं ते हयुं हव करे सांम  
का ॥ वुटो सनेह त्रिक मंतोणे ॥ पणो न  
रसे यो अवधं सर्व वं हिं गरि मंडली क  
मुजने मां रसे जं वां हांणे ॥ ॥ कीर्तन ॥ ॥  
हल्मा उठरे अटपटा ॥ नथी बो लतो चर  
पंटा ॥ लंपटा लाज ताहारी सर्व जाशे ॥  
व्रज पति रंग मां कैली घटां कर ॥ त्यां हां



नर हार  
॥ ६२ ॥

नरसैया विना बाहारे कोण धाशे ॥ ६१ ॥  
का ॥ हंला उगृतुं ह ड बडी ॥ सु बे गो ह ड ब  
डी ॥ वात घाटी पडि मुज साथी ॥ धी कटा  
बरद का हावु ते फो कटा ॥ निगमी लाज  
ते तुज हाथे ॥ १ ॥ हंला जो वडु सगमगे अं ॥  
ग अमर फगे ॥ ट गमगे नेत्र जो वाने रूप ॥  
नरसैयो लगमगे लोक सर्व च गमगे ॥ को  
प्यो मंडली क डुष्ट भूप ॥ २ ॥ कीर्तनि ॥ ६२ ॥  
हंला नव बोलों सांमला ॥ आवडा सां आ  
मला ॥ मांमलाम न्न ते क्यं मराप्या ॥ कोट

६२



ब्रह्मांडपतिव हेतुजबऊब्रह्मा आ  
ज अमोहायथा क्यमनांष्यां ॥ टेक ॥  
हलागज उगारियो गिरिते तारियो वा  
रियो रावण लंक रूप ॥ हवा रंक तुहा  
रियो के कोणो वा रियो ॥ के नारियो मोहि  
रह्या निजरूप ॥ ॥ हला मुकुरे मर के डा  
का फो के टशां फरडका ॥ हरषे अंग सु  
के जवाहाला ॥ नर सैया विना कोण  
प्री छवे सां मला ॥ नगरे नाथ ये नंद  
नाज का ला ॥ २ ॥ कीर्तन ॥ ८० ॥ परषरे



हरनर

॥७०॥

काहांनुया॥ ताहासुमनफसमेजुजुया  
जाणोनागरोकांईदांनआपो॥ लषमीव  
रलालचकरांसदा॥ सुजरांवनेतस्कर  
कांसंतापो॥ टेका॥ हत्नातांडुललेइरीच  
विप्रनेवोकली॥ तेहनुफोवनकीधुवे  
कुंठसरषु॥ माहारेदांनतेग्यांनछेफुद  
रा॥ नातपतताहारांवरणनीरषु॥ १॥  
हलामन्नमोडुकरां॥ कंठमालाधरां॥ ह  
रषिहेलांमंडपआवो॥ फणोनरसैयो  
रजनीसरववहिगईडुएबंधनशीमु

॥७०॥



नहेरुकावो॥२॥**वी तन॥ २१॥ राग देवगं**  
**धार॥** विष्णु चारि सुंदरी तडी **प्रि रंगे**  
तुरातो **मंडली** कहारन प्रभवे **बोलेन**  
हितुं मरु रमातो **देक** **हटा** कामी घय  
रेके सवा **करुणा** नी धपाषी लोषी लप  
मी नाथ तुं **एतना** संतापी **॥ २॥** माहारे वा  
हारे चढो रेवी गटना **ताहा** रुबर रजांश  
मंडली कनर सैयाने मारुती तपारे तमो  
कय मरे हेवावो॥२॥ **को तन॥ २२॥ राग**  
**कादहरो॥** **॥** महारांडनी सुषंशी नाबोले ॥



हारनर

॥७॥

जो ज्यो जु गोय इभाथरे ॥ धुतारो धरणा  
धरजाण ज्यो ॥ अटक्यो नां मुके वातरे  
टेक ॥ गो कुल मां हे धयो रे गो बाली यो  
नवनी तनो चोररे ॥ फोली भगतनो आ  
धीन सरा ॥ येणो जु वां प्रासां बोररे ॥ १ ॥ पर  
आधीन घर पेट ज भर तो ॥ हने तुंगु जर  
नां धानरे ॥ नर सैया सा ये हारने काजे  
आवडुं अफी मां नरे ॥ की तनि ॥ २ ॥  
माहारे मंडली कंशुं पडी छे हो डरे ॥ मुन्हे ता  
हारां चरण जोवानां को डरे ॥ मुन्हे भव

॥७॥



च्या बंधन छोडरे॥ तमो जषमारसो ने  
मुन्हेहार आपशो॥ टेक॥ मुन्हेतमो वे  
चोतो वेचा उरे॥ काचेतांतणो बांध्यो जा  
उरे॥ हूं तो गुणगोविंदनागा उरे॥ तमी  
जषमारसो ने मुन्हेहार आपशो॥ १॥ तुं  
न्हें गुजर धनारि बांधती तांणी रे॥ ह्यारे  
हूं मुकावतो सारंगपांणी रे॥ मेतो प्रौठ  
मताहारि जांणी रे॥ २॥ दोक वरु या बो  
ले ले माहारं रे॥ दां कषसाहसं फे उघा  
डी श्रिताहारं रे॥ ३॥ हवेता हारं मनडां



नरहा

॥ ३५ ॥

हजु नथी हांरी ॥ तमो ० ॥ ३५ ॥ तु न्द्व  
बषभांन सुतार हि छे राषीरे ॥ तेमाहा  
समनमांरह्यो छुं सांषीरे ॥ ३६ ॥ मेतोकर  
णा ताहारी भांषीरे ॥ ३७ ॥ अमो नागरवर  
डक बोलाक हियेरे ॥ कह्यो कथनमां  
आंणी ये है रियेरे ॥ तुं विण शरण अमो  
को होने र हियेरे ॥ ३८ ॥ ताहारी नर सैंयो  
रो सैं भरायेरे ॥ मुज बिना जस ताहारी  
कोण गायेरे ॥ ३९ ॥ तुं तिना वाहारे माहारे  
कोण धायेरे ॥ ४० ॥ कीर्तनि ॥ ८४ ॥ राग प

॥ ७२ ॥



रमाति॥ भांगपभांगपभोगद्वसाम  
लडारेसाथी॥ गोहेलडांमुकोरेगोवा  
लारे॥ आदिरडांनेआवडोशुंअटक्यो  
मुन्हे॥ आंप्पमोगरानीमालारे॥ देक॥ ह  
वेनहिदेउंगादनरहरनाहनडीया॥  
बाहुडामेवद्ववतजाणारे॥ शिवविरं  
चित्ताहारोपारनांजाणों॥ तुन्हेवेदपुरां  
णेवषाणारे॥ १॥ शुक्कसनकादिकध्या  
नंधरेसहा॥ तेनंरुतण्मेपीडारे॥ ते  
लंपटकहिभेमेरेबोलवियो॥ तेप्रज



नरः हा

॥३॥

मवांक अमारोरे ॥ २ ॥ आदो आलिंघ  
नदिजेवाहाला सुंदर मुष ड निहालु  
रे ॥ मणो नर से योर जनी स्व व व हि गर  
य पुत्रै लोक मां अंजु आलुरे ॥ ३ ॥ कि त  
त ॥ ४ ॥ जागो जडु पतिर जनी वदि  
ग ॥ मंडली कमु जने बिहावेरे ॥ अरुण  
उदयो ने हरणो आथ मणी ॥ तो हे तु न्हे  
दयानां आवेरे ॥ टेक ॥ वलोणां वलो  
वाये ने वेद भणाय ॥ मां मनी यो भरे  
छे पां नीरे ॥ आवि सको नंदि सुरधीर

॥३॥



मां हारो॥ सके यशोदा जी ये बांध्यो तां  
पी रे॥ १॥ सच कंद कुंभ करणा बेहू ते  
जी त्या॥ तेह नी निद्रा तुज ने बांधी रे॥ ज  
दुपति दिन हूं कांई नव्य आणु ना हारो  
नर सैयो नागर अंपरा धी रे॥ २॥ संकोष  
त वांचतां अमो रेषो पारा॥ ते त मन ने च  
ढी छेरा सरै॥ आवो रे आलिंघन दी जे  
सां म द्वा डा त्पारे हसा श्री जुग दी सरै॥  
३॥ अमारै अंतर कवो रे भाग्य हूं तं जे



नरः दार

दासनो दासरो॥ आंगली मुषधरिनर

सेयो॥ वाहारे धा यो श्री अविनाशारे

४॥ कीर्त्तनि॥ ८६॥ ॥ राग वसंत ॥

कमाडक डोंक डक डी यो रे ग डग

डी यों मंडली का नां मंदिर रे॥ भोग ल

भागी नेता लां त्रुटा॥ पधार शां म सुं

हर रे॥ टेक॥ षट ह डी यों घंठ को सी सां

पडि पो ल्य पिंगार रे॥ नाग भुर स भा

यी सां व को ये थर रे॥ हो हा हा कार रे॥ १॥ ७४॥



आंसंनथी उवा अविनाशि॥ आवा  
मंडपमो साररे॥ सरवसप्तादेषतां  
आरोप्यो कंठमेहेताजीनेहाररे॥ २॥  
पीतांबरप्रीतेओढादु॥ आप्याकरण  
कुडळजोड्यरे॥ मुगुटमुस्तंकसमरथ  
नान्या॥ जेजेश्रीरणछोडरे॥ ३॥ मुरवेम  
रलीमधुरिवजाडे॥ दीनोनाथदया  
लरे॥ रंगीलो छेबिलो छोगालोगो  
वालो॥ तेंलेप्रमंरीकरतालरे॥ ४॥ जे



कारुण्य  
॥ ३५ ॥

यजयकार बोलै सख वसारविया ॥ ध  
न्यधंन्यगो कुलनारायरे ॥ नरसेया  
नेफरिफरिसेटे है डेहर दमांमायरे ॥  
॥ कीर्तन ॥ ९७ ॥ संन्यासिवेरागी वि  
स्मेषांम्या ॥ धरत्यों हाहाकाररे ॥ जेहनेजे  
देवो तेहने तेहवो ॥ व्यापिर खोगोपाख  
रे ॥ टेक ॥ नरसिंहाश्रमे नरसिंहरूपदि  
तु ॥ मुकुंद आश्रमे मुकुंदरे ॥ अचिंत्य आ  
श्रमे अचिंत्यरूपदितु ॥ माधव आश्रमे

॥ ९५ ॥



माधवरे॥१॥अबुतआश्रमेअबुत  
रूपदिवा॥विश्वंभररेविश्वंभररे॥विश्वं  
भरआश्रमेविश्वरूपदिवाकेशवआ  
श्रमेकेशवरे॥२॥रघुनाथआश्रमे  
रघुनाथरूपदिवा॥श्रीमेदिगारामरे  
राजानीमायेचतुर्भुजदिवा॥राणीये  
दिवासुंदररूपरे॥३॥श्रीपातपंडिते  
सुंदररूपदिवाश्रीधरदिगब्रह्मचा  
रिरे॥ब्रह्मभारणीयेब्रह्मरूपदीवा



हारन०

प्रसादहरियेंविपुलरीरे॥४॥प्रलंबवे  
प्रलयरूपदिगा मंडलीकेहीगेकाल  
रे॥सप्तायेदिगासुरशिरो॥सज्जन  
दिगाबालरे॥५॥ज्योगध्यानीयेज्योति  
रूपदिगा॥कुर्यारबाईयेदिगतातरे॥मे  
हेतेजीयेलटकालोहबीलोनिरष्यो  
श्रीगोकुलनोनाथरे॥६॥जेहनेजेहवो  
तेहनेतेहवोव्यापिरहोकसुणातरे॥  
मेहेतांजीनेकेवआरोहीलेइभोगरा

७६॥



नीमालरे॥७॥ रागरागंनुतांनवजाडे  
मुरलीमदनगोपालरे॥ जेजेकारंबो  
शोकहेन॥ सेयोहरिभगतंवहुल  
प्रतीपालरे॥८॥ किस्नि॥ ८८॥ राग  
आसावरि॥ श्रीदामोदरेकीधीइया॥  
नरसेयानागरनीराषीरंग॥ आपणा  
सेवकनेसुषकारणे॥ रायमंडलीककी  
धोमनभंग॥ टेक॥ कोइकिहेकांमीको  
इकिहेकपटीपणसेवकनेलमारीआ  
सरे॥ राषिलजसभामांसांचो॥ ८९॥



नर. हार

॥७॥

नसखलाकी धानिरासरे ॥१॥ कली  
जुगमांयेक प्रत्यक्ष दिव ॥ नरसै योज  
त्पो हो डरे ॥ आप्पां कुंड डूपां हां वली  
कां हां ने पितांबर आप्पु कट छो डरे  
॥२॥ येणो जार जात्य ने कोइ ने व्यजांणुं  
वेसावसाथे की धोवा दरे ॥ अंत्य जगत  
अंत्य ज नो जायो ॥ एम बाले प्रजा बरु  
धरि उल्हादरे ॥३॥ जय जय कार हयो  
सोरग मां हे हरष ॥ आप्पो हां रहरा ॥  
मंडली कंगये नी मां निगया नरंसे ॥७॥



या नगर नीरष्याकर ॥ ४ ॥ की त  
न ॥ ८९ ॥ ॥ ओ लगो निफलेनां  
जाये जेणे ओ लगो गो कुली यानो  
राये ॥ टेक ॥ ओ लगो ध्रुव प्रल्हाद वि  
सीषण अंबरीष बली हनुमान रे  
अंकर उरुवने सदा भो विदुर भगंत  
बर हान रे ॥ १ ॥ ओ लगो वेगे द्रुपद तन  
या चरणे अहिल्या तारी रे ॥ कुबजा  
नुवंदम मागाली धुएणे गो कुच्छरा  
पुगि रिधा रिं ॥ २ ॥ ओ लगो वेगे इंज



हारनर

ॐ

नी विनिता तारण तरण मोरारी रे ॥  
ओ लगो म्रित करि जे जन सुली ला  
कुं ज विहारि रे ॥ ३ ॥ भगवत लख सदा  
हरि दाता ॥ भगवत तणां बरद का हावे रे  
नर सैं या चा स्वां मी ने समर तां ॥ पुनरपि  
जन मनन आवे रे ॥ ४ ॥ किं त्रि ॥ २०० ॥  
राग परभाती ॥ जी रे धन्य तुं धन्य तुं ए  
म कहेश्री हरि ॥ नर सैं या तुं माहारो भ  
क साचो ॥ मेहेली पुरुषारथ सरविरे वे  
शैथंगो ॥ ता हारा प्रेम थ ॥ रं रे ना बो ॥ टक

॥ ७८ ॥



जी रे मुज मां तु ज मां भेदन हि नागर  
मान तुं माहारि वेद वाणी ॥ ह जु ये पर ती  
तनां उपजे तु जने मो क लुं मे तु न्हे टा ट  
पाणी ॥ ४ ॥ जी रे मा हा मे रु की धु ते क्य मग  
यो विस रि हार आ प्पो रे प्र त्य क्ष भ र्प ॥ वो  
द लो क मां मा हा रे तु ज स मां को न हि ता  
ह रु मां ह रु ये क रू प ॥ ५ ॥ ता ह रो आ सी रीं ह  
र गाय ने सां भ द्ने तं ह ना कु ल स हि त पा व  
न थां ये ॥ ६ ॥ न णो न र से यो मी चां बो दी सु री  
सं वो ॥ ७ ॥ त्पारे कर मो डी क स जी स सं पा ये ॥ ८ ॥



नर-हर  
॥७८॥

॥किर्त्तनि॥१०१॥ देवामेगागयो ब्रह्म ते प  
रम आनंदश्च कर्मचा जीवते मरम चो  
ले ॥ धर्म धुरंधरा तुज ने ज्ञां णे न हि रत न  
गुजा करे ॥ ये क तो ले ॥ टेक ॥ निगं मने अ  
गम सुगम हं वो गोपिने ॥ ते ह नो पार को ई  
न धर्म जां णो ॥ रमा पती ने रुचे रुचि त न ह  
काम ना ॥ सोमी ना भुरते भ्रम आं णो १  
पुरण ब्रह्म त्यां हां सदा ये आनंद छे आ  
न आनंद त्यां हां आन होये ॥ नर सैयो  
मंद क विगां य छे गुण कषी वामि चो स

॥७९॥



मझोले काम नोहे ॥ २ ॥ कीर्तन ॥ १०२ ॥  
हराषि हरि ओचरे नर सैयो चित धरे  
सां मले सर्व सभा जवात ॥ हार आपि ह  
रि विनय विनति करि ॥ सुन मुख रया ह  
रि जो डिहाय ॥ टेक ॥ मम प्राण वै भव सदा  
जनम जीवन सदा ॥ दाष वी दामो हरि  
नवांणी ॥ ऊं सं लग्न सरव पर हरि प्रेम  
प्रीति वरि ॥ ररण पंर बल कहै मे प्रित  
आंणी ॥ आदि ऊं दी न लु जनम ले ली  
म लु ॥ कोण ले सा मेहे ता हार वोरों ॥ का



हारनर

॥ ८० ॥

टब्रस्माडपति करुं हं विनति चरसेंया  
वचनतुं मानमोरां ॥ कीर्त्तन ॥ १०३ ॥  
देवातुजनाचे हं तात्नवाउं ॥ तात्नचे  
शब्दैकुं वजाउं ॥ अनेकं उगतपी गला  
पारषुनादकरिभेद तुज प्रवेगाउं ॥ टेक  
देवातुंधरां वांसली छुप घंटावली त्या  
रेके सरिलंक कटिजं वसाह ॥ राघिका  
हाथतुज बां हिग्री वांधरां ॥ त्पारे रंगनी  
रेलमां हं तणाउं ॥ देवातंत विधारस  
तात्नरिसा सरि ॥ घुघ रिं पंगु धरि वम ॥ ८० ॥



कवां उं॥ मप्रचं पचात्वं माने ईणांटा  
लाकरां॥ त्पारे जुवती ना॥ सुयमां हंस  
मां उं॥ १॥ देवा कंचुकि बंध उरहार कौस्त  
ममणि सुगुटमणि मेषत्वा श्री यत्न  
वां उं॥ मान्यनी संग ज्यवारां प्रबल भमं  
री फरां॥ ताहारा चरणानी रेणु मां हंस जना  
ऊं॥ ३॥ देवा अति आनंद प्रबल बल सी  
सतां॥ एहेवां रि सतां देवि ने हंस सराउं  
मपो नर सै यो जि धेंटरंगेर मो॥ देवा तु  
जसरि प्रडो हंस जथा उं॥ ४॥ कीर्तन



हारनरः

॥८२॥

राग असावरी ॥ श्रीमुरव बोल्या प्रोण  
पेमुम्हे वैस्स ववाहांला ॥ हूं अह निशि  
जेहेने धाउरे ॥ तपतिरथ वैकुण्ठतजीने  
ज्पाहां वैस्स वहोय त्याहां जाउरे ॥ टेक  
अमरीष मुंजने अति बह्म भछे ॥ दुवासा  
मन भंग की धोरे ॥ मेमाहारु अप्प मोन  
तजीने ॥ दश वार जनम ली धोरे ॥ १ ॥ वैस्स  
वगाये त्याहां उभा सांभलु ॥ उभागाय  
त्यां हो जाउरे ॥ वैस्स वंज मयी क्षणु नहि



अलगगे॥ नपोनरसैयोसांचुरे॥ २॥ की॥

न॥ १०५॥ वाकोरमाहारादामोदरजी॥ जे

णिसारकरिअमारीरे॥ अंतरनांरापोनर

सैयासाथेआप्पोहारउतारीरे॥ टेक॥ श्री

सुषबोल्पादामोदरजी॥ धन्यधन्यवैभव

नीजात्यरे॥ अंतरगत्यनासाक्षीमाहारा

हंवेचायोजननेहाथरे॥ १॥ सखियोस

रवेहरिनेवधावे॥ सुषबोत्तेजयजयका

ररे॥ रमसमकराहारिपरवरिया॥ आ



हार ७०

॥ ८२ ॥

पीमंहताजीनेहाररे ॥ १ ॥ शुकसनकादि  
कनारदमुनिजनवंलीदेवतेत्रीसकोड  
रे ॥ अंत्रक्षरहिनेजेजेकारबोलेनरसैंपो  
जीत्योहोडरे ॥ २ ॥ पुष्पवृष्टिकरिसरवको  
इधन्यधन्यवैष्णवजनरो ॥ प्ररणप्रीतपरं  
ब्रह्मसाथे ॥ बोलेप्रजाधन्यधन्यरे ॥ ३ ॥  
अनेकभगतआगेउधरिया ॥ तमोहृपा  
करोमोराररे ॥ सोरवसघटोजोवामल्या  
मोहिरखानरनारिरे ॥ ४ ॥ एणोजारजात्य ॥ ८२ ॥



नेकांइनमजगणेंपु॥ कीधोवैस्रवशुवा  
दरे॥ अंत्यजगत अंत्यजनोजायोए  
मबोलेप्रजाउट्हादरे॥ ६॥ मैरुसहि  
तमहिदांनकरे॥ नीत्यनिदपनाहेगंगा  
तीररे॥ हरिजनसाश्वेदेषकरेत्यारेप्रे  
लयोन्पकरिररे॥ ७॥ असमाहांदांनआ  
पेनिजमने॥ धरेशुभजपतपध्यानरे॥  
तेसचतुततक्षणहोयेनिफलजो  
करेवैस्रवशुआपनीमानरे॥ ८॥ बोलै



नरु. धार

॥ ७३ ॥

प्रजा दोहो दिसतत क्षणा ॥ ये सत्य सत्य

वेदवचनरे ॥ जे वैष्णव श्रुं वाद करे ॥

ते हनेरु बाश्री जुग जीव नरे ॥ ७४ ॥ क

ली जुग मां हे कवी ण मानवी यो ॥ ते

हुनु मन्मन व्यपती जेरे ॥ भणो नर से

यो सांभलो माहार वाहाला मुन्हें व

रण शरण राषी जे ॥ ७५ ॥ कीर्तन ॥ ॥

॥ ७६ ॥ ॥ राग धन्यासी ॥ सीपात सं

न्यासी मंडली क नैरे रहे छे नमो नर ॥ ७७ ॥



सैयाने पायरे॥ अंधा धाने कांई नैच  
जाणपुं॥ आक्रंद करे छै रायरे॥ टेक॥ सु  
रभी मडे भलुनां कीधु राय करे छै  
विलापरे॥ रांणी यो आचीने चरणे ला  
गी उगारो उगारो आपज॥ १॥ त्पारे रां  
मानंदेरा जा श्रांणी माहासुमानुं नहि  
वचनरे॥ असुर बहाथे मृत्पुपां मज्जा  
जार जा तपना तनर॥ २॥ त्पारे मेहे तो ज  
केहे ओम नव्य की जे धन्य धन्य रांमानं



नूरुहा

॥८४॥

दमुन्यरे॥ अमनेदामोदरजी येहार  
आप्पो तेराय दामोदरं नुपुन्यरे॥ ६॥ ए  
विष्णु भग तने दोषनां दीजे॥ मुजने लो  
गे कलंकरे॥ श्री दामोदर राये लज्जा  
राणी॥ हूं उगास्थोरंकरे॥ ७॥ मंडलीकं  
मेहे ताजी ने केहे छे मे कोपा कर मेतां  
णी वातरे॥ मणि नरसै योतुं अंसुरं अंश  
असुरनो तेजां पोछे॥ ताहार मात  
रे॥ ८॥ कीर्तन॥ १०॥ राग देवगंधार॥ ॥ ८॥



राजा आव्यो जनिता भणी ॥ कोहो माता  
उत पत्त अमतणी ॥ १ ॥ दलती माताय  
वांणी भणी ॥ सां भल पुत्र उत पत्त तुज  
तणी ॥ २ ॥ एस मे पु छुवाने मो क लो नि  
मंकि वै स व न र सै यो परी ॥ अं ह तु धर  
म विषे प्रतिहार ॥ असुर नु मुख दी तु ह  
बो तु संतान ॥ ३ ॥ आवी मंडली क मे हे  
ताजी ने न म्पो पाये ॥ दया करो हूं मंड  
मली राये ॥ ४ ॥ प्रसंख प्रधान निनय ब



हार नर

॥८५॥

ऊकैरे॥ मंडली कनै इणो नि सरण स  
रे॥ ६॥ श्री पात मेहे ता जी ने न म्पा॥ अ  
मो मेहे ता जी ने अति घणु दम्पा॥ ७॥ अ  
मो अज्ञान थ यामा हारा ज॥ राषि द  
मो दरे जननी ला ज॥ ८॥ श्री म मेहे ता  
जी ने प्रणा म ज करे॥ ब्रह्म चारि विन्य  
ओ चरे॥ ९॥ वैरागी रत्नी या त्प ज थ या॥  
आज हरि जन नाम हि मार ह्या॥ १०॥ न  
र से यो कहें जपो हरि नाम॥ राय दामोद

८५॥



नेक शोभणाम ११ ॥ कीर्तन ॥ १०८ ॥

राग आसावरि ॥ हरष्या लोक नगरन  
सरवकोये ॥ धन्य धन्य वैष्णव जन अव  
ताररे ॥ सीर ग संघ लोक चरणे लागो मो  
हिर स्वां नर नाररे ॥ टेक ॥ सभाये सीष  
मेहे ताजीने आपि छे ॥ वैष्णव मंदिर प  
धारारे ॥ धसी ॥ राम्ये चरणे शीशानां मु  
मे महिमानां जांणीत मारारे ॥ १ ॥ रामा  
नंद द्वारका परचरिया ॥ कहै वैष्णव ना



नरसै॥

॥८६॥

माहेमाये रे॥ जे वैल्लव शुं वेष जकरे  
ते निश्चैनर कपचाये रे॥ ३॥ पछे नरसै  
हीयो सरखियो ने केहे छे॥ सरस सुंदरी  
यो करोगां नरे॥ राये मंडली के सीष आ  
पि मेहे साजी ने नम्पा सर वपर धां नरे  
३॥ संवत पंदर सेंहे बांहांतेर॥ १५३२॥  
वरषे मागशर शुद सप्तमी भोमवार  
रे॥ तेणो दिवसे श्री दामोदरजी ये मेहे  
ताने आप्पो हाररे॥ ४॥ ॥ कीर्तन ॥ १०९॥

॥८॥



श्री दामोदरजी नागुपागाता॥ तेनर  
दुषियानां होयरे॥ सदासामद्वीयांस  
नेहजरगषे सनमुखयइनेजोयरे॥ टे  
क॥ मूरखमूढहिंडे वलवलता॥ नां  
जांणोहरिनोममरे॥ रंरणप्रीतअमा  
रिहरिभुंएमाहारोपरिब्रतर॥ १॥ छै -  
लछुबिलोनेछोंगालो॥ तेहनेकेहा  
पेरेभजोयेरे॥ मंडलीरांयनुमोनउ  
ता॥ तेहनेकेहिपेरेतजोयेरे॥ २॥ श्रीत



हरिजन  
॥७॥

करिविनवेनरसैयो हूं संत कृपाये  
पांम्पोरे ॥ हरिजननी चरणरेणु मां हे  
अनेक वेदना वांम्पोरे ॥ ३ ॥ हूं अज्ञान  
अल्पबुद्धि मां हारि ॥ देष्पा देष्पी ये चा  
ल्पोरे ॥ संत समागम अनुदिन कर तां  
हरिये हाथ जसा ल्पोरे ॥ ४ ॥ जे जे जगदा  
स भगते जन अविचल धरो ती लक  
तुलसिक वंमालरे ॥ भणो नरसैयो स  
रवंधा यो वै सवंगां ओ छ बिलाजी ७



नो विहाररे ॥ ५ ॥ कीर्तन ॥ ११० ॥ निरप  
लोकनगरनाहरष्या ॥ धन्य धन्य वैष्ण  
व अवताररे ॥ माहापती त आंविचर  
पोलागा ॥ करेहरषनरनाररे ॥ टेक ॥ अ  
मो अबुद्धिनेमो राजा अबुद्धि की धा  
वैष्णवनीतातरे ॥ स्वामी सेवक मांहे  
मेहनहि येवांणी वेदविरच्यातरे ॥ १ ॥  
वासुदेवनावाहालावैष्णवांतेस्यये  
शोर्षेपररे ॥ सावुपांसु सामखीयातु



सूर ३०

॥ ८ ॥

तेभविष्मनाटात्नेलेषरे ॥ २ ॥ हरिजन  
सघलाहरषजपांम्पा ॥ वरत्पोजेजेका  
ररे ॥ भणोनरसैयोधरोतीलकतुल  
सी ॥ गाओ छविलाजीनोविहाररे  
३ ॥ कीर्तन ॥ १११ ॥ हरिनीभगतविना  
जेजीवेसजनी ॥ बीजोअिडअफुलअ  
वताररे ॥ तुलसिमातातिलकपणपा  
वे ॥ बीजाशाषोटासणगाररे ॥ टंक ॥ इ  
वामासुडरदुषपांसी ॥ तेअकारज ॥ ८ ॥



षरभाररे॥ देही धरिने हरिनी दासना  
काहाव्यो॥ तेहनी जननी नेधी काररे  
१॥ वैसवजनवाहात्मानहि जेहने॥ तेह  
ने कपानहिनी रधाररे॥ नरसेही या  
वास्वामी विनासजनी॥ बीजां अने  
कधर्मविचाररे॥ २॥ कीर्तन॥ ११२॥  
सरसगांन सुंदरी यो केरां॥ वायेचंग  
मृदंगनेता लरे॥ नरनारिसंरवम्पे ह्यो  
नगरनां जयजयहि नदयाखरे॥



Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org



रे॥ ३॥ कुपरवाईयेचरणेकरघाती  
बोल्यांदिनवहूवांणीरे॥ गंमगंम  
संकष्टपडेउगारां॥ अमोप्रीततमारी  
जांणीरे॥ ४॥ निरधननेवलीमात्यवाग  
रि॥ दामोदरनदेसोअवताररे॥ कणीन  
रसेंयोसांभलोभाहारवाहालाभी  
गुलुवारोवाररे॥ ५॥ कीर्त्तनि॥ ११३॥  
कहेदामोदरसांभलोनरसेया॥ हंप्र  
माप्रितेबंधणीरे॥ लोकवार्जनेकार



पो माहाराग के दारो वे चांणारे। टेक  
घण्णा दिवस मे पंथ निहा ल्यो तो हे तुर्क  
दयानां आवीरे। माहारा सुषनो समो  
हटा ल्यो त्पारे मे सुर सेना बोला वीरे।  
तमो मंजी नेहूं वश की धो अवर कोणो  
नव था उरे। मान बार् कांहां न बाई के  
हे करुणा निध। हूं तो वै स्रवहा थ वे चा  
उरे। शान बार् रित न बाई प्रत्ये बो ल्या  
माहारे सुर सेना समुन हि कोयरें। कु



यरवारियेवांणी प्रकाशी॥ ए भगव  
समागमहोयरे॥ ३॥ आपिआज्ञाअ  
वनीश्वरवलीया सुस्तकमुक्याहाथ  
रे॥ कुअरवारचरणेजरलामो धन्य  
धन्यवैकुंठनाथरे॥ ४॥ निरभेधरिह  
सरवसारियो॥ ५॥ भगवतनीलुबेल  
रे॥ तुमश्रुमांहारेअंतरनथी येसु  
षसनातनकेलरे॥ ६॥ भक्तभगव  
तआदीसनातन॥ श्रीगोकुलना



रायरे॥ फणोनरसैयोहं दिनउगास्या  
तेसंत चरणापसायेरे॥ ६॥ कीर्तनि॥  
॥ १९४॥ ॥ इति श्री नरसिंहमेहेतान  
हारमालासमाप्त॥ ॥ संपूर्ण॥ ॥ श्री  
दामोदरापणिमस्तु॥ ॥ श्रीरत्नु॥ ॥



श्रीकल्यायनमः॥ रागचातलो॥  
हंतोसुंणजडनारीहो॥करूंयेक  
ब्रातभक्षी॥तेरोजनमबिगारोहो  
प्रियाजीकाराहनांचंली॥तेरीजा  
त्यनजांणुहोरसीकरायशबंद्य  
पा॥तेरीममताबिंढीहोनपायापी  
उंअपणा॥तेरीमायाप्रबलहोच  
पोराछंदकरे॥अतीनाचनचावेहो  
नटवरवेषभारे॥मनमुक्तकंदीया

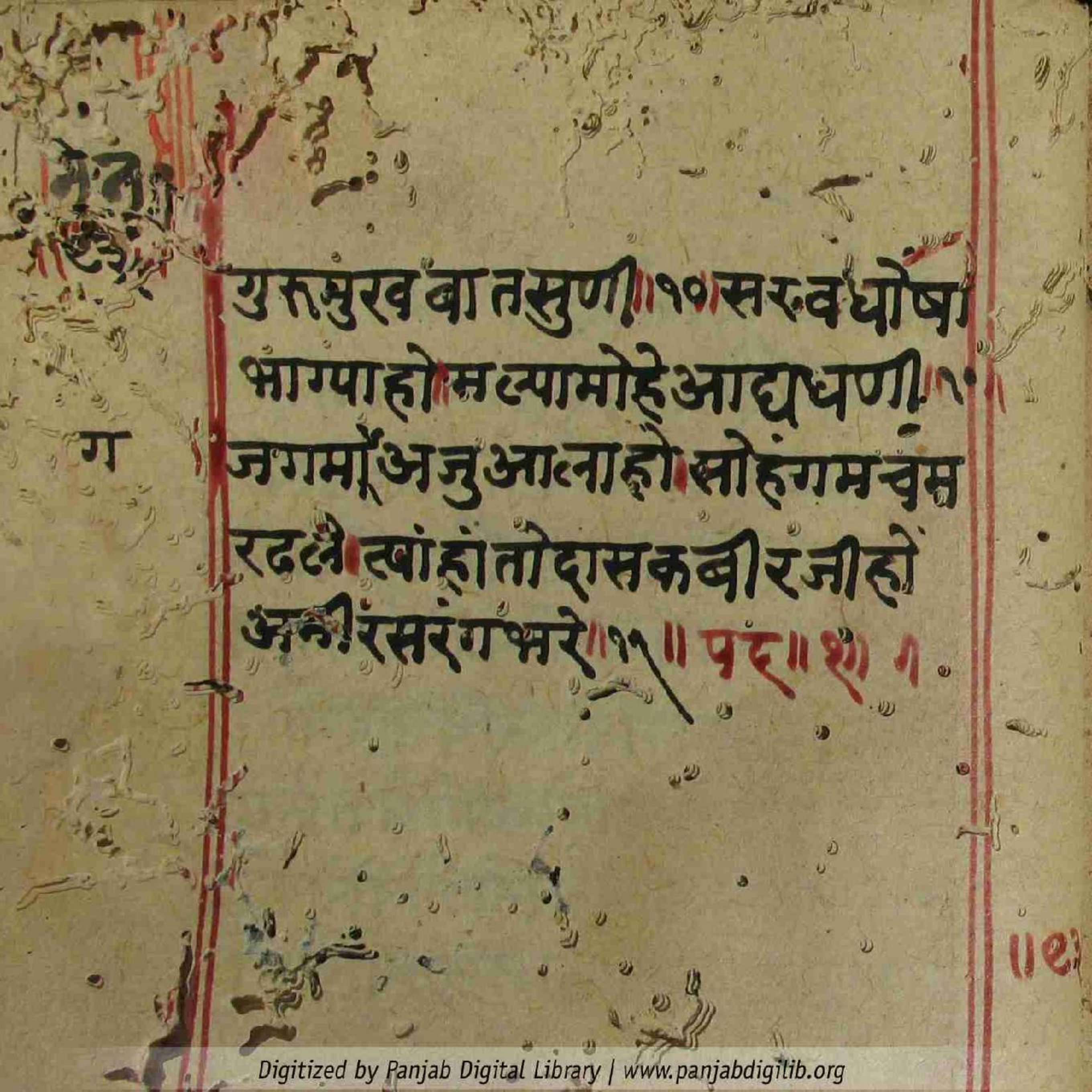


हो॥ जाओगी को १६ पादशा॥ ते तो ना  
अनांजाणा हो॥ घटमां आय बसा  
३॥ तेरे तीनों रसीया हो॥ पल उतुं  
ग करे॥ पांचां शुरुची हो पचीस सुं  
संग करे॥ तेरे रजगुण तमगुण हो॥  
सतगुण चितनां दीया॥ तेरो जनम  
विगुची हो॥ सतनका संगनां कीया  
५॥ वाल्यगगन मेहेलां मे हो॥ ज्पां हां  
ते रानी युवसे॥ त्यां हां अनहद वाजे ॥ ८२ ॥



हो सत्वमत्वसोदरसे ॥ ६ ॥ त्पां हों नेर  
सरणा रहो शव दसणा कार करे ॥  
त्पां हों अमी रसवरषे हों अखंड त्पां  
हों धार शरे ॥ ७ ॥ त्पां हों ईगुला पिगला  
हो सुषमना संग लीया ॥ त्पां हों फुली  
- फूलवाडी हो मनोहर चित्र दिया ॥ ८ ॥  
त्पां हों दोउमार गहो आगे येक रूप  
पेय अंगम अगो चर हो ॥ पो हो चेको  
संत सु आ ॥ रेखो अज चतमा से हो





युरुमुख वा तसुणी ॥ १० ॥ सरुव धोषा

भाग्या हो सल्या मोहे आद्य धणा ॥ ११ ॥

ग

जगमो अजु आत्मा हो सो हंगम चम

रदले त्वां हो तो दास कबीर जी हो

अनी रसरंग भरे ॥ ११ ॥ पद ॥ १ ॥

॥ ११ ॥







मेन  
श्री कृष्णाय नमः ॥ दोहोरा ॥ नि  
वसुंत पद प्रणमो सदा रिधि  
सिद्धि निधि देई ॥ कु म ति वि  
जा शान सु म ति क रि मंगल  
सर्व करेई ॥ १ ॥ अलष अ मूरत  
अलष गति किन डून पा मा  
नार ॥ जो रिडु गल कर करुत  
रे वि म ति मार ॥ २ ॥ आ



मुर्वेदसमपथ्यकरिरच्यो जुना।

माश्रान॥ अर्थदिषावोपगटक

रिओषधरोगनिदान॥ ३॥ मम

मतिअल्पजुकहलहो॥ क्विस्

तिपरमअगाध॥ सुगमचिकीत्स

चतुरकविंदुमियद्रुसजअपरा

ध्व॥ ४॥ वैद्यमनेस्सन्ननामध

देशग्रंथसुप्रकाश॥ वैद्य

न



नमो भगवते  
सुत नैन सुषणा साकी यो विद्या  
स ५॥ अथ नाडी परीक्षा ॥ दोहरा  
प्रथम न सा ललित कहो देश ग्रं  
शम निसो य ॥ फुति आनो अन  
जा न पे जै सी मन मति होय ॥ ६  
करि अंगुष्ठ मूल ही देश कुन सा  
सकार ॥ जान कु सुष इष जीव  
नं विन कर कु विचार ॥ ७ ॥ आ



हि पित्तकृ निमध्यकफ श्रैतप  
वनजुप्रधान॥ त्रिविधिनसाल  
तिनं कहों जानहु वैद्यसुजान  
८॥ मेंडककागकुंलिंगगति  
पित्तनसाइहिजाइ॥ हंसनवृ  
रकपोतकफ॥ नागजलोकाव  
इ॥ १०॥ तितरलववरेरंगति  
सोधमनीसनपात॥ तइ



बेइ  
न अति सी त होय नाश करे बड़  
घात ॥ १० ॥ रुधाच पल धमनी च  
ले उल्लरक्त की जान स्थिर तप्त  
की पुनि कहें आम गंजीर वषा  
न ॥ ११ ॥ चले वेग अरु तप्त डूय  
वर लहि त धमनीय ॥ कर डू  
विकी त सा म म जिकें जो सुष पा  
॥ १२ ॥ अंघ पित्त रुफ ना



यकोपनिदान॥ चोपशि॥ विषमास  
मजोहापेवारु॥ कुरुधातुषांजेव  
हुतश्राहारु॥ कटुकतित्तसमम  
दिरापान॥ सेकैअगितिकोधपमा  
न॥ उक्षजुषायेधूपमेगशे॥ शोध  
रातदुपंहरंहीसमे॥ कातिकजेहं  
अरुवैशाष॥ पित्तविकारप्रमद  
करिनाष॥ मधुरदुग्धमंददिदि



नव नवनीत लो नषट्टाई पलज कसी  
॥६॥ त नो जनन पिओर ही न सो वै  
फाल्गुन चैत स मे क फ होवे ॥ वो  
खेतुंग वाद हति गदे ॥ चिंता पेट  
न न न करहे ॥ रुषा पाय कंदुक  
निशि जागे ॥ संध्या स मे सीत अंग  
अगो ॥ न न ए करे क से ला सोय ॥  
नेषे दे जा फल न होय ॥ १३ ॥ दो



होरा॥ मंघर पौषरुमाघमैना

द्ववश्रावणतास॥ पुनिअषाढपं

दितकह्यो वायुराजषटमास॥

१४॥ अथपित्तकफवायलरुद

चोपशि॥ मुषकटुताव्याकंअणर

लोपं॥ सुकंदीअंधरस्वेदअस्त

प॥ मूर्छादाघसीनगरपीत॥

दनकहेपीतकेसी॥

तइ



नैज  
५॥

खेहरुषासीस्वास॥ मुषमीवोजु  
मुषकीताश॥ हियराजारीबल  
ग्रहरहे॥ कंफकेलरुनएतेकहे  
देहीपीडाताबुदहे॥ आलसहे  
याप्रभमेरहे॥ देहीशीतलनिडा  
नोदा॥ सषाअंगबडुतडुताश  
मसनहीमुषमीगारहे॥ उष  
नीचसंजोपेगाहे॥ नैनेकवि



यो क ह्यो वषान् ॥ मारुत लंकन  
हते जान ॥ १५ ॥ अथ पित्त कफ व  
युको विचार ॥ दोहोरा ॥ स्त्रि संग  
मन्त्र बीज नाशी तल मलिज स्ना  
न ॥ मोजन मधुर सुगंध ता कर  
कोप पित्त हान ॥ १६ ॥ दार क स  
नामै क कटु तप्त उदक सुपवा  
स ॥ बवन विरेचन ॥ इ फु नि  
हो ई क कफ नाश ॥ १७ ॥ त ह



चैनः

६॥

दक्रवतउसदवमईनमेनशरी

र॥ सुरापातसेकेदहनईन्हते

जायसमीर॥१८॥ अथसाध्वल

हन॥ सोरगा॥ होयत्रिवाजि

सहीनकरपदनासातप्रही॥

मडुरसनापरबीनभुनलरुन

ताकेकहे॥१९॥ वोपई॥ इंझीअं

गुरहेचैतय॥ सुषनिडाआनसु

प्रसन्त॥ नधिगावचनसुनेन



रुकंहे॥ स्वादगंधसबके गुनगहे  
बिनु प्रस्वेदजा को ज्वर होय॥ सर  
ल स्वासही न कफ सोय॥ करड  
चि की त्साता को जान॥ सो तर  
जीवे कस्यो बमान॥ २०॥ अथ  
सार पलं कन॥ सो रवा॥ जाय सुभा  
रुत शि त ग्रह पीत होय कफ गेह  
कृष॥ आवे जव कं॥ हो॥ च लं



नेन-

ॐ॥ तव देह ॥ २२ ॥ सोरठा ॥ कंठ विषे कफ  
होय निशांदा घफु निशीत दिन  
मरे जुशगी सोय ॥ कछु नव नेउ पा  
षता सु ॥ २३ ॥ दोहोंरा ॥ गुदान्त्र पृत्र  
रुही जस्वर कास स्वास फु निजा  
सु ॥ व्याकुल डूचें की सोजत न  
नपुरता सु निवास ॥ २४ ॥ इहें च  
रनं प्ररु दं निजा नान होय हि सु



जासु॥ शीशतप्रजाकोरहेजमपुर  
कोवासु॥ २४॥ दर्पनघृततप्त  
तेलमेछायादेषकुआनि॥ शिश  
रहिततनदेविये॥ नासुपद्रुमहि  
जानि॥ २५॥ मज्जुनकीजेतीनंअंग  
करुसंदरुदेनिहारि॥ सुकहीजि  
सुत॥ कालसोमृतकहोयविवा  
रि॥ २६॥ करविचारु॥ कुबुजे



आर्द्रा

नें ज०  
८॥

आवेक ह्युन गंध ॥ मत्त लज्जा उत  
ना संकय ता स लेत जम फंद ॥ १५  
अथ कालचक्र लिख्यते ॥ आदि  
जुअंति मग मधि मूल सम सोय  
नं धत इ इ विनाम धरि इ हि वि  
धिना स जु होय ॥ १६ ॥ रोगी पातु  
जु होय धक व जाय जा हो ज म धा  
ष ॥ सो वि न क ह्यो विचार के का



लचक्रधरिनाम ॥ २५ ॥ इति पंडित  
केशवराय्यपुत्रनेन सुष विरचि  
ते वैद्यमतोत्सवनाडीपरीक्षावा  
तपित्तकफकोपनिदानसाध्यत्र  
साध्यं लक्षणकालचक्रनामप्रथ  
मो ॥ देशः ॥ १ ॥ श्री ॥ अथ ज्वरलक्षण  
एलिम्पते ॥ दोहोरा ॥ ज्वर उपडहि  
का विंदुग्रहमुखीनां रत्नोत्सव



नैन-  
ए॥

तीसार॥ बंवन अरु चि अंगने दखि  
ते ज्वर दशाल रुण सु प्रकारा॥ १॥  
अथ पित्त ज्वर लक्षण लिख्यते॥ हो  
होरा॥ मूर्च्छा त्रिषा प्रलाप फुनि  
शिरो चूर्ति नम चित्त॥ नेत्र दाघक  
हुता वेदन ए दाय लक्षण ज्वरणी  
॥ २॥ अथ कफ ज्वर लक्षण का  
ल आस रोग मोच गुरु बेहर नि



द्रोणीत॥ ववनश्रुचिमुषमधुर  
ताकफज्वरलक्षनमीत॥३॥ अथ  
वायज्वरलक्षन॥ शिरफंडुरोमां  
चन्द्रमसीतकंपजंजाय॥ मोहं  
शितलज्जुकषायमुख. एलङ्कनं  
जु॥ वाय॥४॥ अथमलज्वरलक्ष  
न॥ शिरवा॥ हांघसोषपरलाप  
अस्थिपीडांशिरवर्जितम॥ वाय



नन

॥

क्षणमंलताप॥ करकुउपायवि  
चारितिहि॥ ५॥ अथअजीर्णमु  
रलक्षणां॥ दोहोरा॥ बवनउदरउ  
षवकुउकारहोयजासु॥ जीरण  
जुरलक्षणाकहेदेषीअंयसुप्र  
काश॥ ६॥ अथषेदज्वरलक्षणा  
नीडाजुनएफुटतनहोयअंग  
अषेद॥ अतोसुवैद्यविचारि



कैलकुरुणज्वरुषेद॥७॥ जिन्नन  
वैद्यनअत्राक्तिननुउदरपीरफु  
टअंग॥ एलकुरुनज्वरदृष्टिकेकह्यो  
सुअंथप्रसंग॥८॥ अथकालज्व  
रकुरुणलिष्यते॥ होहोरा॥ शिशु  
तप्रप्रस्वेदमितकुरुपदशितल  
होय॥ एलकुरुणनुरकालकेति  
सहिउपायनकोय॥ अथअ



नेनः  
५५

रपकलरुण सोर वा सप्रदिन  
अगंधवाह अथवा दस वा सुक  
हे ॥ पित्तकफ दस दिन आदि ॥  
आनोज्वरपरिपक्व ॥ १० ॥ अ  
थज्वरविमुक्तकलरुण ॥ सेहर  
शोरकंडुप्रसेदतनदेहीलघुना  
जासु ॥ सुषपाकोवडुनुषकिं  
एककणनरनासु ॥ ११ ॥ अथल



धुंमुदर्शनचुर्णी॥चोपई॥सौंठक  
टाथेफुहकरमूल॥काकडासिंग  
कूटकचूर॥महजहवीगिलोय  
आंवला॥सालयुपणीहईपीपरा  
मीरचकलौजीत्राहिमान॥पित्तप  
पडपत्रजआन॥अणारमासाअ  
रुकुडा॥मिलाय॥लोचनवालाडु  
वीषाय॥तजपतीसुखरदारहिजा



नैवः

१२॥

न॥ मोथंपरोलजकायनआन॥ नि

आश्रनयापीपरिमल॥ एओषध

मेलहुसमतल॥ जैपालिकिराय

तावान॥ सबओषधआधततुए

तैआन॥ इनसबहीनकोचूरनक

रहु॥ नामसुदर्शनलघुतिहिधर

हुं॥ चुरणपीजेजलमहिघाली॥

आंगेजुरंभासहीततकाली॥ १२



चोई ॥ हा घमोहतंदातनजाय ॥ पा  
हुरोमीकामूलनसाय ॥ हियगदत्रि  
षामूलसबजाय ॥ सन्यपातएकहि  
ननरहाय ॥ भ्रमंजुउचकीरोगतसा  
य ॥ कासस्वासकीपीराजाय ॥ रोडा  
अनेककोनहिजान ॥ जैनकवियह  
कह्योबमान ॥ १२ ॥ अथमहात्वर  
कुशलिष्यते ॥ दोहे ॥ सोठमीर



नैनं

॥१॥

च-आरपीपरेटंकआवपरिवासा॥  
गंधकविंपारदकहोदोयटंकए  
आन॥१४॥बीजधतरेटंकद्वपी  
सङ्गओषधसोय॥रसञ्चदकंसो  
मर्दककरिगोलिरतिदोय॥१५॥गो  
लिषाजेप्रातउविरसञ्चदरकंसोघा  
लि॥तापपित्तकफवायकोनाशहो  
यततकाल॥१६॥तीजोडुजोनित्यको



चोपौ इज्वरजाय ॥ सूर्यमविषंमसुश  
तज्वर उदरमाधिनरहाय ॥ १७ ॥ म  
हाज्वरांकुशानामकहि पंडितली  
जहुमान ॥ वैद्यमनोत्सवनामति  
हिनाषाकीयोवषान ॥ १८ ॥ अ  
सिद्धजुद्धज्वरांकुशलियते ॥ चोपै  
सीपनस्मरांक ॥ १९ ॥ हरालयंक ॥ २० ॥  
निलापोषांक ॥ २१ ॥ कुमाररससो



नैनं  
१४॥

धरलप्रहर॥४॥अंधमसकरगजसु  
टदेयप्रहरचारपावकरहे॥५॥त  
लहोयतो जेऊ॥१५॥दोहोरा॥एकर  
तिप्रमानफुनिषंडसोहीजेजासु॥  
आतुडधकोपपदेयहोयसनेज्व  
रनासु॥२०॥कह्योज्वरांकुशचर  
गभमिपंडितलेहुविचारि॥नास  
हिरोगअनेहुविधिसिद्धिप्रगरसं



सा ॥ २१ ॥ अथ नुरध्री गुटिका ॥ दोह  
रा ॥ गोपरमनसिलनिंबफल ॥ अक  
कोयलेपाय ॥ गोलीकी जैपी संकेत  
पत्रिदोषमिरांय ॥ २२ ॥ अथ पित्तज  
रकोचूर्ण ॥ मोरठा ॥ पित्तपापडा ॥  
निजलमोदीजेवा सिक्के ॥ टोकरा एक  
परिवान दाघपित्तज्वरनां ॥ २३ ॥  
चोपइ ॥ लोचननालोमोय ॥ आनि



२५॥ वेदपित्तपापडावा नि॥ सों ठें उहीर  
नीरं सुलेकें॥ दाघपित्तज्वरना शक  
रेहु॥ २४॥ अथ कपज्वरको नाश  
दाहोरा॥ सों ठि सिरच अरु काय  
फ्रंल यी परंता हिमिलाय॥ ना सजु  
ली जे तीर सुं कफ नुर छिनं महु जा  
य॥ २५॥ अधुं वायज्वर कहं कर  
सोरद॥ सों वि सोचर पाय॥ पीपर भीर



ॐ स्वस्ति सायंतग ॥ कटु शिवांजुर ल  
य ॥ चरक हरेजु वात ज्वर ॥ २६ ॥ अं च  
मल चरक हक वाय ॥ खोर म ॥ अं  
पिक अरु क तिपाल मोया कटु ह  
रीत की ॥ पीट काथात त काज ॥ स  
लं चर वां को वाश होय ॥ २७ ॥ अं  
धं च र स चर कह ॥ दो होय ॥ स  
अज मोदा उहरी की मोरता



ॐ नमः

१६॥ हिमीलाय॥ पीसपीये जल लहिरा को  
सज्वर छिन महि जाय॥ २॥ अथ षे  
दज्वर कहं उपाय॥ दोहोरा॥ महेन  
कीजे अंग कह॥ तेल तिल लून को पाय  
फनिम अजान जलत प्रसो षे दत्ताप  
३॥ मीराय॥ २॥ अथ दृष्टि ज्वर कह  
४॥ दोहोरा॥ पीपरि मीरच क्रि  
यंत॥ ५॥ त्रिखि॥ ६॥ मया लि॥ ७॥



यं नृकं नृकं नृकं नृकं तापदष्टि नृकं ह  
जाति ॥ १ ॥ अथ वायु पित्त नृकं नृकं  
रक ॥ २ ॥ पाय ॥ दोहोरा ॥ सोया ॥ सोव  
किराय ॥ पित्त पाप दृष्टि ॥ ३ ॥ सोप  
रक ॥ ४ ॥ पित्त पाप दृष्टि ॥ ५ ॥ सोप  
छानि ॥ ६ ॥ जोय हृन् नृकं प्रकं नृकं  
अथ नृकं नृकं नृकं नृकं ॥ ७ ॥ नृकं नृकं  
नृकं नृकं नृकं नृकं ॥ ८ ॥ नृकं नृकं



३३  
५२॥ अथ हृद्गंगाधर ॥ ३॥  
श्रीगंगाधरस्तोत्रस्तुतय ॥ वे ल प  
तीमानीकरसपाय ॥ जोइ लेख ॥  
१०॥ कुडां इंजबल ॥ बलीज  
५०॥ वंजबाजा ॥ कुनिमहिपाय ॥ तंड  
५१॥ श्रीपीसिमिला ॥ मठाभात  
५२॥ जनेजबलेय ॥ अतिसारधनेहि  
नमो ॥ ५५॥ अथ अतिसारकोलघु



गंधार॥ दोहोरा॥ सो॥ अधातुकी मेच  
रसे अजगो दा नुरलाय॥ पीसी छिछो  
सो दी जयै अतिसारजु मि संय॥ ५५॥ अ  
तिसारको लेप॥ दोहोरा॥ अमरु जो  
अरु जाय फल विल कथ अकी मारु  
या लि॥ जल सो लेप फुंन निंदर॥ अ  
तिसार कहया ल॥ ५६॥ अषन गग  
दिक्का थंज्वर अतिसारको॥ दोहोरा



ॐ नमो  
३३३

सोम कडापती इन्द्र नवमो वरुणो भूमी  
लाय ॥ काय जु करि कैसी जीचे अति  
सारथ जाय ॥ ५१ ॥ चोपाई ॥ लावन वा  
लु कुडापती स ॥ मोथा दे जनु समक  
विपीस ॥ प्राको काय जु करो मिलाय  
आणि त अतिसार जु लाय ॥ ५२ ॥ ॐ  
य अतिसार कह गुटिका ॥ दोहोरा ॥  
लोड इन्द्र नवमो वरुण स मोथा बिछुस  
धाय ॥ दीजे जल सो गुंटी कर अतिसा



रासिहजाय ॥ ५५ ॥

करस मोया बेल जुधाय ॥ बाबेसल

सों गुदिक करी अतिसार नरहाय

६० ॥ अथ अतिसार कह चूणी ॥ श्रेया

सों चलहि शिव चशिवापंती सरसा

य ॥ पीस पीसे जत प्रसो अतिसार

यं जाय ॥ ६१ ॥ अथ काण्ठधाना पेच

क अतिसार कह ॥ दोहोरा ॥ धनीया

मोया सों ठफुनि वाधा विज्ञ कथया



वेमः

२३

लि॥ कायजुकुहिकेदीजीये संग्रहणी  
कोराति॥ ६२॥ अथवायसंग्रहणीक  
हकाय॥ चोपाई॥ मोषासोंवगलोय  
पत्तीसं॥ तप्तनीरसोंपीजेपासि॥ आम  
अरुचसंग्रहणीजाय॥ वायभूलहि  
वमोहिनसाय॥ ६३॥ आमअरुचिरं  
ग्रहणीकहकाय॥ गोयणहेंद॥ लो  
दपटोलजातुमोयाबेलसोंवजुपा  
वजु॥ धणियापत्तीसगलोयबाला



कडाभायमिजावहु॥ समपीसिओ  
षत्रिकाषकीजेप्रातउवीकेपीजीये  
आमभ्रजश्रुचिसंग्रहणीनाचाइ  
नकोकीजीये॥ ५४॥ इतिपंडितके  
श्रवदासपुत्रनेनसुषविरचितेवे  
द्यमनोत्सवजुरसंगिपातश्रतिसा  
रसंग्रहणीप्रतीकारनामद्वितीयस  
मउपदेशः॥ २॥ अथववेसीरोग  
चिकीत्सालिष्यते॥ मूरणगुटिका



चैन०  
२५

ववेसी कह ॥ हो होरा ॥ एक मिरव वि  
वि सों वफुनि चित्रा आठ घाति ॥ अण  
षोडश जाग पुनि चुरण कर झुं जानि  
१ ॥ द्विगुण ले कुगुड जा पको गुटिका  
कर कुटां क दोय ॥ पेट अफारा गुलागु  
दना शव ले सी होय ॥ २ ॥ अरं चित्रा  
इंद्रज वं सुवि सैधा बिज ॥ चूरण पीजे  
तक्र सों रोग ववे सी पेज ॥ ३ ॥ घृनी ववे  
सी कह अमध ॥ सारवा ॥ दुहा बली जु



आति घटल वेग सुं पीजीये ॥ टेक सा  
 त पर आन ॥ रक्त व वे सीता स रहे ॥ ४  
 रोग व वे सी कह चरण ॥ दो हो रां ॥  
 रण व च अरु मुसलि ॥ कड़ां सों तिस म  
 आग ॥ पीसी छान सों पीजीये रोग व  
 वे सी जाय ॥ ५ ॥ जगंदर रोग कह लेप  
 ॥ दंति हरदयु आं वरे ॥ पीस हुनी रमी  
 जाय ॥ लेप जुकी जे पात उठी रोग न  
 गंदर जाय ॥ ६ ॥ अस्त बिलाई आनि



लेनः

२५

कें त्रिफंलारस संयोग ॥ ताघसिद्धाच  
द्रुजानके जाय जगंदररोग ॥ १ ॥ जेन  
जगंदर कह ॥ सैंधा सो विजुंदर द फु  
नि बट फल वच गिलोय ॥ जाय पत्रघ  
निघाईये नाश जगंदर होय ॥ ८ ॥ अथ  
गुल्लरणा प्रतीकार विष्यंते ॥ दोहर  
सैंधा सो चर सैं वहिंग ॥ कं टूं लान फ  
नित्रानि ॥ अने पापी पर अज मोदा  
जवषार विहंग ॥ ५ ॥ इनका



मुरण की जीये घृत सों पाथ मीला  
ध॥ सो ला मूल विसुचिका अर्श अ  
रुचि स बजाय ॥१०॥ अथ आमवात  
रोग चिकीत्सा ॥ सो य कह ले प ॥ सर  
ओ सो ठ सुहाजना ॥ विस ख पूरा ख  
रहार ॥ कांजी सहित जु ले पं करि सो  
अविषादि निवार ॥११॥ अथ पिष्प  
आदि चरण ॥ आमवात रोग कह ॥  
पीपरि पाठ कर रादि जानि सो वजु



न०  
३॥ जीरे अंजया आनि॥ मोया चित्तापीप  
रिभूल॥ गजपीपरिमीलायसंभूति  
तप्तनीरसोंपीजेपीस॥ आमंवातवे  
दनहीदीस॥ भूलअरुचिंफ्रीहानर  
हाय॥ सासिध्वासिछिनमहीजाय  
१२॥ अथआमवातकहचूर्ण॥ दोहरा  
मोंठविडंगहरतकीदेवदारुजुमी  
जाय॥ तप्तनीरसोंपीजीयेआमंवात  
नरहाय॥ १३॥ कसकीपीडाउदरकह







मेन

२२

येनाशं सोज का होय ॥ १६ ॥ अथ क्रम  
रोग कह दो होरा ॥ सैंधा निफला वि  
डंग फुनि पीस कुसम करि जाग ॥ तप्त  
नीर सो पी जीये ॥ ना सै क्रम करोग ॥ १७  
अथ पूर्ण क्रम रोग कह ॥ दो होरा  
त्रिकटा निफला ति बिब्वं नीबप  
त्रैरुजाय ॥ सदिर कुडा जु विडंग  
नि चूरण करइ मिलाय ॥ १८ ॥ धेनुमु  
त्रैमहि गायकै संकए कपरिवान



सप्तदीवसनवपीजिये होयउंदरक  
महोय॥१५॥ अथशूलरोगप्रतीकार  
चूर्ण॥ दोहरा॥ सोंचरहिंगजुसोंवि  
फुनि॥ आनकुसुमकरिनाय॥ पीसपी  
जेतुततप्रसों॥ शूलविस्त्रचिंजाय॥१०॥  
अथहिज्वरकचूर्णशूलकह दोहरा  
मिरचेपीपरसोंविहिं सैधाजीरा  
दोय॥ अजमोदाजलतदसों कबडू  
शूलनहोय॥२१॥ अथतंबूराद्विचूर्ण



नेन.

मूलरोग कह ॥ मोर वा ॥ तुं वर पुष्कर  
मूल ॥ तिन लवण जव वार दिग ॥ एस  
वहिन में चुरु ॥ अज वायं तुं विडंग फ  
नि ॥ २२ ॥ टंक एक परि वा त ॥ ए ओष  
स वं जी जी ये ॥ ति विति तटंक अति  
ईन को चुर ए की जी ये ॥ २२ ॥ त प नी  
रम ही पाय टंक दोय जी पी जी ये ॥  
मूल गुल क फ जाय ॥ वैद्य मनो ल  
व अं य ॥ २३ ॥ अ पं च ए वाय मूल



कह दीजे ॥ दो हो रा ॥ सो वं मिर वं अ  
रु पीये ~~सु~~ ज्जी ताहि सी लाय ॥ पी स  
प पी ये अ ज त त प्र सो ॥ मूल से ग न रं हा  
य ॥ २५ ॥ अथ पांडुरोग कमल वाय  
प श्री कार ॥ काय पांडुरोग कह ॥ दो  
हो रा ॥ त्रि कला कडु की रा मता वासा  
निंब ग लोय ॥ काय पीजे सह त सो  
नास पांडु का होय ॥ २६ ॥ ~~वि~~ फलात्र



नैन०

२५॥

नी आं वरे लोह चुन जु मिलाय ॥ चाहे  
मधु घृत पाय के पांडुरोग रुख जा  
य ॥ २३ ॥ अथ कमल वाय कह अवले  
ह ॥ दोहरा ॥ लोह चुन त्रिफला कडू  
दो नारज निघालि ॥ घृत मधु सो जब  
चाटिये ॥ कमल वाय कह टांलि ॥ २४ ॥  
अथ अंजन कमल वाय कह ॥ दोहरा  
गेरु हरद ॥ आं वरे ॥ कर अंजन न य



लाय॥ कमलवायका नाश होय॥ म  
सुरमचने पाय॥ २५॥ अथ रुई रोग  
उपचार चूर्ण अरुई रोग कह॥ दोह  
रा॥ अस गंध सों वजुपी परे लवंग  
धूपी पाय॥ तप्त नीर सों दीजीये रुई  
इरोग जु न गाय॥ २६॥ अथ गुटिका  
अरुई रोग कह॥ दोहोरा॥ अर्क मू  
ल अरु लवंग फुति पीरु स मक



नेम  
३०

रिआनि॥ गोलीपाजेपातउवि होय  
झईकीहाति॥ ३१॥ अपरुइनेगक  
हचूणी॥ सोरठा॥ त्रिफलासो व विडं  
ग मिरचैकणा जु मोषही॥ पीपरि  
मूलनवेग देवदा रुत जलाईची  
३२॥ इति श्रीमंडित केरावंधासपु  
त्रनेन सुष विरचितायां वैद्यमनो  
संवत् ३१ गंदरगुल्मग्रामकत



कम मूल पांडुरोग कम लवायं हर्ष  
रोग प्रतीकार नाम तृतीयांश मुद्राः  
३॥ श्री॥ अथ हीच की कहनास॥ दो  
होरा॥ कीटम विक्लितापरस पीस ऊ  
देनोपाय॥ नास जुही जे प्रातं उठी  
ऊच की बझरन आस॥ १॥ अथ ही  
च की कह चूर्ण दोहोरा॥ मिरचे  
मीसरिल वंग फुनि जिनेर कीया



नेन०  
३१

लि॥ मंध सों वा जे प्रात उ वि ही च की  
पीरा टालि॥ २॥ अथ ही च की क ह धू ए  
दो होरा॥ मन सिल हर द जु आति के  
पी स ड स म करि जोग॥ चंद न जु ध  
नी दी जी ये॥ ना स ही ही च की रोग॥ ३॥  
अथ छ दिरो म प्रती कार॥ दो होरा॥  
चंद न मो य ई जा ई ची जा जा क ए  
ल वें ग॥ च गिरी अरु क म ल फ ल



गङ्गा के सरजुषि यंग ॥ ४ ॥ ई न को चू  
राणा की जीये मधुमिसरी जुमिलाय  
प्रातः समेज बचाटीये ॥ छंद रोग जु  
मिलाय ॥ ५ ॥ छंद रोग कह अवलेह  
संरवा ॥ लाजा सिताल वंग ॥ क म ल  
वीज अस लाईची ॥ सादे मधु के संग  
छंद रोग का नाश होय ॥ ६ ॥ अपस्वा  
संरोग प्रतीकार ॥ चोफ ॥ अपस्वा



नेक

३२

सरे गं कं ह चूणी ॥ सों त पी परे का ऊडा  
सिंगी ॥ पुष्कर मूल कचुर जा डेंगी मो  
य मिर च जल त प्र जु ले डु ॥ महा स्वास  
का नाश करे डु ॥ ७ ॥ स्वास का सक्रह  
बूँली संप्ररी या छंद ॥ कडी आई पुष्क  
र मूल जानि ॥ वासात्र सु सों विकुल  
य गानि ॥ एपी स पी ये संगत प्रतीर  
त वं स्वास सकी जाय पीर ॥ ८ ॥ अ



सगोली पासकी ॥ दोहोरा ॥ सोष्ट वं  
हैपीपरे ॥ काकडासिंगीजानि ॥ नार  
गीनकुत्तारछिल ॥ एसमपीसङ्गत्रा  
नि ॥ ५ ॥ गोलिदीजेनीरसों टोंकएक  
संभसोय ॥ निशाजुसुषमेराषीयेना  
सषांसकाहोय ॥ १० ॥ वासातोठजु  
पीपरे ॥ एसमपीसङ्गत्रानि ॥ गोलिकी  
जेबहतसोंहोयपासकीहानि ॥ १९ ॥



जेन०

३३

अथ गंधे सिद्धां सिकह चूर्ण ॥ वा सा  
सो वजु पीपरे वच कटाई पाय ॥ पी  
स पां ये जल तप्त सो पां सिद्धां सिजा  
य ॥ १२ ॥ अथ मंदगिति प्रतीकार चूर्ण  
मंदगिति कह ॥ दो होरा ॥ पीपरितिवी  
हरितकी ॥ सुविमोचर पाय ॥ तप्तनी  
र सो पी लीये ॥ मंदगिति जु मिराय ॥ १३  
अथ मंदगिति कह चूर्ण ॥ दो होरा ॥ सैं



धाराशिवाजुपीपरे॥ औ फुनिचिआघा  
लि॥ पीसपीयेजलतप्रसो मंदाग्निक  
हटालि॥ १५॥ अथरुधाकरगुटिका  
होहोरा॥ त्रिकुटात्रिफलालो नहिं  
जं॥ अरुअजवाइनमेलि॥ समंगुड  
गोलिकीजीये मंदाग्निकरुपालि  
१५॥ अथचूर्णमंदाग्निकह॥ चोपाई  
संधासोवविडंगआनि॥ त्रिफलाति



नैन  
३४

बीजमंगवानि॥ चित्ताहिंगञ्जवाय  
नजाति॥ जीरेदोनो नारदमाति॥ इन  
सबहिनको चूर एकरु॥ तिनपुटे  
गुनिबुकी धरु॥ टेकरु जो प्रात  
उविषाय॥ मंदा गितुन मां हि पर  
य॥ १६॥ अथ विस्तृ चिकाप्रतीकार  
सोरवा॥ तेलतिलीको आति करप  
दमर्दनकी जीय॥ नास विस्तृ चिका



जानि सिद्धियोगपंडितक ह्ये ॥ १७ ॥  
इतिपंडितकेरावदाशुत्रवैष्णवसुष  
किरचित्तवैद्यमनोत्सवे ॥ हिक्कावै  
कासस्वांसमंदाग्निविस्तृचिकारो  
गप्रतीकारनामचतुर्थसंस्कारो  
॥ ४३ ॥ अथश्रंडवृद्धकंहिअवल  
ह ॥ दोहोरा ॥ जीयसैंधाहिंगमे तेल  
कटुमहिषांय ॥ जेपचुकीजेप्रासुव



निंन०  
३५

अंरुवृद्धकहमिराय॥१॥ अंरुवृद्धकह  
चूणी॥ दो॥ होरा॥ त्रिफलाचूरणकीजी  
येध्वेवुमंत्रमहिघालि॥ प्रातजुपीजे  
सातदिन अंयसोयंकहयलि॥२॥ अं  
रुवृद्धकहश्रीषध्या॥ दो॥ होरा॥ एरंडते  
लविहालफुनि॥ पयघृतकेसंयोग  
प्रातजुकीजेसातदिन॥ नासेअंरुज  
रोग॥३॥ अंरुवृद्धकहलेप॥ जीरस



रुंडनु कुठफुनि॥ वचहहुवे सखियाय  
काजी सोंजवपीजी ये अंरु जमिर  
य॥३॥ अथ प्रमेह प्रतीकार॥ प्रमेह  
करु चरण॥ दोहोरा॥ मुह मुंडी दाडी  
मे कली सेत कय सम षंड॥ दिखरु  
चूणा टंक छे द्यु टले प्रमेह विहंड॥४॥  
अथ प्रमेह चरण॥ शंषा कुली ईला  
यची॥ शिला जित सम षंड॥ सखनी



सैत०

२२॥ रसो पीये रले प्रमेह विहं ड॥ ५॥ अ  
थ मूत्र कृच्छ्र प्रतीकार॥ एलादि का  
थ॥ दोहोरा॥ एला वासुगोषरु भुङ्ग  
हवी जुरलाय॥ पीये टंकु एकरे एका  
पापा एनेद जुमिलाय॥ ६॥ अथ चूर्ण  
मूत्र कृच्छ्र ॥ दोहोरा॥ एरंड वासाई  
लाय॥ पीए रुते जुरलाय॥ दधीसे  
पीजे मातर विमूत्र कृच्छ्र जुमीताय॥ ७॥



अथ मन्त्रराधपतीकार ॥ अथ मन्त्र  
त्रराधकह ॥ दोहोरा ॥ मन्त्र विष्ट  
के तेल कटुक महिघालि ॥ ना  
त्रिलेप जो की जीये ॥ मन्त्रराधकह  
तालि ॥ ॥ अथ काय मन्त्रराधकह  
चोपाई ॥ जो परुज वासा हंड आनि  
पाषाण नेद कन पाल जावि ॥ यह  
काय जु पा जे सहन मजि ॥ सो मन्त्र



नैन०  
३३

रोधमंका लपेलि ॥ १ ॥ अथ चूर्ण सूत्र  
रोधवृक्षो ह्येरा ॥ त्रिफला सैन्धवा गो  
षरुं बीजं परहृत्पाय ॥ तप्तनीरसो  
पीजीये सूत्ररोधनरहाय ॥ २ ॥ अथ  
सूत्री गोजप्रतीकार ॥ अथ पुष्करादि  
काथ ॥ दोहोरा पुष्कर सूत्र किराय  
ता व्रीही सेंठ कंचूर ॥ दारुहलदुश्च  
रुह नदुवच ॥ भाष्ठा पीपरसल ॥ ११ ॥



उचया कु व सार छुटा ॥ का प्रजु जे  
आनि ॥ अप स मार उ न मार ॥ फुरो  
गार जी की हानि ॥ २ ॥ अथ ना सम  
गी कह हो होरा ॥ मिर चे से हड मे घ  
सुद्ध दिव सु ए क प्र मान ॥ जल सु न  
स जु ही जी ये ॥ हो य मृ गी की हानि ॥ ३ ॥  
अथ कुष्ट रोग प्रतीकार ॥ चोण इ ॥  
त्रि फल वा सा दिव प रे ज ॥ वै र्जि



जिन०  
३८

लोयससमकरिओलि॥ चूर्णपीजीये  
जलसह॥ ध्यानि॥ कुष्ठरोगनासेतत  
काल॥ १४॥ अथ चूर्ण कुष्ठरोगकह  
हुंद॥ त्रिफलांमज्जिवगिलोयकुर  
कीविनिमात्रजाति॥ होयबचदा  
रुहलदविहंगवासाएसमानजुआ  
नि॥ मसपी॥ चूर्णीकरइविधसोपी  
जीरेपाणिपुंग॥ पुष्टरोमज्जिपबलभा



जे नाम कडू अंग ॥ १५ ॥ अथ मंजिष्टा  
हिं काय वातरक्त कद ॥ दो रे रा ॥ मे  
त्रिष्टा त्रिफल कडू जि नी निव मि लो ग  
य ॥ देव दस रुं व चं पी सके काय जु  
की जे सोय ॥ दि ॥ प्रात उवी जो पी जी  
ये वातरक्त नर हाय ॥ अश्रु मंड  
रु मा मगद कंडु कुष्ट मिराय ॥ १७ ॥ अ  
थ स्वेंत कुष्ठ कह ले प ॥ रुषे सर इं द



मैन

गुंजाबीज कवच चचाता ॥ ए स म  
पी स ड ॥ हो रे मी ता ॥ ले प जु की जे को जी  
आनि ॥ स्वेत कुष्ट का सत बजाति ॥ १५  
स्वेद कुष्ट कह द्वितीय लेप ॥ दोहोरा  
मनसि ज चित्र कवा वंची पवा ड न  
समा लाय ॥ का जि सो ज ब ले पी ये  
स्वेत कुष्ट नार हाय ॥ १६ ॥ अथ कंडु  
कह र्ण ॥ दोहोरा ॥ हरद वा वची



नीलदल अरु आंवरे मिलाय मंकर  
सुंगो मूत्र सो पीवत कंडुजा मरु अ  
ममक हलै प होहार मिरबिअ  
रुसिदूर फुति माहि विघत संयोग  
मांथे लेष तुकी जीये ना से पा मां रोग  
२१ अथ कंडुदाद विचर्विकी कहल  
प होहार गंधक चोष विट्ठो फुति  
कुवंसिंगर फजान हरदप वांर सिद्ध



सं०  
४०॥

रफुति प्रीसङ्ग समकर आति ॥ २२ ॥

फुनिनिवृत्तता बूलरस लेपङ्ग

इनेहमिलायः सामादादविचिचि

का नासे एत सेग ॥ २३ ॥ द्वादकहले

प ॥ चोपाई ॥ इपनिगंवावचीमनि

सैधासिवापापडा आति लेपमुक्री

जेकां विद्यालि ॥ द्वादषङ्करनासेत

तकाल ॥ २४ ॥ अमलेपलंतकद



हो हो रा॥ चंदन कर संना लु पाय  
कं मल शिवा बीज संसृताया॥ लेप  
जुकी जे जल सुं घालि॥ रूपा विषा  
कं ह पुलमा हि टालि॥ २६॥ अथ चिंज  
राग प्रतीकार॥ चोपाई॥ कदली पा  
तही न सम करि॥ तामहि र र द मि ली  
य॥ लेप जुकी जे बीर सुं चिंज रोग न  
रहाय॥ २७॥ लेप चिंज रोग कहें॥ पा



नेत्र-  
४९

चरित्राकंद॥ चंदनहरतालकपुरवां  
नि॥ सुहागा मूलीबीज आनि॥ जेनि  
रीरस सोलेप लय॥ तेनि चिंन रोगलि  
नमहि पराय॥ २८॥ चिंन रोग कुरु  
लेप॥ सोरवा॥ गंधक चंदन आनि  
नीबुरस सोलेपीये॥ दिवस सातप  
रिवाज चिंन रोगांत न नोरहे॥ २९॥  
अथ नास्त्यारोग प्रतीकार॥ अर्ध



हृद्यकरी शुक्तिका ॥ दधी सो पी मे ओ  
स ॥ निजु ओषध पंडित कह्यो ॥ नाश  
नारुवा होय ॥ ३० ॥ अथ रास्त्रवात  
कर ओषध ॥ काक जंघा को मूले  
पीस देयति हि काल ॥ पी टार क प्रका  
हं फुनि ॥ एते ना सही तल काल ॥ ३१ ॥  
इति श्री पंडित वैद्य केशवदास पुत्र  
नेन सुष विरचिते वैद्यमनोत्सवं



नेन०

४२

कुण्डप्रमेह मूत्रकृच्छ्र मूत्ररोध आश  
मानकृष्टकण्डु पामादाद विचर्चिका  
लेपिभेन नासाशस्त्रघात रोग प्र  
तिकासनाम पंचमोसिमुद्रेशः ॥ ५ ॥  
अथ वातरोग प्रतीकार वातरोग  
कंह गुटिका पाचरी शाबुद अस  
गंधमोव तिलसामजानि ओफु  
निसमानतिहि पंड आनि ओषध



जुवाय घृत सो मी लाय ॥ सो वात व्य  
धि छिन्न सो हि जाय ॥ १ ॥ अथ चूर्ण वा  
त रोग कह ॥ दो हो ग ॥ अंगु सं जा ॥  
अंगु सं जा ॥ हि मि लाय ॥ अंगु  
षा जे रां कुवे वात रोग न रदाय ॥ २ ॥  
अथ वात रोग कह गुटिका ॥ वो पाई  
पीपर चीता अंगु सं जा ॥ च व  
कु विटुंग अज वायन अंगु सं जा ॥



नेत०  
४३

अलो जी पी परम ल ए ते ओ ष ध मे न  
हु सम तुल दु ने गु ड सु गो लि कर ड  
मि त्रौ य दो रा क प्र मा न ले ध र ड  
प्रा त्ता हि उ वि यो ग लि क्ष य वा य  
वि का र चो रा सि जा यै ॥ ३ ॥ अ ष कं  
य वा त पी डा क ह दो हो रा सो व  
ओ र ए रं ड र स दे व द रु नु ग लो य  
क ष नु क्र रि के पी जी ये पी डा वा य



न होय ॥ ४ ॥ अथ लघु विषगर्भ तैल  
काय कह ॥ चोपाई ॥ नीवा तैल सेर  
एक आनि ॥ तल धर करे कोर सज नि  
गुंजा बीज अतूर बीज ॥ राक पंचमंच  
सब लीज ॥ दिधि सो तैल जु कीजे आ  
नि ॥ लघु विषगर्भ तैल यह जानि  
मई न देही कीजे ताहि ॥ वातरोग  
चौरासि जाहि ॥ अथ पित्त रोग प्रती  
कार ॥ अथ चूर्ण पित्त कह ॥ पाघरी



लें न०

५४॥

माछंद॥ इलाची कष्टर उसीर वानि  
आवलेचंद नतल आंति॥ पी सतुं पी  
वेजल मिजाय॥ तो पित्त को पंछित मा  
हि जाय॥ ६॥ अथ लेप दधक ह  
हो होरा॥ बेजी पल्लव आं वरे॥ वंदत  
छट जु मिजाय॥ जल सो ले प फु चर  
न जुग॥ हां घ ब्याज मिटाय॥ ७॥ अ  
थ छर्द नवा की डाह चूर्ण॥ हो होरा  
पी सिधु होरा कमल रुल॥ अरुई ला



इची पाय ॥ सीततीर सों दीजीये छुई  
रुवा की जाय ॥ ८ ॥ अथ कफ को प्रती  
कार ॥ केंसर मिरचे पीसी करि मोड़ें  
जीले पाय ॥ मारो तावा लवंग फुमि  
एसम पीसि निखाय ॥ ९ ॥ पानी सों जो  
पाइजे टोंक अइउ विपात ॥ कफ पा  
सी अरु स्वास अम होय रुई को घा  
त ॥ १० ॥ कफ रोग कह्यो ॥ दोहोरा



नेन०

५५॥ कणकटाईलवंगफुनि॥ सो विचारं  
जीपाय॥ पीसपी॥ वेजलतप्त सो॥ कफ  
षो मोनरहाय॥ १०॥ अथ गेंडं माल प्र  
तीकार॥ दोहोरा॥ पापें रत्न रुकुच ना  
रफुनि त्रिफलासगंकरि वांनि॥ यो  
सपी येजलतप्त सो॥ ना सञ्जरी राजा  
नि॥ ११॥ अथ अजार कहलेप॥ जारं  
गी अरु सो वंफुनि तेंडुलजलमहिमे



लि॥ कं व जु वा को ले प करि॥ कविदत्त  
नी रा पे लि॥ १२॥ अथ मुष रोग प्रतीका  
र चूर्ण॥ मुष पाक कह॥ त पषी र इला  
पची स्वेत कथ जु र ला य॥ मुष मे मेल  
इ पी स के॥ वरु पाक जु मी टा य॥ १३॥  
दंत रक्त प्रवाह ता॥ कदं शुषध॥ दोह  
रा॥ रस वां से को सह त कु नि म थ  
ऊ जु दो नो रो य॥ पातं च्चा टे सा त  
दिन॥ दंत रक्त न ही हो य॥ १४॥ दंत



नेन०  
५६॥

इकीरक्तप्रवाहपाराताकहओषध  
दीहोरा॥ वासामोथाकथफुनि॥ क  
इकूवजोवाति॥ लोडमजीवमिली  
यके॥ पीसकुसमकरआति॥ १५॥ ओ  
षधलेदसनजिमलेस्तप्रवाहसु  
वाध॥ पी॥ कीरक्तप्रवलदुषनिम  
षमहीनुप्रा॥ १६॥ ओषधमुषपा  
ककह॥ दीहोरा॥ त्रिफलादाषजि  
लोयफुनिचंचलीदलपाय॥ दारुह



लदस्वरुपावफुनि॥ एलीजेसमनी  
स॥ १७॥ कापजुकरि॥ कुरलीकरडु  
छोतामहिमधुघालि॥ वदनपाक  
रतकोगमन एनासहीततकाल॥ १८  
मुषकीलकहंदोहोया॥ सरसोमैधा  
लोदजवच॥ एओहसमआनि॥  
जलसोवदनजुलपायि॥ समकील  
काजानि॥ १९॥ मुषठाईकीओषध



जें नव

५५॥ तारवा॥ छल्ली रातिल त्रयाम॥ जी रास  
रसो पीत फुनि॥ पीस फुले पडु आनि  
मुषकी छाई न रहे॥ २०॥ छाई कंदले  
प॥ दोहोरा॥ सैधाली दिनु हरद कंठ  
एओ वध समुनाग॥ मौबुर समो लेपो  
ये मुषकी छाई जाय॥ २१॥ व्रथ ना सि  
कारोग प्रतीकार॥ दोहोरा॥ हव कंठु  
नहरी तकी॥ दाडिम फल मिलाय॥ सीत



कीरसों ना सदे रक्तगमन सोषाय  
२२ ॥ ओषध पीत सरोग कह ॥ सो व  
मिरच अरुपी परे गुड सो वाजे आ  
नि पीत सवे हर सी स दुष ॥ ता सई न  
हो को जानि ॥ २३ ॥ अमृता स पीत स  
कह दोहोरा ॥ मिरचे अरु बं दाल  
फल पर मि ति जे कर ने लि ॥ ना स नु  
दाजे कीरसों पीता पीत स प लि ॥ २४



नेत्र०

४८ अथ नेत्ररोगप्रतीकार॥ अथ लेपने  
त्ररोगकद॥ दोहोरा॥ रसवतलो न  
हरीतकी गेरु हलदमी लांयं॥ पल  
केउपरलेपके नेत्ररोगजुमीटा यं॥  
२५॥ अंजननेत्रकद॥ कातिकप्रल  
अरुजप्तफुनि॥ महिदार स संयो  
ग॥ लोचनअंजनकीजीये रहेनको  
इरोग॥ २६॥ अथ अंजनरात्रिअंध



कह ॥ दोहोरा ॥ सुरमा अरु रज जुगा  
करिती नो सनी बंध ॥ तेन नी अंजन  
की जीये होय न लाति स अंध ॥ २७ ॥  
सावन जेरे बाल को तिल अंजन नय  
नाहि ॥ जाला को लाति स अंध फुनि  
निमष वीच नरहाय ॥ २८ ॥ अथप  
उवाज कह देय ॥ मिरचे रु लोण  
गुड एती नो सम आन ॥ जल सोले



नैनं  
४५

पुउउ केक्षयपउवालजात॥२५॥ रग  
डानेत्ररोगकह॥ दोहरा॥ सैधा कडु  
वातेलपुनि॥ कांसपात्रमहिंघालि॥  
करिरगडाअंजनकफु नैनपारकह  
गलि॥२६॥ सबलकायकहअंजन  
दोहरा॥ याराजस्तसंममिसरी॥ मो  
तिमुंगाअनि॥। ननु संकफुनिजी  
जीयेईतकाएहप्रवात॥२७॥ करअ



हृदयान्तरुचाकसुं॥ काही ईत महि  
लि॥ अत्र यद्यं कजुली जीये॥ कां  
पात्र महि डालि॥ ३२॥ छेलि पय सों पी  
सकें दृग अंजन जु करेऊ॥ सब लंवा  
यकाना शहोब॥ दग्ध नात पय रेऊ  
३३॥ सब लंवाय कारगडा॥ दो होरा  
मृत कतां वाज सफुनि॥ नीला पोथ  
आनि॥ सीपी चुना फट कडी॥ साग



नेन०

५०॥

रफेन समान॥ ३४॥ को सापात्र महि  
राडीये॥ घत गोकात्रुमिला॥ निशि  
अंजन जो की जीये॥ संवलवां यन रहा  
य॥ ३५॥ अथ पोटली नैत्र रोग कहं॥ हो  
होरा॥ जीरा काहि फट कडी॥ त्रि फला  
सो ए पाय॥ रस न त हा ल्यो॥ हल द फु  
नि॥ ताम्र ह जो द मित्राय॥ ३६॥ ए औष  
ध स प्र आनि के॥ कर डु पोटलि पी स



सर्वपीर को नाश होय तेन निर्मलाही  
स ॥ ३७ ॥ अंजनतिमर को लापारा वा  
य कह ॥ दा होरा ॥ सुरमा सैंधा शंष  
फुनि ॥ सब सिज वि कटु आनि ॥ कांति  
फला अरु मिसरी ॥ सागर केन समान  
रु ॥ अंजे छे लि दुध से ॥ ति मिर रोगन  
रहाय ॥ फोला बो लयाय फुनि नयन  
पार जु मियाय ॥ ३८ ॥ कर्ण प्रती क ॥ दा



नेन

५१॥ होरा॥ स्तक्रालसनतिलपत्ररस॥ कान  
बीच सोपाय॥ बहरापीरा पूजा दुष॥ ए  
तेरोगनसाय॥ ४०॥ कानरोगका औष  
ध॥ दोहोरा॥ आक्रपातमहि लसुनघ  
सि॥ तामहिदाना सोय्य॥ कानबीच रस  
मेलीये॥ पूषीस्तूलनही होय॥ ४१॥ देव  
दोरुवसु सो विष्णु॥ सैन्धा सो फमिला  
ये॥ अजामूत्र सो तप्त करि॥ करन व्यथा



जुमीलाय ॥ ४९ ॥ शिररोगप्रतीकार ॥ हे  
होरा ॥ देवदारुकुठकायफल ॥ अरंड  
तेल जुमीलाय ॥ कांजीसोंतबलेपी  
वे वातसिराजुमिताय ॥ ४९ ॥ कफशि  
रवर्तकह ॥ पाघंरीयाहंद ॥ अरंडरा  
सन्नाकुंवजानि ॥ छडवचंनिधीपरा  
मोथागानि ॥ जलतंद ॥ सोपीसलाय ॥  
कफशिरावर्तततकालजाय ॥ ४९ ॥



नेन.

५२॥

पित्तरोग कह लेप सोरठा चंदनशि  
वाकपूर दुब उसीर अरु आबरे  
कमलबीज हफु बेर पित्तशिरोव  
तनाश होय ॥ ४५ ॥ लेप शिरोवर्त्ति  
कह दोहोरा कुवामिर च अरु का  
यफल एरे डज उव च घालि तप्त  
नीर सो लेपीये शिरोवर्त्तिक कह रालि  
४६ ॥ लेप शिरोवर्त्तिक कह दोहोरा पी



परिमीस्वहरीतकी॥ एतीनोसमन्नाश  
कांजीसेतिलेपकरि॥ पीराशिरकीजा  
य॥ ४७॥ आधाशीशीप्रतीकार॥ हो  
होरा॥ कुवपीपपरेसारिवा वंचमु  
हलषीआन॥ कांजीसेतिलेपकरि  
आधाशीशिहानि॥ ४८॥ इतिश्रीपं  
डितवैद्यकेशावशसंपुत्रनेनमुष  
विरचितेवैद्यमनोत्सवेवातपित्त



नैन०

५३॥

कृष्णगलव्याधिनसिकातेत्रशिरो  
वर्तिआधाशसिरोजनानामषष्टोस  
मुदेन॥ ६ ॥ अथपैरेकीओषध  
शेहोरा॥ गजकेसरतपुषीरफुति  
चंदनवालापायः॥ तंडुलजलसोले  
पकरिप्रहरराग्यंनाय॥ ७ ॥ अपर  
ओषध॥ गजकुंकुमतेडुलसीतापी  
जैनीरमीलाय॥ प्रहररोगकोनाश



होय मसुर साल नीपा य ॥ २ ॥ स्त्री कह  
पुह प हो न को ओषध ॥ सो विमिर च  
अरु पी परै ॥ बल डं डी ले पाय ॥ तिल के  
काय सो पी जीये होय पुह प अ धिक्  
र ॥ ३ ॥ वत्ती बीज कुनि गुड कणा ॥ अवर  
मे न फल आ नने ॥ दंती से हनु दुग्ध सो  
बीती कर कुजु जान ॥ ४ ॥ जग मे राषे प्रा  
त उचि होय पति स नारि ॥ ओषध जो



नैन

५४ गगनशस्तकदि॥ कहो पुह उपकार॥ ५॥  
श्रीषधगर्नहो नका॥ मिरज फलंअ  
रुजायफल॥ सागरफेन मिलाय वा  
यवडिंगईलायची॥ गजकेसरसमंभा  
य॥ ७॥ बंध्यागरुन जुहोय पिर॥ योनि  
होषस्वजाय॥ शालमुदंकगोन्हीर  
यत॥ महफुनिपथकराय॥ ८॥ श्रीषध  
गर्नहोण कह॥ चोपाई॥ मिरचेमोठ



जुपी परिआति॥ गजके सरजुकटाई  
बानि॥ जो घृत सो जो पीवे वाल॥ तारु  
हगर्ज रहे तत काल॥ ५॥ ओषध गर्भ  
होण का॥ सोरवा॥ गजके सर अस  
गंध॥ सित गो रोचत सालि॥ पीस पी  
ये जो क्षीर सो॥ गर्ज होय तत काल॥ १०  
गजके सर गोसर्पि संग रितु अंत क  
रे पान॥ दुग्ध जात जो जन करे॥ होय



नैन.  
५५

गर्भते सुजात ॥ ११ ॥ धेनु दुग्ध सो न  
क्षण करे पानि जो नार ॥ तृती यद्वि  
सकृत च तहि ॥ होय गर्भतिरधार  
॥ १२ ॥ गर्भ पात ॥ हो होर ॥ धाय लजा  
लुकमल फल ॥ मुहल विस्तरु पाय  
तंदुल जल सो पीजीये ॥ गर्भ पात हो  
जाय ॥ १३ ॥ कष्टिस्त्री का ओषध ॥ हो  
हार ॥ पाट जड़ी जड आनि के करु



लेपपगधाय॥ प्रसूत होयततकाल  
१४॥ अपरंच शोरग॥ जउ मुडी की  
आनि॥ कटि बंधन कष्टी बध॥ नास  
पीर को जगनि॥ होय प्रसूत ततकाल  
हो॥ १५॥ नग संकोचन॥ दोहों  
पांचहुं एला फट कटो॥ मायिलोड  
कचूर॥ बेर जडी कति एर छिल॥ मा  
जगामहि चूर॥ १६॥ मद नये विचपा



नेन

॥६॥ यके॥ करे पुरुष सो नोग॥ जो निजु अति  
में को च होय॥ रहे न कोई रोग॥ ७॥ अ  
पर प्रयोग॥ दो होरा॥ मेल कुंधावे फर  
कुंडी॥ माजु लोध जु मेलि॥ बेर जडी पु  
त्रि पाय के॥ सीकन मां इवेलि॥ १८॥ अ  
अपरंच॥ त्रिफला लोड जु धातु की  
जामल तुना जु होय॥ मोत ले पजो  
की जाये॥ दृष्ट कुमारी सोय॥ १९॥ धो



काण जो निका॥ सोरवा॥ मठा जु गोका  
आनि धोवे जो निजु प्रात उठि॥ होय  
संकोच न जान॥ सिद्धि योग पंडित कर्षा  
२०॥ गोली संकोच न की॥ दोहरा॥ क  
सरी कहर स मंगोली करि मधुपाय  
जो निविच जबराषीये॥ श्री सीक  
न जाय॥ २१॥ ये प्रति संकोच न दोहरा  
नीव पात को काय करि॥ धोवे सोनि



नैन०

७॥ जुनुतीय॥ अति दुर्गंध जुना राहोय॥ आ  
तेदितव द्रुपीय॥ २२॥ अथ कुचकना  
रता कह॥ दोहोरा॥ अस गंधं मं रुवाग  
नकणा॥ वच कनि अरक व सोय॥ लेप  
जुकीजे तीर सु॥ कवि नही कुच दोय  
॥ २३॥ मोर व॥ जल तंदुल के॥ आनि॥  
नास देई त्रय दिव संहि॥ कवि न होय  
कुच आनि प्रगट योग पंडित कहि॥ २४॥



ओषधयणवेलका॥ निशाकुमारिन  
प्रकरि कुचउपरजुधरेऊ॥ यणवेलक  
नाशाहोयं सिद्धियोगजाणोऊ॥ २५॥ पुरु  
षचिकीत्या॥ ओषधदीर्घस्थजहृदी  
करणकह॥ दोहोरा॥ विजयाश्रकंक  
नेरजहु रसधंतहरापाय॥ गोंजीकीजे  
पासकर लीजेछाहसुकाय॥ २६॥ पुरु  
षमूत्रसोपासिकरि करहुलेपइंदियं



नैन  
१८

दीर्घकवि न स्थूल होय देवत ना जेती  
॥ २७ ॥ अपरं प्रयोग ॥ कचा कुव गज  
पीपरि ॥ अस गंध वला सुसौंय ॥ तुरंग  
स्त्रनवनीतसौ ॥ लिंग मुखाल मम हो  
य ॥ २८ ॥ लेप स्थूल वृद्धि कह ॥ अस गंध  
पारद गाज कणा ॥ रजनी सीता मि लाय  
लेप जु कीजे लिंग पर ॥ वृद्धि स्थूल हो  
य जाय ॥ २९ ॥ अथ स्यं नंत ॥ अजा सेह



इको इध फुति। वल जे मूज उपाय॥  
कर पदना न जु ले पीये। घें न होय अक्षि  
काय॥ ३०॥ मद न प्रकाश चूर्ण लिष्यते  
हो हारा॥ ताल मषाणा मुसली सो व न  
पा डा पाय॥ कौंच बीज अस गंध फुति  
से मल पुह प मि लाय॥ ३१॥ दन्ता सता  
वरी मोचरस अवर लिस्ते जानि॥ सी  
ता इग्ध सो पी जीये व फल तारि रति मा  
नि॥ ३२॥ अपर गुटिका॥ कुंकुम सिंग



नेन

०८८ रफजायफलतालमषाणापाय॥ को  
चवीजतजमस्तकी अकलकराजु  
लाय॥ ३३॥ तुंवरलवंगतमालं पत्र  
फुनिअजवायनआति॥ तीननागए  
जीजीये एकअफीमपरिवान॥ ३४॥  
रसविनयागुटिकाकरुं परमिति  
हंकरुएकं॥ रात्रिसंमेनंरुणकरुं  
अलितरमेअनेकं॥ ३५॥ दुर्गध्वहरण  
प्रतीकार॥ चोपाई॥ चंदनरजनीमा



यक पूर। लोफत्रगरपदमाषकचूर  
छंडुमरुकां गजकेसरपाय। मल्लीजड  
आगलेमिलाय। देहीमर्दनकीजेजास  
दुर्गधिताद्वि नमेनास। पित्तरोग  
सर्वनासहिजा न। देषग्रंथमतिक्रम्य  
वधान। रू। वगलगंधको ओषध। हो  
होरा। मोयावेजहरीतकी चिंचाफल  
फुलिपाय। लेपजुकीजेनारसुवलगं



नैन०

६०॥ धमिरिजाय॥ ३॥ गुटिकामुषदुर्गंध  
कह॥ दोहोरा॥ बेलघनेरईलायची  
जावंचीतजपाय॥ गजकेसरअरुजा  
अफल॥ ए॥ ओ॥ पंधसमजाय॥ ३॥ गाली  
करुमपीरसों सेंनकरुमुषचा  
लि॥ आनं<sup>न</sup>क्री<sup>न</sup>दुर्गंधितातांसहोहित  
सकाल॥ ३५॥ दुर्गंधिताकोलेप॥ चोपई  
राजकेसरपहीजडपाय॥ सिरसपत्र



अरु लोड लाय ॥ जल सों ले पनु की जीये  
दुर्गंधिता मिर जाय ॥ ४७ ॥ शिर की कर  
काजी मध ॥ दो होरा ॥ आनिकें को दे  
की जड ही समान दधि पाय ॥ ४८ ॥ शपा  
यके धोयके ॥ अरु आ मूल मिलाय ॥ ४९ ॥  
चंदन सो पामालती ॥ छीली सजु कर  
र ॥ जल सों पाव फुपी सकर होय दुर्ग  
धिताइर ॥ ५० ॥ इति पंडित वैद्य के श



नेन०

६२

वदासपुत्रनेनमुषविरचितवैद्यस  
नोत्सवेग्रंथंप्रदररोगस्त्रीपुहपमर्त  
पातककष्टीस्त्रीप्रसूतलिंगलेपनम्प  
लीवृद्धिकरणमुषडुर्जिह्वातानाशना  
मसप्तमोपुजावसंमाप्तइतिवैद्यस  
नोत्सवेग्रंथसंमाप्तः॥ श्री॥ श्री

श्रीकृष्णायनमः॥ श्री॥ श्री॥



























